https://www.studiestoday.com

गोधूलि

(भाग - 1)

नवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक

ABSOL
ABSOLUTE SOLUTIONS
PATNA

सत्यमेव जयते

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2009
पुनर्मुद्रण : 2011
संशोधित संस्करण : 2012
पुनर्मुद्रण : 2013
पुनर्मुद्रण : 2014
पुनर्मुद्रण : 2015
मूल्य : रु० 26.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना - 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा सुपर ऑफसेट प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, नया टोला, पटना - 4 द्वारा 1 00,000 प्रतियाँ मुद्रित।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से कक्षा - IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। प्रथम चरण में शैक्षिक सत्र 2009 के लिए वर्ग IX की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकों का पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना द्वारा सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें (वाणिज्य एवं कला विषयक) बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित किया गया है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री,श्री जीतन राम मांझी,शिक्षा मंत्री,श्री वृशिण पटेल तथा शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्रीआर० के० महाजन के मार्ग निर्देशन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस.सी.ई.आर.टी, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

- दिलीप कुमार, आई.टी.एस.
प्रबंध निदेशक,
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दिशा-बोध

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना ।
डॉ० सैय्यद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
डॉ० कासिम खुर्शीद, अध्यक्ष, भाषा शिक्षा, शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान पटना ।

सदस्य, हिंदी भाषा समूह

श्री ब्रजेश पाण्डेय, व्याख्याता, हिंदी विभाग, एल० पी० शाही कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना ।
डॉ० संजय कुमार सिंह, हिंदी विभाग, ए० एन० कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना ।
डॉ० सत्येन्द्र पाठक 'प्रियेश', शिक्षक, एकलव्य एजुकेशनल कॉम्प्लेक्स, पटेल नगर, पटना ।
श्री कुमार पुष्पेंदु, शिक्षक, आर्य कन्या उच्च विद्यालय, पटना ।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) की समीक्षा समिति के सदस्य

प्रो० रामबुझावन सिंह, निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।
डॉ० शंकर प्रसाद, अ० प्रा० प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

अकादमिक सहयोग

डॉ० अर्चना, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, तपेन्दु इंस्टीच्यूट ऑफ हायर स्टीज, पटना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम (2007) के आधार पर तैयार की गई है। इस पुस्तक के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि "शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें, और साथ ही साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 हमें बताती हैं कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल से बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी होनी चाहिए। आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित शिक्षार्थी केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएगा।

इस पुस्तक में किशोरियों-किशोरों की कल्पनाशक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और उनका उत्तर पाने के मौलिक अधिकार के समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है। निश्चय ही इसमें शिक्षार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों की भी गहरे लगाव के साथ उतनी ही भूमिका होनी चाहिए। शिक्षार्थियों के प्रति संवेदना और सहानुभूति के साथ उन्हें पुस्तक में गहरी सक्रिय सहभागिता बरतनी होगी और लेखक परिचय, मूल पाठ और उसके साथ संलग्न अभ्यास प्रश्नों के संदर्भ में समुचित जागरूकता दिखानी होगी। हर पाठ के साथ अनेक तरह के अभ्यास हैं जिनसे शिक्षार्थियों की पाठ पर पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही उनके भीतर व्यापक जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलेगा। पुस्तक की परिकल्पना में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। भाषा और साहित्य के ढर्रे में बँधे घेरों को सकारात्मक स्तर पर तोड़ने और वृहत्तर अनुभव क्षेत्रों को उनसे जोड़ने के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण पाठ शृंखला को उबाऊ होने से बचाते हुए ऐसा प्रयत्न किया गया है कि पाठ बोझिल न हों तथा सामयिक जीवन संदर्भों से जुड़ कर छात्र के लिए रोचक बन जाएँ। छात्र उत्सुकता और आनंद के साथ तनावमुक्त रीति से उन्हें पढ़ते हुए बहुविध जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी का ज्ञान के सृजन में उपयोग कर सकें।

एस० सी० ई० आर० टी० सर्वप्रथम मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार के प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह, इस पुस्तक में शामिल रचनाकारों, उनके प्रकाशकों एवं परिवारजनों के प्रति विशेष आभार प्रकट करती है, और साथ ही इस पुस्तक के विकास के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक विकास समिति के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती है। हिंदी भाषा समूह के अध्यक्ष प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, समन्वयक डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सदस्य श्री ब्रजेश पाण्डेय, डॉ० संजय कुमार सिंह, डॉ० सत्येन्द्र कुमार पाठक 'प्रियेश' और श्री कुमार पुष्पेंदु के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं। इन्होंने गहरी सूझबूझ, अथक परिश्रम और भावात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक संपन्न किया। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति के अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी के प्रति भी हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। श्री त्रिपाठी की एकनिष्ठ सक्रियता का ही परिणाम है कि यह पुस्तक आपके हाथों में पहुँच सकी। पुस्तक की कंपोजिंग, पेज मेकिंग और टाइप सेटिंग के लिए एरिश कंप्यूटर, रमना रोड, पटना के मो० जाहिद सैन, अखिलेश कुमार और मुदस्सर नजर बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक आपके हाथों में है। इसे पढ़ने-पढ़ाने के प्रसंग में हुए अनुभवों से उपजे परामर्शों एवं सुझावों की मैं हमेशा प्रतीक्षा रहेगी।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रस्तुत पुस्तक

यह पुस्तक – 'गोधूलि – 1' बिहार राज्य के नवम वर्ग के छात्रों के लिए हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक है । इसे शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस० सी० ई० आर० टी०) के तत्त्वावधान में विशेषज्ञों द्वारा निर्मित नवीन पाठ्यक्रम के आलोक में तैयार किया गया है । पुस्तक को अंतिम प्रकाश्य स्वरूप तक पहुँचाने की प्रक्रिया में अनेक विमर्शों से गुजरना पड़ा । इन विमर्शों में बिहार राज्य की संबद्ध कक्षा की पुरानी पाठ्यपुस्तक, प्रादेशिक परिवेश, सामयिक शैक्षणिक वास्तविकताएँ एवं आवश्यकताएँ तथा हिंदी भाषा-साहित्य के अतीत और वर्तमान का प्रासंगिक बोध निरंतर बनाये रखना पड़ा । हिंदी भाषा-साहित्य के निर्माण एवं विकास में हमेशा ही बिहार की उल्लेखनीय भूमिका रही है । हमने इस भूमिका की, पुस्तक की परिकल्पना और स्वरूपग्रहण में, बोध और स्मृति बनाये रखी है । निश्चय ही यह बोध एवं स्मृति परिग्रहमूलक न होकर चयनधर्मी है । हमारे चयन में वस्तुपरक निष्पक्षता, स्थायित्व तथा हिंदी भाषा-साहित्य की अंतरप्रादेशिक राष्ट्रीय प्रकृति के अनुरूप विशदता रहे; इतना ही नहीं, सामाजिक-सांस्कृतिक सद्भाव, जनतांत्रिकता और विवेकनिष्ठा के साथ-साथ अनेक प्रकार की संक्रामक संकीर्णताओं का सक्रिय निषेध भी दिखे – इसकी कोशिश की गई है ।

पुस्तक में काव्य एवं गद्य के दोनों खंडों में 12-12 रचनाएँ हैं । इनमें हिंदी की स्थानीय जड़ों, राष्ट्रीय व्याप्तियों, अंतरभाषिक संबंधों और अंतरराष्ट्रीय सरोकारों को एक संहति में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । गद्य खंड में सजग रूप से तीन हिन्दी कथासमयों के तीन प्रतिनिधि बिहारी कथाकारों की कहानियाँ रखी गई हैं । तीनों कहानियों में बिहार की माटी-पानी-हवा और चेतना की अभिव्यक्ति तो है ही, उसके साथ हिंदी की अपनी भारतीयता की विशिष्ट अभिव्यक्ति भी है ।

प्राचीन काल में विश्व के महानतम शिक्षण संस्थान 'नालंदा विश्वविद्यालय' की अवस्थिति बिहार में रही है । बिहार का अतीत गौरवशाली रहा है । यहाँ भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का नालंदा विश्वविद्यालय पर प्रसिद्ध परिचयात्मक आलेख छात्रों के लिए प्रस्तुत है । देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एक सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, विचारक और लेखक भी थे । यह लेख उनके व्यक्तित्व के इन गुणों का स्मारक है । इसी तरह 'ग्राम-गीत का मर्म' डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु का बहुप्रशंसित निबंध है जिसे लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य के महत्त्व का छात्रों को बोध कराने के लिए प्रस्तुत किया गया है । डॉ० सुधांशु बिहार के यशस्वी स्वाधीनता सेनानी, पत्रकार और साहित्यकार थे । आधुनिक हिंदी गद्य के अनेक रूपों की प्रामाणिक झलक पेश करने वाली अनेक रचनाओं के साथ यहाँ 'शिक्षा' विषय पर विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का एक महत्त्वपूर्ण प्रासंगिक निबंध दिया गया है । आधुनिक युग में स्वदेशी शिक्षा के मौलिक परिकल्पकों में रवीन्द्रनाथ अग्रगण्य हैं । शिक्षाविषयक उनके अनेक निबंध हैं जिनमें से एक किंचित् सावधान संपादन के साथ यहाँ प्रस्तुत है ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

काव्यखंड का आरंभ हिंदी के यशस्वी संत कवि रैदास के पदों से होता है । संत रैदास हिंदी भक्ति काव्य के गौरव हैं । उनकी निरभिमान विनम्रता, समर्पण और सरलता हमारी बहुमूल्य संपदा है । महान प्रेमी कवि मंझन हिंदी सूफी काव्य के भास्वर शिखर हैं । प्रेम के संबंध में उनके उद्‌गार विशेष मननीय हैं । रीतिकाल के भक्त कवि गुरुगोविंद सिंह की रचना बिहार की गरिमामयी विरासत का अंग है । इन महान कवियों के अतिरिक्त आधुनिक हिंदी काव्य के अनेक महिमाशाली कवियों की रचनाएँ यहाँ हिंदी काव्य प्रवाह की विपुलता और गहनता का एक समृद्ध साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं । काव्यखंड का समापन एक हिंदीतर भारतीय कवि और एक अंतरराष्ट्रीय कवि की कविताओं से होता है । इससे हिंदी कविता के अड़ोस-पड़ोस और उस वैश्विक परिसर का परिचय होता है जिसके बीच वह अपनी स्वतंत्र पहचान बनाती है ।

पुस्तक का 'गोधूलि' नाम सांध्य परिवेश, कर्मठ श्रम के बाद घर लौटने के क्रीड़ामय उत्साह, प्रकृति के रंगवैभव, मनुष्य के मनुष्येतर नैसर्गिक सहभाव आदि अनेक भावों का स्मारक है । 'गोधूलि' शब्द सघन सांस्कृतिक बोध का सूचक तथा प्रासंगिक रूप से साभिप्राय और अर्थपूर्ण है ।

आशा है, यह पुस्तक नई पीढ़ी के भाषा-साहित्य के पाठकों और बिहार के शिक्षार्थियों को रुचिकर प्रतीत होगी । यह पाठ्यपुस्तक सहचर-मित्र की तरह उन्हें भाषा और साहित्य के अद्यतन वास्तव से परिचित कराए – इस कामना के साथ इसे हम शिक्षार्थियों को सौंपते हैं ।

समन्वयक, हिंदी भाषा समूह
हेमंत कुमार हिमांशु
सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान, पटना ।

अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह
भृगुनंदन त्रिपाठी
हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"दीवार की किसी खोखल में पीपल का पत्ता उड़ता हुआ
बैठ जाता है और किसी को पता भी नहीं चलता – कहाँ से
हवा आई थी, ईंटों की किस दरार में एक बीज उड़ता हुआ
दुबक आया था, मिट्टी और गारे के भीतर एक हल्की-सी
सिहरन उठी थी – और महीनों बाद – घरवाले देखते हैं,
जहाँ टूटी दीवार थी, वहाँ एक पौधा लहरा रहा है।"

–निर्मल वर्मा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शिवपूजन सहाय

शिवपूजन सहाय का जन्म 1893 ई० में उनवाँस, बक्सर (बिहार) में हुआ था। उनके बचपन का नाम भोलानाथ था। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी की। बाद में वे हिंदी के अध्यापक बन गए। असहयोग आंदोलन के प्रभाव से उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। शिवपूजन सहाय अपने समय के लेखकों में बहुत लोकप्रिय और सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने 'जागरण', 'हिमालय', 'माधुरी', बालक आदि कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया। इसके साथ ही वे हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'मतवाला' के संपादक मंडल में थे। सन् 1963 में उनका देहांत हो गया। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् तो उन्हीं की कल्पना का साकार रूप है। इन गतिविधियों में अतिशय व्यस्त रहने के कारण उन्हें स्वलेखन का कम अवसर मिलता था। 'देहाती दुनिया' उनका एकमात्र उपन्यास है जो ग्रामीण परिवेश को ठेठ भाषा में उभारता है। इसे आगे चलकर लिखे गए आंचलिक उपन्यासों की पूर्वपीठिका कहा जा सकता है। 'कहानी का प्लॉट' और 'मुंडमाल' जैसी मार्मिक कहानियाँ लिखकर उन्होंने हिंदी कथा साहित्य की श्रीवृद्धि की है।

'विभूति', 'देहाती दुनिया', 'दो घड़ी', 'वे दिन वे लोग', 'बिम्ब-प्रतिबिम्ब' आदि पुस्तकों के अलावा उनके सैंकड़ों लेख, निबंध आदि समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं संग्रहों में प्रकाशित-संकलित होते रहे हैं। उनकी रचनाओं का संकलन 'शिवपूजन रचनावली' नाम से चार खंडों में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा प्रकाशित है।

इस कहानी में कहानीकार ने समाज में नारी का स्थान निर्धारित करने के क्रम में तिलक-दहेज की निर्मम प्रथा, वृद्ध विवाह आदि की विसंगतियों का मार्मिक दस्तावेज प्रस्तुत किया है। तिलक-दहेज की क्रूरता की शिकार भगजोगनी एक वृद्ध के गले बाँध दी जाती है। तरुणाई प्राप्त करते-करते वह विधवा हो जाती है और अपने सौतेले बेटे की पत्नी बनने का दुर्भाग्य स्वीकार करती है। यह नारी की नियति है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कहानी का प्लॉट

मैं कहानी लेखक नहीं हूँ । कहानी लिखने योग्य प्रतिभा भी मुझमें नहीं है । कहानी लेखक को स्वभावतः कला-मर्मज्ञ होना चाहिए और मैं साधारण कलाविद् भी नहीं हूँ । किन्तु कुशल कहानी लेखकों के लिए एक 'प्लॉट' पा गया हूँ । आशा है, इस 'प्लॉट' पर वे अपनी भड़कीली इमारत खड़ी कर लेंगे ।

मेरे गाँव के पास एक छोटा-सा गाँव है । गाँव का नाम बड़ा गँवारू है, सुनकर आप घिनाएँगे । वहाँ एक बूढ़े मुंशीजी रहते थे–अब वह इस संसार में नहीं हैं । उनका नाम भी विचित्र ही था–"अनमिल आखर अर्थ न जापू" – इसलिए उसे साहित्यिकों के सामने बताने से हिचकता हूँ । खैर, उनके एक पुत्री थी, जो अबतक मौजूद है । उसका नाम – जाने दीजिए, सुनकर क्या कीजिएगा ? मैं बताऊँगा भी नहीं ! हाँ, चूँकि उसके संबंध की बातें बताने में कुछ सहूलियत होगी, इसलिए उसका एक कल्पित नाम रख लेना जरूरी है । मान लीजिए, उसका नाम है 'भगजोगनी' । देहात की घटना है, इसलिए देहाती नाम ही अच्छा होगा । खैर, बढ़िए –

मुंशीजी के बड़े भाई पुलिस दारोगा थे–उस जमाने में जबकि अँगरेजी जाननेवालों की संख्या उतनी ही थी, जितनी आज धर्मशास्त्रों के मर्म जाननेवालों की है ; इसलिए उर्दूदाँ लोग ही ऊँचे-ऊँचे ओहदे पाते थे । दारोगाजी ने आठ-दस पैसे का 'करीमा-खालिकबारी' पढ़कर जितना रुपया कमाया था, उतना आज कॉलेज और अदालत की लाइब्रेरियाँ चाटकर वकील होनेवाले भी नहीं कमाते ।

लेकिन दारोगाजी ने जो कुछ कमाया, अपनी जिंदगी में ही फूँक-ताप डाला । उनके मरने के बाद सिर्फ उनकी एक घोड़ी बची थी जो थी तो महज सात रुपये की ; मगर कान काटती थी तुर्की घोड़ों की – कम्बख्त बारूद की पुड़िया थी ! बड़े-बड़े अँगरेज-अफसर उसपर दाँत गड़ाए रह गए; मगर दारोगाजी ने सबको निबुआ नोन चटा दिया । इसी घोड़ी की बदौलत उनकी तरक्की रुकी रह गई; लेकिन आखिरी दम तक वे अफसरों के घपंले में न आए–न आए । हर तरह से काबिल, मेहनती, ईमानदार, चालाक, दिलेर और मुस्तैद आदमी होते हुए भी वे दारोगा-के-दारोगा ही रह गए- सिर्फ घोड़ी की मुहब्बत से ।

किन्तु घोड़ी ने भी उनकी इस मुहब्बत का अच्छा नतीजा दिखाया – उनके मरने के बाद खूब धूम-धाम से उनका श्राद्ध करा दिया । अगर कहीं घोड़ी को भी बेच खाए होते, तो उनके

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ABSOL PATNA

नाम पर एक ब्राह्मण भी नहीं जीमता । एक गोरे अफसर के हाथ खासी रकम पर घोड़ी को ही बेचकर मुंशीजी अपने बड़े भाई से उऋण हुए ।

दारोगाजी के जमाने में मुंशीजी ने भी खूब घी के दीए जलाए थे । गाँजे में बढ़िया-से-बढ़िया इत्र मलकर पीते थे—चिलम कभी ठंढी नहीं होने पाती थी । एक जून बत्तीस बटेर और चौदह चपातियाँ उड़ा जाते थे ; नथुनी उतारने में तो दारोगाजी के भी बड़े भैया थे—हर साल एक नया जलसा हुआ ही करता था ।

किंतु जब बहिया बह गई, तब चारों ओर उजाड़ नजर आने लगा । दारोगाजी के मरते ही सारी अमीरी घुस गई । चिलम के साथ-साथ चूल्हा-चक्की भी ठंढी हो गई । जो जीभ एक दिन बटेरों का शोरबा सुड़कती थी, वह अब सराह-सराह कर मटर का सत्तू सरपोटने लगी । चुपड़ी चपातियाँ चबानेवाले दाँत अब चंद चने चबाकर दिन गुजारने लगे । लोग साफ कहने लग गए—थानेदारी की कमाई और फूस का तापना दोनों बराबर हैं ।

हर साल नई नथुनी उतारने वाले मुंशीजी को गाँव-जवार के लोग भी अपनी नजरों से उतारने लगे । जो मुंशीजी चुल्लू-के-चुल्लू इत्र लेकर अपनी पोशाक में मला करते थे, उन्हीं के अब अपनी रूखी-सूखी देह में लगाने के लिए चुल्लू-भर कड़वा तेल मिलना भी मुहाल हो गया । शायद किस्मत की फटी चादर का कोई रफूगर नहीं है ।

लेकिन जरा किस्मत की दोहरी मार तो देखिए ! दारोगाजी के जमाने में मुंशीजी के चार-पाँच लड़के हुए ; पर सब-के-सब सुबह के चिराग हो गए । जब बेचारे की पाँचों उँगलियाँ घी में थीं, तब तो कोई खानेवाला न रहा और जब दोनों टाँगें दरिद्रता के दलदल में आ फँसीं और ऊपर से बुढ़ापा भी कंधे दबाने लगा, तब कोढ़ में खाज की तरह एक लड़की पैदा हो गई ! और तारीफ यह कि मुंशीजी की बदकिस्मती भी दारोगाजी की घोड़ी से कुछ कम स्थावर नहीं थी !

सच पूछिए तो इस तिलक-दहेज के जमाने में लड़की पैदा करना ही बड़ी भारी मूर्खता है । लेकिन युगधर्म की क्या दवा है ? इस युग में अबला ही प्रबला हो रही है । पुरुष-दल को स्त्रीत्व खदेड़े जा रहा है । बेचारे मुंशीजी का क्या दोष ? जब घी और गरम मसाले उड़ाते थे, तब तो हमेशा लड़का ही पैदा करते रहे, मगर अब मटर के सत्तू पर बेचारे कहाँ से लड़का निकाल लाएँ। सचमुच अमीरी की कब्र पर पनपी हुई गरीबी बड़ी ही जहरीली होती है ।

भगजोगनी चूँकि मुंशीजी की गरीबी में पैदा हुई, और जन्मते ही माँ के दूध से वंचित होकर 'टूअर' कहलाने लगी । इसलिए अभागिन तो अजहद थी, इसमें शक नहीं ; पर सुंदरता में वह अँधेरे घर का दीपक थी । आजकल वैसी सुघर लड़की किसी ने कभी कहीं न देखी ।

अभाग्यवश मैंने उसे देखा था । जिस दिन पहले-पहल उसे देखा, वह करीब ग्यारह-बारह वर्ष की थी । पर एक ओर उसकी अनोखी सुघराई और दूसरी ओर उसकी दर्दनाक गरीबी देखकर, सच कहता हूँ, कलेजा काँप गया । यदि कोई भावुक कहानी-लेखक या सहृदय कवि उसे देख

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लेता, तो उसकी लेखनी से अनायास करुणा की धारा फूट निकलती । किंतु मेरी लेखनी में इतना जोर नहीं है कि उसकी गरीबी के भयावने चित्र को मेरे हृदय-पट से उतारकर 'सरोज' के इस कोमल 'दल' पर रख सके । और, सच्ची घटना होने के कारण, केवल प्रभावशाली बनाने के लिए, मुझसे अड़कीली भाषा में लिखते भी नहीं बनता । भाषा में गरीबी को ठीक-ठीक चित्रित करने की शक्ति नहीं होती, भले ही वह राजमहलों की ऐश्वर्य-लीला और विशाल वैभव के वर्णन करने में समर्थ हो !

आह ! बेचारी उस उम्र में भी कमर में सिर्फ एक पतला-सा चिथड़ा लपेटे हुए थी, जो मुश्किल से उसकी लज्जा ढँकने में समर्थ था । उसके सिर के बाल तेल बिना बुरी तरह बिखरकर बड़े डरावने हो गए थे । उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में एक अजीब ढंग की करुण-कातर चितवन थी । दरिद्रता-राक्षसी ने सुन्दरता-सुकुमारी का गला टीप दिया था !

कहते हैं, प्रकृत सुन्दरता के लिए कृत्रिम शृंगार की जरूरत नहीं होती; क्योंकि जंगल में पड़ की छाल और फूल-पत्तियों से सजकर शकुंतला जैसी सुंदरी मालूम होती थी, वैसी दुष्यंत के राजमहल में सोलहो सिंगार करके भी वह कभी न फबी । किन्तु शकुंतला तो चिंता और कष्ट के वायुमंडल में नहीं पली थी । उसके कानों में उदर-दैत्य का कर्कश हाहाकार कभी न गूँजा था । वह शांति और संतोष की गोद में पलकर सयानी हुई थी, और तभी उसके लिए महाकवि की 'शैवाल-जाललिप्त कमलिनी' वाली उपमा उपयुक्त हो सकी । पर 'भगजोगनी' तो गरीबी की चक्की में पिसी हुई थी, भला उसका सौंदर्य कब खिल सकता था ! वह तो दाने-दाने को तरसती रहती थी, एक बित्ता कपड़े के लिए भी मुहताज थी । सिर में लगाने के लिए एक चुल्लू अलसी का तेल भी सपना हो रहा था । महीने के एक दिन भी भर-पेट अन्न के लाले पड़े थे । भला हड्डियों के खंडहर में सौंदर्य-देवता कैसे टिके रहते !

उफ ! उस दिन मुंशीजी जब रो-रोकर अपना दुखड़ा सुनाने लगे, तब कलेजा टूक-टूक हो गया । कहने लगे – "क्या कहूँ बाबू साहब, पिछले दिन जब याद आते हैं, तब गश आ जाता है । यह गरीबी की तीखी मार इस लड़की की वजह से और भी अखरती है । देखिए, इसके सिर के बाल कैसे खुश्क और गोरखधंधारी हो रहे हैं । घर में इसकी माँ होती, तो कम-से-कम इसका सिर तो जूँओं का अड्डा न होता । मेरी आँखों की जोत अब ऐसी मंद पड़ गई कि जूँएँ सूझती नहीं । और, तेल तो एक बूँद भी मयस्सर नहीं । अगर अपने घर में तेल होता, तो दूसरे के घर जाकर भी कंघी-चोटी करा लेती, सिर पर चिड़ियों का घोंसला तो न बनता ? आप तो जानते हैं, यह छोटा-सा गाँव है, कभी साल-छमासे में किसी के घर बच्चा पैदा होता है, तो इसके रूखे-सूखे बालों के नसीब जागते हैं ।

गाँव के लड़के, अपने-अपने घर भर-पेट खाकर जो झोलियों में चबेना लेकर खाते हुए घर से निकलते हैं, तो यह उनकी बाट जोहती रहती है – उनके पीछे-पीछे लगी फिरती है, तो भी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मुश्किल से दिन में एक-दो मुट्ठी चबेना मिल पाता है। खाने-पीने के समय किसी के घर पहुँच जाती है तो इसकी डीठ लग जाने के भय से घरवालियाँ दुरदुराने लगती हैं! कहाँ तक अपनी मुसीबतों का बयान करूँ, भाई साहब! किसी की दी हुई मुट्ठी-भर भीख लेने के लिए इसके तन पर फटा आँचल भी तो नहीं है! इसकी छोटी अँजुलियों में ही जो कुछ अँट जाता है, उसी से किसी तरह पेट की जलन बुझा लेती है! कभी-कभी एकाध फँका चना-चबेना मेरे लिए भी लेती आती है; उस समय हृदय दो टूक हो जाता है।

किसी दिन, दिन-भर घर-घर घूमकर जब शाम को मेरे पास आकर धीमी आवाज से कहती है कि बाबूजी, भूख लगी है—कुछ हो तो खाने को दो; उस वक्त आपसे ईमानन कहता हूँ, जी चाहता है कि गल-फाँसी लगाकर मर जाऊँ या किसी कुएँ या तालाब में डूब मरूँ। मगर फिर सोचता हूँ कि मेरे सिवा इसकी खोज-खबर लेने वाला इस दुनिया में अब है ही कौन? आज अगर इसकी माँ भी जिंदा होती, तो कूट-पीसकर इसके लिए मुट्ठी-भर चून जुटाती—किसी कदर इसकी परवरिश कर ही ले जाती; और अगर कहीं आज मेरे बड़े भाई साहब बरकरार होते, तो गुलाब के फूल-सी ऐसी लड़की को हथेली का फूल बनाए रहते। जरूर ही किसी 'रायबहादुर' के घर इसकी शादी करते। मैं भी उनकी अंधाधुंध कमाई पर ऐसी बेफिक्री से दिन गुजारता था कि आगे आनेवाले इन बुरे दिनों की मुतलक खबर न थी। वे भी ऐसे खर्राच थे कि अपने कफन-काठी के लिए भी एक खरमुहरा न छोड़ गए—अपनी जिंदगी में ही एक-एक चप्पा जमीन बेंच खाई—गाँव-भर से ऐसी अदावत बढ़ाई कि आज मेरी इस दुर्गत पर भी कोई रहम करनेवाला नहीं है, उलटे सब लोग तानेजनी के तीर बरसाते हैं। एक दिन वह था कि भाई साहब के पेशाब से चिराग चलता था, और एक दिन यह भी है कि मेरी हड्डियाँ मुफलिसी की आँच से मोमबत्तियों की तरह घुल-घुलकर जल रही हैं।

इस लड़की के लिए आसपास के सभी जवारी भाइयों के यहाँ मैंने पचासों फेरे लगाए, दाँत दिखाए, हाथ जोड़कर विनती की, पैरों पड़ा—यहाँ तक बेहया होकर कह डाला कि बड़े-बड़े वकीलों, डिप्टियों और जमींदारों की चुनी-चुनाई लड़कियों में मेरी लड़की को खड़ी करके देख लीजिए कि सबसे सुंदर जँचती है या नहीं, अगर इसके जोड़ की एक भी लड़की कहीं निकल जाए तो इससे अपने लड़के की शादी मत कीजिए। किंतु मेरे लाख गिड़गिड़ाने पर भी किसी भाई का दिल न पिघला। कोई यह कहकर टाल देता कि लड़के की माँ ऐसे घराने में शादी करने से इनकार करती है, जिसमें न सास है, न साला और न बारात की खातिरदारी करने की हैसियत। कोई कहता है कि गरीब घर की लड़की चटोर और कंजूस होती है, हमारा खानदान बिगड़ जाएगा। ज्यादातर लोग यही कहते मिले कि हमारे लड़के को इतना तिलक-दहेज मिल रहा है, तो भी हम शादी नहीं कर रहे हैं; फिर बिना तिलक-दहेज के तो बात भी करना नहीं चाहते। इसी तरह, जितने मुँह उतनी ही बातें सुनने में आईं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महज मामूली हैसियतवालों को भी पाँच सौ और एक हजार तिलक-दहेज फरमाते देखकर जी कुढ़ जाता है—गुस्सा चढ़ जाता है ; मगर गरीबी ने तो ऐसा पंख तोड़ दिया है कि तड़फड़ा भी नहीं सकता । सारे हिंदू-समाज के कायदे भी अजीब ढंग के हैं । जो लोग मोल-भाव करके लड़के की बिक्री करते हैं, वे भले आदमी समझे जाते हैं ; और कोई गरीब बेचारा उसी तरह मोल-भाव करके लड़की को बेचता है, तो वह कमीना कहा जाता है ! मैं अगर आज इसे बेचना चाहता तो इतनी काफी रकम ऐंठ सकता था कि कम-से-कम मेरी जिंदगी तो जरूर ही आराम से कट जाती । लेकिन जीते-जी हरगिज एक मक्खी भी न लूँगा । चाहे यह क्वाँरी रहे या सयानी होकर मेरा नाम हँसाए । देखिए न, सयानी तो करीब-करीब हो ही गई है – सिर्फ पेट की मार से उकसने नहीं पाती, बढ़ती रुकी हुई है ! अगर किसी खुशहाल घर में होती, तो अब तक फूटकर सयानी हो जाती – बदन भरने से ही खूबसूरती पर भी रोगन चढ़ता है, और बेटी की बाढ़ बेटे से जल्दी होती भी है ।

अब अधिक क्या कहूँ, बाबू साहब ! अपनी ही करनी का नतीजा भोग रहा हूँ । मोतियाबिंद, गठिया और दम्मा ने निकम्मा कर छोड़ा है, अब मेरे पछतावे के आँसुओं में भी ईश्वर को पिघलाने का दम नहीं है । अगर सच पूछिए, तो इस वक्त सिर्फ एक ही उम्मीद पर जान अँटकी हुई है – एक साहब ने बहुत कुछ कहने-सुनने से इसके साथ शादी करने का वादा किया है । देखना है कि गाँव के खोटे लोग उन्हें भी भड़काते हैं या मेरी झाँझरी नैया को पार लगाने देते हैं । लड़के की उम्र कुछ कड़ी जरूर है – इकतालीस-बयालीस साल की ; मगर अब इसके सिवा कोई चारा भी नहीं है । छाती पर पत्थर रखकर अपनी इस राजकोकिला को.....।"

इसके बाद मुंशीजी का गला रुँध गया – बहुत बिलखकर रो उठे और भगजोगनी को गोद में बैठाकर फूट-फूटकर रोने लग गए । अनेक प्रयत्न करके भी मैं किसी प्रकार उनको आश्वासन न दे सका । जिसके पीछे हाथ धोकर बाम विधाता पड़ जाता है ; उसे तसल्ली देना ठट्ठा नहीं है ।

मुंशीजी की दास्तान सुनने के बाद मैंने अपने कई क्वाँरे मित्रों से अनुरोध किया कि उस अलौकिक रूपवती दरिद्र-कन्या से विवाह करके एक निर्धन भाई का उद्धार और अपने जीवन को सफल करें ; किंतु सबने मेरी बात अनसुनी कर दी । ऐसे-ऐसे लोगों ने भी आनाकानी की, जो समाज-सुधार संबंधी विषयों पर बड़े शान-गुमान से लेखनी चलाते हैं । यहाँ तक कि प्रौढ़ावस्था के रँडुए मित्र भी राजी न हुए ।

आखिर वही महाशय डोला काढ़कर भगजोगनी को अपने घर ले गए और वहीं शादी की ; कुल रस्में पूरी करके मुंशीजी को चिंता के दलदल से उबारा ।

बेचारे मुंशीजी की छाती से पत्थर का बोझ तो उतरा, मगर घर में कोई पानी देनेवाला भी न रह गया । बुढ़ापे की लकड़ी जाती रही, पैर लच गई । साल पूरा होते-होते अचानक टन बोल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गए । गाँववालों ने गले में घड़ा बाँधकर नदी में डुबा दिया ।

भगजोगनी जीती है । आज वह पूर्ण युवती है । उसका शरीर भरा-पूरा और फूला-फला है । उसका सौंदर्य उसके वर्तमान नवयुवक पति का स्वर्गीय धन है । उसका पहला पति इस संसार में नहीं है । दूसरा पति है – उसका सौतेला बेटा !!

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि कहानी लिखने योग्य प्रतिभा भी मुझमें नहीं है जबकि यह कहानी श्रेष्ठ कहानियों में एक है ?
2. लेखक ने भगजोगनी नाम ही क्यों रखा ?
3. मुंशीजी के बड़े भाई क्या थे ?
4. दारोगाजी की तरक्की रुकने की क्या वजह थी ?
5. मुंशीजी अपने बड़े भाई से कैसे उऋण हुए ?
6. 'थानेदार की कमाई और फूस का तापना दोनों बराबर हैं' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?
7. 'मेरी लेखनी में इतना जोर नहीं' –लेखक ऐसा क्यों कहता है ?
8. भगजोगनी का सौंदर्य क्यों नहीं खिल सका ?
9. मुंशीजी गल-फाँसी लगाकर क्यों मरना चाहते थे ?
10. भगजोगनी का दूसरा वर्तमान नवयुवक पति उसका ही सौतेला बेटा है –यह घटना समाज की किस बुराई की ओर संकेत करती है और क्यों ?
11. इस कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखें ।
12. आशय स्पष्ट करें –

    (क) 'जो जीभ एक दिन बटेरों का शोरबा सुड़कती थी, अब वह सराह-सराहकर मटर का सत्तू सरपोटने लगी । चुपड़ी चपातियाँ चबानेवाले दाँत अब चंद चने चबाकर दिन गुजारने लगे ।'

    (ख) 'सचमुच अमीरी की कब्र पर पनपी हुई गरीबी बड़ी ही जहरीली होती है ।'

पाठ के आस-पास

1. शिवपूजन सहाय को आंचलिक कथा साहित्य का जनक माना जाता है । इनकी और रेणु की आंचलिकता में क्या समानता-असमानता प्राते हैं । शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
2. लेखक द्वारा कहानी में मुंशीजी के सुख-दुख के दिनों का शब्दचित्र प्रस्तुत किया गया है । इसी तरह के आस-पास के पात्रों का अपनी भाषा में शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर लेखक का उपन्यास 'देहाती दुनिया' पढ़िए ।
4. शिवपूजन सहाय कथाकार और निबंधकार के साथ-साथ एक सफल पत्रकार भी थे – इस संबंध में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
5. लेखक ने दारोगाजी के लिए काबिल, मेहनती, ईमानदार, चालाक, दिलेर और मुस्तैद आदि विशेषणों का प्रयोग किया है । इनका प्रयोग करते हुए आप भी किसी ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र दस वाक्यों में प्रस्तुत करें ।
6. प्राकृतिक 'भगजोगनी' (जुगनू) को देखकर उसकी गतिविधियों एवं सौंदर्य पर प्रकाश डालें ।
7. इस पाठ में दुष्यंत और शकुंतला का नाम आया है । आप दुष्यंत और शकुंतला की कथा अपने शिक्षक से जानें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें –
   बारूद की पुड़िया होना, निबुआ नोन चटाना, घी के दिए जलाना, सुबह का चिराग होना, पाँचों उँगलियाँ घी में, कोढ़ में खाज होना, कलेजा काँपना, बाट जोहना, दाँत दिखाना, छाती पर पत्थर रखना, टन बोल जाना, कलेजा टूक-टूक हो जाना ।
2. 'बुढ़ापे की लाठी' और 'जितने मुँह उतनी बातें' मुहावरों का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें ।
3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखें –
   साधारण, अमीरी, कृत्रिम, सुंदर, कर्कश, संतोष
4. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखें –
   घोड़ा, चिड़िया, घर, फूल, तीर
5. भाषा और इमारत शब्दों के वचन बदलें ।

शब्द निधि

प्लॉट	: कथानक	चिथड़ा	: टुकड़ा
कलाविद्	: कला का ज्ञाता	टीपना	: दबाना
घिनाना	: घृणा करना	मयस्सर	: प्राप्त, उपलब्ध
ओहदा	: पद	ईमानन	: ईमान से
जीमना	: भोजन करना	परवरिश	: पालन-पोषण
उऋण	: ऋणमुक्त	अदावत	: दुश्मनी, बदला
जलसा	: आयोजन, उत्सव	गुमान	: घमंड, गर्व
शोरबा	: शाक-सब्जी का रस	करीमा-खालिकबारी	: उर्दू के प्राथमिक ज्ञान से संबंधित अमीर खुसरो की एक पुस्तक
दूअर	: अनाथ		
अजहद	: असीम, बेहद, अपार		
सुघर	: सुगढ़, सुंदर		

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

राजेंद्र प्रसाद

राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर 1884 ई० को सारण जिला (बिहार) के जीरादेई गाँव में हुआ था। उनके पिता महादेव सहाय फारसी एवं संस्कृत के अच्छे जानकार थे। वे पहलवानी और घुड़सवारी के शौकीन थे। इन दोनों की शिक्षा उन्होंने अपने पुत्र राजेंद्र प्रसाद को भी दी थी। सबसे पहले उनका नामांकन छपरा के हाई स्कूल में हुआ और वहाँ वे आठवें दर्जे में रखे गए। वार्षिक परीक्षा में वे प्रथम आए। स्कूल के प्राचार्य ने प्राप्तांक से प्रसन्न होकर उन्हें दुहरी प्रोन्नति दी। 1902 ई० में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय की मैट्रिक्युलेशन परीक्षा में प्रथम आए। उसके बाद आई० ए०, बी० ए० और बी० एल० प्रेसीडेंसी कॉलेज से किया। 1911 ई० में वे कलकत्ता में वकील दल में शामिल हुए। 1916 ई० में जब पटना में एक अलग न्यायालय स्थापित हुआ तब वे वकालत करने के लिए पटना चले आए।

राजेंद्र प्रसाद का राजनैतिक जीवन उत्कृष्ट रहा। वे संविधान सभा के प्रथम स्थायी अध्यक्ष हुए तथा भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति हुए। कोलकाता में वे जब छात्र थे तो उनके जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी – बंग-भंग आंदोलन। इसकी प्रतिक्रिया में देश में व्यापक उत्तेजना छा गई। 'बिहार टाइम्स' के संपादक महेश नारायण और सच्चिदानंद सिन्हा का सहारा पाकर राजेंद्र प्रसाद ने 'बिहार स्टूडेंट्स कांफ्रेंस' की स्थापना की।

राजेंद्र प्रसाद कोलकाता में हिंदी विद्वानों की संगति में आए और उनके सक्रिय सहयोग से अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई। उनके लेखन की प्रक्रिया आजीवन चलती रही। 28 फरवरी 1963 ई० में उनका निधन हो गया।

प्रस्तुत पाठ 'भारत का पुरातन विद्यापीठ : नालंदा' हमारे इतिहास की एक गौरवपूर्ण गाथा को समेटे हुए है। यह पाठ तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था की ऐसी झाँकी पेश करता है जिसमें हमारी प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं विद्या केंद्रों का महानतम स्वरूप दिखलाई पड़ता है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भारत का पुरातन विद्यापीठ : नालंदा

नालंदा हमारे इतिहास में अत्यंत आकर्षक नाम है, जिसके चारों ओर न केवल भारतीय ज्ञान-साधना के सुरभित पुष्प खिले हैं, अपितु किसी समय एशिया महाद्वीप के विस्तृत भूभाग के विद्या-संबंधी सूत्र भी उसके साथ जुड़े हुए थे । ज्ञान के क्षेत्र में देश और जातियों के भेद लुप्त हो जाते हैं । नालंदा इसका उज्ज्वल दृष्टांत था । नालंदा की वाणी एशिया महाद्वीप में पर्वत और समुद्रों के उस पार तक फैल गई थी । लगभग छह सौ वर्षों तक नालंदा एशिया का चैतन्य-केंद्र बना रहा ।

मगध की प्राचीन राजधानी वैभार पाँच पर्वतों के मध्य में बसी हुई गिरिव्रज या राजगृह नामक स्थान में थी । वर्तमान नालंदा उसी राजगृह के तप्त कुंडों से सात मील उत्तर की ओर है । नालंदा का प्राचीन इतिहास भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के समय तक जाता है । कहते हैं, बुद्ध के समय नालंदा गाँव में प्रावारिकों का आम्रवन था । जैन-ग्रंथों के अनुसार नालंदा में महावीर और आचार्य मेखलिपुत्त गोसाल की भेंट हुई थी । उस समय यह राजगृह का उपग्राम या वाहिरिक स्थान समझा जाता था, जहाँ महावीर ने चौदह वर्षावास व्यतीत किए । सूत्रकृतांग के अनुसार नालंदा के एक धनी नागरिक लेप ने धन-धान्य, शैया, आसन, रथ, सुवर्ण आदि के द्वारा भगवान बुद्ध का स्वागत किया और उनका शिष्य बन गया था ।

तिब्बत के विद्वान इतिहास-लेखक लामा तारानाथ के अनुसार नालंदा सारिपुत्त की जन्मभूमि थी । उनका चैत्य अशोक के समय में भी वहाँ था । राजा अशोक ने एक मंदिर बनवाकर उसे परिवर्द्धित किया । इस प्रकार यद्यपि नालंदा की प्राचीनता की अनुश्रुति बुद्ध, अशोक दोनों से संबंधित है; किंतु एक प्राणवंत विद्यापीठ के रूप में उसके जीवन का आरंभ लगभग गुप्तकाल में हुआ । तारानाथ ने तो भिक्षु नागार्जुन और आर्यदेव इन दोनों का संबंध नालंदा से लगाया है और यहाँ तक लिखा है कि आचार्य दिङ्नाग ने नालंदा में आकर अनेक प्रतिपक्षियों के साथ शास्त्रों का विचार किया था, जिनमें सुदुर्जय नाम के एक ब्राह्मण विद्वान अग्रणी थे ।

चौथी सदी में चीनी यात्री फाह्यान नालंदा में आए थे । उन्होंने सारिपुत्त के जन्म और परिनिर्वाण स्थान पर निर्मित स्तूप के दर्शन किये । किंतु नालंदा का विशेष अभ्युदय इसके कुछ समय बाद हुआ ।

सातवीं सदी में सम्राट हर्षवर्धन के समय जब युवानचांग इस देश में आए तो नालंदा अपनी उन्नति के शिखर पर था । युवानचांग ने एक जातक की कहानी का हवाला देते हुए लिखा है कि

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नालंदा का यह नाम इसीलिए पड़ा था कि यहाँ अपने पूर्व-जन्म में उत्पन्न भगवान बुद्ध को तृप्ति नहीं होती थी (न-अल-दा) । सच तो यह है कि ज्ञान के क्षेत्र में जो दान दिया जाता है वह सीमारहित और अनंत होता है, न उसके बाँटने वालों को तृप्ति होती है और न उसे लेने वालों को।

नालंदा विश्वविद्यालय का जन्म जनता के उदार दान से हुआ । कहा जाता है कि इसका आरंभ पाँच सौ व्यापारियों के दान से हुआ था, जिन्होंने अपने धन से भूमि खरीद कर बुद्ध को दान में दी थी । युवानचांग के समय में नालंदा विश्वविद्यालय का रूप धारण कर चुका था। यहाँ उस समय छह बड़े विहार थे । आठवीं सदी के यशोवर्मन के शिलालेख में नालंदा का बड़ा भव्य वर्णन किया गया है । यहाँ के विहारों की पंक्तियों के ऊँचे-ऊँचे शिखर आकाश में मेघों को छूते थे । उनके चारों ओर नीले जल से भरे हुए सरोवर थे, जिनमें सुनहरे और लाल कमल तैरते थे। बीच-बीच में सघन आम्रकुंजों की छाया थी । यहाँ के भवनों के शिल्प और स्थापत्य को देखकर आश्चर्य होता था । उनमें अनेक प्रकार के अलंकरण और सुंदर मूर्तियाँ थीं । यों तो भारतवर्ष में अनेक संघाराम हैं, किंतु नालंदा उन सबमें अद्वितीय है । चीनी यात्री इत्सिंग के समय इस विहार में तीन सौ बड़े कमरे और आठ मंडप थे । पुरातत्त्व विभाग की खुदाई में नालंदा विश्वविद्यालय के जो अवशेष यहाँ प्राप्त हुए हैं, उनसे इन वर्णनों की सच्चाई प्रकट होती है ।

आर्थिक दृष्टि से नालंदा विश्वविद्यालय के आचार्य और विद्यार्थी निश्चिंत बना दिए गए थे । भूमि और भवनों के दान के अतिरिक्त नित्य प्रति के व्यय के लिए सौ गाँवों की आय अक्षय निधि के रूप में समर्पित की गई थी । इत्सिंग के समय में यह संख्या बढ़कर दो सौ गाँवों तक पहुँच गई थी । उत्तरप्रदेश, बिहार और बंगाल इन तीनों राज्यों ने नालंदा के निर्माण और अर्थव्यवस्था में पर्याप्त भाग लिया । बंगाल के महाराज धर्मपालदेव और देवपालदेव के समय के ताम्रपत्र और मूर्तियाँ नालंदा की खुदाई में प्राप्त हुई हैं ।

विदेशों के साथ नालंदा विश्वविद्यालय का जो संबंध था, उसका स्मारक एक ताम्रपत्र नालंदा की खुदाई में मिला है । इससे ज्ञात होता है कि सुवर्ण दीप (सुमात्रा) के शासक शैलेंद्र सम्राट श्री बालपुत्रदेव ने मगध के सम्राट् देवपालदेव के पास अपना दूत भेजकर यह प्रार्थना की कि उनकी ओर से पाँच गाँवों का दान नालंदा विश्वविद्यालय को दिया जाए । ताम्रपत्र के अनुसार नालंदा के गुणों से आकृष्ट होकर यवद्वीप के सम्राट बालपुत्र ने भगवान बुद्ध के प्रति भक्ति प्रदर्शित करते हुए नालंदा में एक बड़े विहार का निर्माण कराया । उन पाँच नव गाँवों की आय प्रज्ञा पारमिता आदि का पूजन, चातुर्दिश अर्थात् अंतरराष्ट्रीय आर्य भिक्षुसंघ के चीवर, भोजन, चिकित्सा, शयनासन आदि का व्यय, धार्मिक ग्रंथों की प्रतिलिपि एवं विहार की टूट-फूट की मरम्मत आदि के लिए खर्च की जाती थी । यह तो संयोग से बचा हुआ एक उदाहरण है, जो विदेशों में फैली हुई नालंदा की अमिट छाप हमारे सामने रखता है; लेकिन नालंदा महाविहारीय आर्य भिक्षुसंघ की धाक समस्त एशिया भूखंड में थी । इस संघ की बहुत-सी मिट्टी की मुद्राएँ नालंदा में प्राप्त हुई हैं ।

नालंदा का शिक्षाक्रम बड़ी व्यावहारिक बुद्धि से तैयार किया गया था । उसे पढ़कर विद्यार्थी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दैनिक जीवन में अधिकाधिक सफलता प्राप्त करते थे । मूल रूप में पाँच विषयों की शिक्षा वहाँ अनिवार्य थी । शब्द विद्या या व्याकरण, जिससे भाषा का सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो सके; हेतुविद्या या तर्क-शास्त्र, जिससे विद्यार्थी अपनी बुद्धि की कसौटी पर प्रत्येक बात को परख सकें; चिकित्सा विद्या, जिसे सीखकर छात्र स्वयं स्वस्थ रह सकें एवं दूसरों को भी नीरोग बना सकें तथा शिल्प विद्या । एक न एक शिल्प को सीखना वहाँ अनिवार्य था, जिसके द्वारा छात्रों में व्यावहारिक और आर्थिक जीवन की स्वतंत्रता आ सके । इन चारों के अतिरिक्त अपनी रुचि के अनुसार लोग धर्म और दर्शन का अध्ययन करते थे ।

आचार्य शीलभद्र योगशास्त्र के उस समय के सबसे बड़े विद्वान माने जाते थे । उनसे पहले धर्मपाल इस संस्था के प्रसिद्ध कुलपति थे । शीलभद्र, ज्ञानचंद्र, प्रभामित्र, स्थिरमति, गुणमति आदि अन्य आचार्य युवानचांग के समकालीन थे । जिस समय युवानचांग अपने देश चीन को लौट गए, उस समय भी अपने भारतीय मित्रों के साथ उनका वैसा ही घनिष्ठ संबंध बना रहा । जब युवानचांग नालंदा से विदा होने लगे, तब आचार्य शीलभद्र एवं अन्य भिक्षुओं ने उनसे यहाँ रह जाने के लिए अनुरोध किया । युवानचांग ने उत्तर में यह वचन कहे--"यह देश बुद्ध की जन्मभूमि है, इसके प्रति प्रेम न हो सकना असंभव है; लेकिन यहाँ आने का मेरा उद्देश्य यही था कि अपने भाइयों के हित के लिए मैं भगवान के महान धर्म की खोज करूँ । मेरा यहाँ आना बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हुआ है । अब यहाँ से वापस जाकर मेरी इच्छा है कि जो मैंने पढ़ा-सुना है, उसे दूसरों के हितार्थ बताऊँ और अनुवाद रूप में लाऊँ, जिसके फलस्वरूप अन्य मनुष्य भी आपके प्रति उसी प्रकार कृतज्ञ हो सकें जिस प्रकार मैं हुआ हूँ ।" इस उत्तर से शीलभद्र को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने कहा--"यह उदात्त विचार तो बोधिसत्वों जैसे हैं । मेरा हृदय भी तुम्हारी सदाशाओं का समर्थन करता है ।"

नालंदा के विद्वानों ने विदेशों में जाकर ज्ञान का प्रसार किया । पहले तो तिब्बत के प्रसिद्ध सम्राट स्त्रोंग छन गम्पो (630 ई०) ने अपने देश में भारती लिपि और ज्ञान का प्रचार करने के लिए अपने यहाँ के विद्वान थोन्मिसम्भोट को नालंदा भेजा, जिसने आचार्य देवविदसिंह के चरणों में बैठकर बौद्ध और ब्राह्मण साहित्य की शिक्षा प्राप्त की । इसके बाद आठवीं सदी में नालंदा के कुलपति आचार्य शान्तिरक्षित तिब्बती सम्राट के आमंत्रण पर उस देश में गए । नालंदा के तंत्र विद्या के प्रमुख आचार्य कमलशील भी तिब्बत गए थे । नालंदा के विद्वानों ने तिब्बती भाषा सीख कर बौद्ध ग्रंथों और संस्कृत साहित्य का तिब्बती में अनुवाद किया । इस प्रकार उन्होंने तिब्बत देश को एक साहित्य प्रदान किया और फिर शनैः शनैः वहाँ के निवासियों को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया । नालंदा के आचार्य शांतिरक्षित ने ही सबसे पहले 749 ई० में तिब्बत में बौद्ध विहार की स्थापना की थी । इन विद्वानों में आचार्य पद्मसंभव (749 ई०) और दीपशंकर श्री ज्ञानअतिश (980 ई०) के नाम उल्लेखनीय हैं ।

साहित्य और धर्म के अतिरिक्त नालंदा कला का भी एक प्रसिद्ध केंद्र था, जिसने अपना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रभाव नेपाल, तिब्बत, हिन्देशिया एवं मध्य एशिया की कला पर डाला । नालंदा की कांस्य मूर्तियाँ अत्यंत सुंदर और प्रभावोत्पादक हैं । विद्वानों का अनुमान है कि कुर्किहार से प्राप्त हुई बौद्ध मूर्तियाँ नालंदा शैली से प्रभावित हैं । वस्तुत: नालंदा की सर्वांगीण उन्नति उस समन्वित साधना का फल था जो शिल्पविद्या और शब्दविद्या एवं धर्म और दर्शन के एक साथ पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने से संभव हुई । हमारी अभिलाषा होनी चाहिए कि भूतकाल के इस प्रबंध से शिक्षा लें और कला, शिल्प, साहित्य, धर्म, दर्शन और ज्ञान का एक बड़ा केंद्र नालंदा में हम पुन: स्थापित करें ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. "नालंदा की वाणी एशिया महाद्वीप में पर्वत और समुद्रों के उस पार तक फैल गई थी ।" इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए ।
2. मगध की प्राचीन राजधानी का नाम क्या था और वह कहाँ अवस्थित थी ?
3. बुद्ध के समय नालंदा में क्या था ?
4. महावीर और मेखलीपुत्त गोसाल की भेंट किस उपग्राम में हुई थी ?
5. महावीर ने नालंदा में कितने दिनों का वर्षावास किया था ?
6. तारानाथ कौन थे ? उन्होंने नालंदा को किसकी जन्मभूमि बताया है ?
7. एक जीवंत विद्यापीठ के रूप में नालंदा कब विकसित हुआ ?
8. फाह्यान कौन थे ? वे नालंदा कब आए थे ?
9. हर्षवर्द्धन के समय में कौन चीनी यात्री भारत आया था, उस समय नालंदा की दशा क्या थी ?
10. नालंदा के नामकरण के बारे में किस चीनी यात्री ने किस ग्रंथ के आधार पर क्या बताया है ?
11. नालंदा विश्वविद्यालय का जन्म कैसे हुआ ?
12. यशोवर्मन के शिलालेख में वर्णित नालंदा का अपने शब्दों में चित्रण कीजिए ।
13. इत्सिंग कौन था ? उसने नालंदा के बारे में क्या बताया है ?
14. विदेशों के साथ नालंदा विश्वविद्यालय के संबंध का कोई एक उदाहरण दीजिए ।
15. नालंदा में किन पाँच विषयों की शिक्षा अनिवार्य थी ?
16. नालंदा के कुछ प्रसिद्ध विद्वानों की सूची बनाइए ।
17. शीलभद्र से युवानचांग (ह्वेनसांग) की क्या बातचीत हुई ?
18. विदेशों में ज्ञान-प्रसार के क्षेत्र में नालंदा के विद्वानों के प्रयासों के विवरण दीजिए ।
19. ज्ञानदान की विशेषता क्या है ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पाठ के आस-पास

1. "कला, शिल्प, साहित्य, धर्म, दर्शन और ज्ञान का एक बड़ा केंद्र नालंदा में हम पुनः स्थापित करें।" प्रथम राष्ट्रपति की इस इच्छा को आज किस रूप में पूरा करने की कोशिश की जा रही है ?
2. बिहार के मानचित्र में नालंदा का स्थान निर्धारित कीजिए एवं उसकी चौहद्दी स्पष्ट कीजिए।
3. नालंदा के पास आज कौन-सा शहर है ? उसका क्या ऐतिहासिक महत्त्व है ?
4. पाठ में आनेवाले ऐतिहासिक तथ्यों, नामों और स्थानों का दो-दो वाक्यों में परिचय दीजिए।
5. नालंदा और राजगीर के ऐतिहासिक महत्त्व के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए और एक लेख तैयार कीजिए।

भाषा की बात

1. 'सुरभित पुष्प' विशेष्य-विशेषण युक्त पद है, नीचे कुछ विशेष्य दिए जा रहे हैं। इन्हें उपयुक्त विशेषणों से जोड़िए –
   वृक्ष, पृथ्वी, आकाश, शिखर, पर्वत, वन, नदी, नगर
2. चैतन्यकेन्द्र में कौन-सा समास है। विग्रह करके बताएँ।
3. अनुश्रुति शब्द में 'अनु' उपसर्ग है। इस उपसर्ग से पाँच शब्द बनाइए।
4. निम्नांकित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए –
   अभ्युदय, उज्ज्वल, उन्नति, यशोवर्मन, अंतरराष्ट्रीय, शयनासन, हितार्थ, सदाशा।
5. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द दीजिए –
   मेघों को छूनेवाला, जैसा दूसरा न हो, आगे-आगे चलनेवाला, जिसकी कोई सीमा नहीं हो, जो खजाना कभी समाप्त न हो, जिसकी मति स्थिर हो चुकी हो।
6. विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   आकाश, सच्चाई, विदेश, आरंभ, प्राचीनता, लुप्त, विस्तृत, तृप्ति।

शब्द निधि

सुरभित	:	सुगंधित
अपितु	:	बल्कि, प्रत्युत
चैतन्य	:	जागरूक, सजग, सचेत
प्रावारिक	:	उत्तरीय वस्त्रों, लबादा, चोगा इत्यादि का निर्माता
बाहिरिक	:	उपग्राम, नगर के निकट का कस्बा अथवा बस्ती
वर्षावास	:	वर्षा ऋतु में एक निश्चित स्थान पर समय बिताना
अनुश्रुति	:	किंवदंती, लोकप्रसिद्धि
प्राणवंत	:	जीवंत, सजीव
प्रतिपक्षी	:	विरोधी
परिनिर्वाण	:	निधन
जातक	:	बुद्ध के विभिन्न जन्मों की कथाओं का संग्रह

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विहार	:	बौद्ध मठ
शिलालेख	:	पत्थर पर लिखे गए लेख
भव्य	:	विशाल-आकर्षक एवं सुंदर
आम्रकुंज	:	आम का बागीचा
स्थापत्य	:	वास्तुकला, भवननिर्माण कला
अलंकरण	:	शोभा की वस्तु
संघाराम	:	बौद्ध भिक्षुओं के ठहरने या टिकने के लिए उद्यान
हेतुविद्या	:	तर्कशास्त्र, न्यायशास्त्र, जो कारणों पर विचार करे
कुलपति	:	विश्वविद्यालय का प्रधान
लाभप्रद	:	लाभ देने अथवा पहुँचानेवाला
कृतज्ञ	:	जो किए हुए उपकार को माने
सदाशा	:	शुभ आशा
ब्राह्मण साहित्य	:	वैदिक साहित्य का एक रूप जिसमें विभिन्न कर्मकांड विस्तार से समझाए गए हैं
शनैः शनैः	:	धीरे-धीरे
हिन्देशिया	:	आधुनिक इंडोनेशिया
कांस्यमूर्तियाँ	:	कांसे की मूर्तियाँ
प्रभावोत्पादक	:	प्रभाव उत्पन्न करनेवाला
सर्वांगीण	:	सभी अंगों का, समग्र

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गुरुगोविंद सिंह

गुरुगोविंद सिंह का जन्म बिहार की राजधानी पटना में सन् 1666 में हुआ । पटना में ही माता गुजरी देवी ने उन्हें गुरुमुखी सिखाई । वे सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे । उनका मूल नाम गोविंद राय था । 1699 ई० में आनंदपुर के केशवगढ़ नामक स्थान पर दयाराम, धर्मदास, मुहमचंद, साहिबचंद, हिम्मत इन पाँच सिखों को मृत्युंजयी बनाकर 'सिंह' बनाया और गोविंद राय से गोविंद सिंह बने । उनकी प्रतिभा शास्त्र से लेकर शस्त्र तक दिखलाई पड़ती है । बचपन में ही उन्होंने बिहार की अपनी भाषा के अलावा बाँग्ला भी सीख ली थी । वे गुरु तेगबहादुर के शिष्य थे और औरंगजेब के समकालीन । औरंगजेब की कट्टरता का उन्होंने पुरजोर विरोध किया । शक्ति संघटन के लिए उन्होंने हिमालय की पहाड़ियों को अपना निवास स्थान बनाया तथा बीस वर्षों की ऐकांतिक साधना की । इस ऐकांतिक साधना के अनेक शुभ परिणाम निकले । उन्होंने फारसी और संस्कृत के ऐतिहासिक-पौराणिक ग्रंथों का विशद् अध्ययन किया । घुड़सवारी, तीरंदाजी में असाधारण निपुणता प्राप्त की, आखेट विद्या में दक्षता प्राप्त की और कठोर जीवन व्यतीत करने का अभ्यास किया । वे भलीभाँति समझ चुके थे कि औरंगजेब के विरुद्ध तबतक नहीं लड़ा जा सकता, जबतक औरंगजेब की कट्टरता का विरोध करने वाले को धार्मिक स्तर पर जागरूक न किया जाए । इसी उद्देश्य की सफलता के लिए उन्होंने 'खालसा पंथ' की स्थापना की, जो उनके जीवन की सबसे बड़ी सफलता है । 1708 ई० में उनका देहांत हो गया ।

गुरुगोविंद सिंह की प्रमुख कृतियाँ हैं – 'जापु साहिब', 'अकाल उसतति', 'विचित्र नाटक', 'चंडी चरित्र', 'ज्ञान प्रबोध', 'शास्त्रनाममाला', 'चौपाई' । 'जफरनामा' 1706 ई० में औरंगजेब को लिखा गया पत्र है जो खूब प्रसिद्ध हुआ । हिंदी कवियों द्वारा उन्होंने पंजाब में वीर रस के काव्य का प्रणयन कराया और स्वयं भी काव्य की रचना की । गुरुगोविंद सिंह की वाणी में शांत एवं वीर रस की प्रधानता है । परमात्मा की स्तुति में उन्होंने भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को विषय बनाया तथा युद्धों के वर्णन में वीर और रौद्र रस को प्रधानता दी । उनकी कृतियों में उपमा, रूपक और दृष्टांत अलंकारों का बाहुल्य है । उनकी भाषा प्रधानतया पंजाबी मिश्रित ब्रज है, किंतु अरबी, फारसी और संस्कृत शब्दों के प्रयोग भी खूब हुए हैं । उनकी भाषा में सरिता का प्रवाह एवं निर्झर का कलकल निनाद है । उनकी समस्त वाणी में परमात्मा तथा देश की भक्ति के स्वर मुखरित हुए हैं ।

प्रथम छंद में तमाम भेदों के पीछे मनुष्य की अंतर्वर्ती एकता की प्रतिष्ठा की गई है । समाज में ऊपरी विभेदों के भीतर आंतरिक एकता की अनुभूति तक इस पद की व्याप्ति है । कवि मानवमात्र की एकता का पक्षधर है । छंद के उत्तरार्ध में वह एकत्वपूर्ण आत्मबोध के कारण ईश्वर की एकता, गुरु, स्वरूप और ज्योति की एकता की प्रतिष्ठा करता है ।

द्वितीय छंद में परमात्मा की विश्वरूप के स्वरूप में पहचान की गई है । यह अजर-अमर, व्यापक और बहुरूपी है । इसी विश्वरूपी परमात्मा से सबकुछ उत्पन्न हुआ है और इसी में लीन होगा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(1)

कोऊ भयो मुंडिया संन्यासी, कोऊ जोगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मानबो ।
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी,
मानस की जात सबै एकै पहचानबो ।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ।
एक ही सेव सबही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो ।

(2)

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे,
न्यारे न्यारे ह्वै कै फेरि आगमै मिलाहिंगे ।
जैसे एक धूरते अनेक धूर धूरत हैं,
धूरके कनूका फेर धूरही समाहिंगे ।
जैसे एक नदते तरंग कोट उपजत हैं,
पान के तरंग सब पानही कहाहिंगे ।
तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

कविता के साथ

1. ईश्वर ने मनुष्य को सर्वोत्तम कृति के रूप में रचा है । कवि के अनुसार मनुष्य वस्तुत: एक ही ईश्वर की संतान है, उसे खेमों में बाँटना उचित नहीं है । इस क्रम में उन्होंने किन उदाहरणों का प्रयोग किया है ?
2. कवि ने मानवीय संवेदना को मनुष्यता के किस डोर में बाँधे रखने की बात कही है ?
3. गुरुगोविंद सिंह के इन भक्ति पदों के माध्यम से सामाजिक कलह और भेदभाव को कम किया जा सकता है ? पठित पद से उदाहरण देकर समझाएँ ।
4. **भाव स्पष्ट करें –**

   (क) 'तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
   ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे ।'

   (ख) 'एक ही सेव सबही को गुरुदेव एक,
   एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो ।'

कविता के आस-पास

1. सिख धर्म के सभी गुरुओं का नाम क्रम से लिखें ।
2. गुरुगोविंद सिंह का जन्म कहाँ हुआ था ? उनका बचपन कहाँ बीता ? उनके प्रारंभिक जीवन के बारे में एक लेख लिखें ।
3. गुरुगोविंद सिंह सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे । उन्होंने सिखों के लिए पाँच ककार की प्रतिष्ठा की । उन पाँचों ककारों के नाम और महत्त्व अपने शिक्षक से पूछिए ।
4. निराला की एक कविता है 'जागो फिर एक बार' जिसमें उन्होंने गुरुगोविंद सिंह का स्मरण किया है । इस कविता को अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर उसका पाठ करें ।
5. गुरुगोविंद सिंह के जीवन-वृत्त से संबंधित तथ्य एकत्र कर उनके ऐतिहासिक महत्त्व पर विचार करें ।
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने एक पुस्तक लिखी है 'सिख गुरुओं के पुण्य स्मरण' । यह पुस्तक अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें और सिख धर्म के प्रादुर्भाव पर एक निबंध लिखें ।
7. अपने वर्ग के सहपाठियों के साथ पटना साहिब की यात्रा कीजिए और वहाँ हरमंदिर साहब के दर्शन कर एक रिपोर्ताज तैयार कीजिए ।

भाषा की बात

1. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –**
   आग, संन्यासी, गुरु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –

एक, आग, भूत, प्रगट, उपज, संन्यासी

3. संन्यासी का संधि विच्छेद करें ।

4. दोनों पदों का खड़ी बोली में रूपांतरण कीजिए।

शब्द निधि

कोक : कोई
मुंडिया : मुंडित सिर
जतिवन : यति, योगी
तुरक : तुर्क
राफजी : वह व्यक्ति जो अपने स्वामी को पीड़ित देखकर भाग जाए
इमाम : इस्लाम धर्म के पुरोहित, पुजारी
साफी : शुद्ध करनेवाला
मानस : मनुष्य
करीम : कृपा करनेवाला, भगवान
सोई : वही
राजक : राजा, राज करनेवाला
रहीम : जो दया करे
सेव : सेव्य, जिसकी सेवा की जाए, सेवा करने योग्य
कनूका : कण
कोट : करोड़
ते : से
न्यारे : निराले, अलग
धूर : धूलि
नदते : नदी
पान : पानी
कहाहिंगे : कहे जाएँगे
अभूत : जो भूत नहीं है

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लक्ष्मीनारायण सुधांशु

लक्ष्मीनारायण सुधांशु का जन्म 18 जनवरी 1907 ई० में बिहार प्रांत के पूर्णिया जिला के चंदवा-रूपसपुर गाँव में हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव और शहर दोनों में हुई । उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी भाषा और साहित्य में एम० ए० किया । वे छात्र जीवन से ही राजनीति में गहरी रुचि लेने लगे थे । आजादी की लड़ाई में उन्होंने सक्रिय भागीदारी निभाई । 1942 के आंदोलन में वे जेल गए और निर्मम यातनाएँ सहीं ।

लक्ष्मीनारायण सुधांशु का साहित्यिक जीवन एक कथाकार के रूप में छात्र-जीवन से ही आरंभ हो गया था । 'भ्रातृप्रेम' नामक उनका एक उपन्यास 1926 में तथा उनके दो कहानी संकलन 'गुलाब की कलियाँ' और 'रसरंग' क्रमशः 1928 और 1929 ई० में प्रकाशित हो चुके थे । परंतु कथाकार के रूप में उनका कोई खास स्थान नहीं बन पाया । साहित्यिक क्षेत्र में उनकी विशेष प्रसिद्धि एक सुधी समीक्षक के रूप में है । 'काव्य में अभिव्यंजनावाद' तथा 'जीवन के तत्त्व और काव्य के सिद्धांत' उनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं ।

सुधांशु जी समर्थ पत्रकार और उच्चकोटि के संस्मरण लेखक भी थे । उन्होंने 'अवंतिका' जैसी मशहूर पत्रिका का संपादन किया था । विशिष्ट साहित्यकारों तथा राजनेताओं से संबद्ध उनके संस्मरणों का संग्रह 'व्यक्तित्व की झाँकियाँ' 1971 ई० में प्रकाशित हुआ । 'वियोग' उनका प्रसिद्ध गद्यकाव्य है जिसकी रचना उन्होंने अपनी पहली पत्नी के आकस्मिक निधन पर की थी । साहित्य रचना के अतिरिक्त अनेक प्रांतीय एवं अखिल भारतीय स्तर की साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध रहकर उन्होंने हिंदी की यथेष्ट सेवा की । बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के जन्मदाताओं में उनकी गणना होती है और उसके संचालक मंडल के आजीवन सदस्य रहे थे । राजनीति के क्षेत्र में भी सुधांशु जी समान रूप से सक्रिय थे । वे बिहार विधान सभा के सदस्य और सभापति तथा अखिल भारतीय काँग्रेस समिति के सदस्य थे । उन्होंने कई शिक्षण और कला संस्थानों की स्थापना की । वे एक साथ साहित्यकार, राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता थे ।

प्रस्तुत निबंध में सुधांशु जी ने ग्राम-गीत के मर्म का उद्घाटन करते हुए काव्य और जीवन में उसके महत्त्व का निरूपण किया है । ग्राम-गीत का उद्भव और उसकी प्रकृति का अनुसंधान करते हुए उन्होंने प्रतिपादित किया है कि जीवन की शुद्धता और भावों की सरलता का जितना मार्मिक वर्णन ग्राम-गीतों में मिलता है, उतना परवर्तीकला-गीतों में नहीं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ग्राम-गीत का मर्म

किसी देश के काव्य का उद्‌भव साधारणत: वहाँ की दंतकथाओं या ग्राम-गीतों से होता है । उनके उत्तरोत्तर कलात्मक विकास में मानव-जीवन के महत्त्व की संहति तथा उसकी विविधता का आलोचन रहता है । सामाजिक जीवन और काव्य, दोनों को मिलाकर देखने से यह पता चलता है कि समाज की धारणाओं के मध्य में जीवन का प्रवाह किस दिशा में, कितनी दूर तक, जा सका है, परिस्थिति की परवशता के कारण जीवन किस सीमा तक पंगु बना है और कहाँ तक उसने परिस्थिति तथा समाज की रूढ़ियों पर विजय पाई है । ग्राम-गीतों में मानव-जीवन के उन प्राथमिक चित्रों के दर्शन होते हैं, जिनमें मनुष्य साधारणत: अपनी लालसा, वासना, प्रेम, घृणा, उल्लास, विषाद को समाज की मान्य धारणाओं से ऊपर नहीं उठा सका है और अपनी हृदयगत भावनाओं को प्रकट करने में उसने कृत्रिम शिष्टाचार का प्रतिबंध भी नहीं माना है । उनमें सर्वत्र रूढ़िगत जीवन ही नहीं है, प्रत्युत कहीं-कहीं प्रेम, वीरता, क्रोध कर्त्तव्य का भी बहुत ही रमणीय, बाह्य तथा अंतर्विरोध दिखाया गया है । जीवन की शुद्धता और भावों की सरलता का जितना मार्मिक वर्णन ग्राम-गीतों में मिलता है, उतना परवर्ती कला-गीतों में नहीं ।

जीवन का आरंभ जैसे शैशव है, वैसे ही कला-गीत का ग्राम-गीत है । ग्राम-गीत संभवत: वह जातीय आशु कवित्व है, जो कर्म या क्रीड़ा के ताल पर रचा गया है । गीत का उपयोग जीवन के महत्त्वपूर्ण समाधान के अतिरिक्त साधारण मनोरंजन भी है, ऐसा कहना अनुपयुक्त न होगा । मनोरंजन के विविध रूप और विधियाँ हैं । स्त्री-प्रकृति में गार्हस्थ्य कर्म-विधान की जो स्वाभाविक प्रेरणा है, उससे गीतों की रचना का अटूट संबंध है । चक्की पीसते समय, धान कूटते समय, चर्खा कातते समय, अपने शरीर-श्रम को हल्का करने के लिए स्त्रियाँ गीत गाती हैं । उस समय उनका अभिप्राय साधारणत: यही रहता है कि परिश्रम के कारण जो थकावट आई रहती है, उससे ध्यान हटाकर अन्यथा मनोरंजन में चित्त संलग्न किया जा सके । इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे गीत भी हैं, जो भाव की उमंग में गाए गए हैं । जन्म, मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह, पर्व-त्योहार आदि के अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं, उनमें उल्लास और उमंग की ही प्रधानता रहती है । उनके गीतों का मुख्य विषय पारिवारिक जीवन है । प्रेम, विवाह तथा पतोहू और सास-ससुर के बर्ताव, माँ, भाई, बहन का स्नेह आदि बातें ही ज्यादातर गीतों में पाई जाती हैं । स्त्री-प्रकृति का अनुकरण पुरुषों ने भी किया । हल जोतने, नाव खेने, पालकी ढोने आदि कामों के समय गाए जाने लायक गीत पुरुषों ने भी बनाए । किंतु सब मिलाकर ग्राम-गीतों की प्रकृति स्त्रैण ही रही, पुरुषत्व का आक्रमण उन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पर नहीं किया जा सका । स्त्रियों ने जहाँ कोमल भावों की ही अभिव्यक्ति की, वहाँ पुरुषों ने अवश्य ही अपने संस्कारवश प्रेम को प्राप्त करने के लिए युद्ध-घोषणा की । इस प्रकार मनुष्य की दो सनातन प्रवृत्तियों - प्रेम और युद्ध - का वर्णन भी ग्राम-गीतों में मिलता है । तत्त्वतः ग्राम-गीत हृदय की वाणी है, मस्तिष्क की ध्वनि नहीं । इनकी उद्भावना व्यक्तिगत जीवन के उल्लास-विषाद को लेकर भले ही हुई हो, किंतु मानव-जातीयता में उनकी सारी वैयक्तिक विशेषता अंतर्निहित हो गई है । उनकी अपूर्वता इसी बात में है कि वे व्यक्ति को साथ लेकर भी उसको, प्रधान न रख, उपलक्ष्य बनाकर भावों की स्वाभाविक मार्मिकता के साथ अग्रसर हुए हैं ।

कला-गीत के अंतर्गत मुक्तक और प्रबंध काव्य, दोनों का समावेश है । इनके इतिहास का अनुसंधान करने पर ग्राम-गीतों पर ही आकर ठहरना पड़ता है । इसमें संदेह नहीं कि ग्राम-गीतों से ही काल्पनिक तथा वैचित्र्यपूर्ण कविताओं का विकास हुआ है । यही ग्राम-गीत क्रमशः सभ्य जीवन के अनुक्रम से कला-गीत के रूप में विकसित हो गया है, जिसका संस्कार अब तक वर्तमान है । ग्राम-गीत भी प्रथमतः व्यक्तिगत उच्छ्वास और वेदना को लेकर उद्गीत किया गया; किंतु इन भावनाओं ने समष्टि का इतना प्रतिनिधित्व किया कि उनकी सारी वैयक्तिक सत्ता समष्टि में ही तिरोहित हो गई और इस प्रकार उसे लोक-गीत की संज्ञा प्राप्त हुई । ग्राम-गीत को कला-गीत के रूप में आते-आते कुछ समय तो लगा ही, पर उसमें सबसे मुख्य बात यह रही कि कला-गीत अपनी रूढ़ियाँ बनाकर चले । कला-गीत का क्षेत्र भी जितना व्यापक तथा विस्तृत हुआ और उसके अनुसार यदि उसमें कुछ हद तक शास्त्रीय रूढ़िप्रियता न रहती, तो उसके समरूपत्व का निर्वाह भी संभव न होता । ग्राम-गीत की रचना में जिस प्रकृति और संकल्प का विधान था, कला-गीत में उसकी उपेक्षा करना समुचित न माना गया । अत्यधिक संस्कृत तथा परिष्कृत होने के बाद भी कला-गीत अपने मूल ग्राम-गीत के संस्कार से कुछ बातों में मुक्ति न पा सका और यह उस समय तक संभव भी नहीं, जब तक मानव-प्रकृति को ही विषय मानकर काव्य रचनाएँ की जाती रहेंगी । ग्राम-गीत से कला-गीत के परिवर्तन में एक बात उल्लेखनीय रही कि ग्राम-गीत में रचना की जो प्रकृति स्त्रैण थी, वह कला-गीत में आकर कुछ पौरुषपूर्ण हो गई । स्त्री और पुरुष रचयिता के दृष्टिकोण में जो सूक्ष्म और स्वाभाविक भेद हो सकता है, वह ग्राम-गीत तथा कला-गीत की अंतर्प्रकृति में बना रहा । ग्राम-गीत में स्त्री की ओर से पुरुष के प्रति प्रेम की जो आसन्नता थी, वह कला-गीत में बहुधा पुरुष के उपक्रम के रूप में परिवर्तित होने लगी ।

राजा-रानी, राजकुमार या राजकुमारी या ऐसे ही समाज के किसी विशिष्ट वर्ग के नायक को लेकर काव्य रचना की जो प्रणाली बहुत प्राचीन काल से चली आ रही थी और जिसका संस्कृत साहित्य में विशेष महत्त्व था, उसका प्रधान कारण यह था कि वैसे विशिष्ट व्यक्तियों के लिए साधारण जनता के हृदय पर उनके महत्त्व की प्रतिष्ठा बनी हुई थी । उनमें धीरोदात्तता, दक्षता, तेजस्विता, रूढ़वंशता, वाग्मिता आदि गुण स्वाभाविक माने जाते थे । मानव होते हुए भी उनकी महत्ता, विशिष्टता, प्रतिष्ठा आदि का प्रभावोत्पादक संस्कार जनता के चित्त पर पड़ा था । ऐसे चरित्र

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

को लेकर काव्य रचना करने में रसोत्कर्ष का काम, बहुत-कुछ सामाजिक धारणा के बल पर ही, चल जाता था; किंतु साधारण जीवन के चित्रण में कवि की प्रतिभा का बहुत-सा अंश, अपने चरित्र नायक में विशिष्टता प्राप्त कराने की चेष्टा में ही खर्च हो जाता है । ग्राम-गीत की अब यह प्रवृत्ति काव्य-गीत में भी चलने लगी है । एक दुखी भिखारिणी भी हृदय की उच्चता में रानी को मात कर सकती है, इसकी कल्पना तक उस समय हमें न थी । उच्च वर्ग के लोगों के प्रति समाज में विशिष्टता की धारणा ज्यों-ज्यों कम होने लगी, त्यों-त्यों निम्न वर्ग के प्रति हमारे हृदय में आदर का भाव जमने लगा और इस प्रकार काव्य में भी ऐसे पात्रों को सामान्य स्थान प्राप्त होने लगा । हृदय की उच्चता – विशालता किसी में हो, चाहे वह राजा हो या भिखारी, उसका वर्णन करना ही कवि-कर्म है । ग्राम-गीत में दशरथ, राम, कौशल्या, सीता, लक्ष्मण, कृष्ण, यशोदा के नाम बहुत आए हैं और उनसे जन-समाज के बीच संबंध का प्रतिनिधित्व कराया गया है । श्वसुर के लिए दशरथ, पति के लिए राम या कृष्ण, सास के लिए कौशल्या या यशोदा, देवर के लिए लक्ष्मण आदि सर्वमान्य हैं । इसका कारण हमारा वह पिछला संस्कार भी है, जो धार्मिक महाकाव्यों ने हमारे चित्त पर डाला है । एक दरिद्र गृहिणी भी, जिसके घर में भोजन के लिए थोड़ा-सा अन्न है, सोने के ही सूप में फटककर उसे साफ करती है । हमारी दरिद्रता के बीच में भी संपत्तिशालीनता का यह रूप हमारे भाव को उद्दीप्त करने के लिए ही उपस्थित किया गया है । ऐसे वर्णन कला-गीत में चाहे विशेष महत्त्व प्राप्त न करें, किंतु ग्राम-गीत के वे मेरुदण्ड समझे जाते हैं ।

बच्चे अब भी राजा, रानी, राक्षस, भूत, जानवर आदि की कहानियाँ सुनने को ज्यादा उत्कंठित रहते हैं । नानी की कहानियाँ ऐसी ही हुआ करती हैं । साधारण तथा प्रत्यक्ष जीवन में जो घटनाएँ होती रहती हैं, उनके अतिरिक्त जो जीवन से दूर तथा अप्रत्यक्ष हैं, उनके संबंध में कुछ जानने की लालसा तथा उत्कंठा अधिक बनी रहती है । बच्चों की भाँति उन मनुष्यों को भी, जिनका मानसिक विकास नहीं हुआ रहता, वैसी कहानियाँ ज्यादा रुचिकर मालूम होती हैं । ग्राम-गीतों की रचना में ऐसी प्रवृत्ति प्रायः सर्वत्र पाई जाती है । मानव जीवन का पारस्परिक संबंध-सूत्र कुछ ऐसा विचित्र है कि जिस बात को हम एक काल और एक देश में बुरा समझते हैं, उसी बात को दूसरे काल और दूसरे देश में अच्छा मान लेते हैं । जिस वैचित्र्यवाद को हमने अबुद्धिवाद कहकर तिरस्कृत किया, वही पश्चिमी काव्य जगत् में रोमांस के नाम पर फल-फूल कर अपने सौरभ से पूर्व को भी आकर्षित करने लगा ।

प्रेम-दशा जितनी व्यापकत्व-विधायिनी होती है, जीवन में उतनी और कोई स्थिति नहीं । प्रेम या विरह में समस्त प्रकृति के साथ जीवन की जो समरूपता देखी जाती है वह क्रोध, शोक, उत्साह, विस्मय, जुगुप्सा आदि में नहीं । विरहाकुल पुरुष पशु, पक्षी, लता, द्रुम सबसे अपनी वियुक्त प्रिया का पता पूछ सकता है, किंतु क्रुद्ध मनुष्य अपने शत्रु का पता प्रकृति से नहीं पूछता पाया जाता । यही कारण है कि प्रेमिका या प्रेमी प्रकृति के साथ अपने जीवन का जैसा साहचर्य मानते हैं, वैसा और कोई नहीं । मनोविज्ञान का यह तथ्य काव्य में एक प्रणाली के रूप में समाविष्ट

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कर लिया गया है । प्रिय के अस्तित्व की सृष्टि-व्यापिनी भावना से जीवन और जगत् की कोई वस्तु अलग नहीं रह सकती । जीवन का यह उत्कर्ष तथा विकास प्रेम-दशा के अतिरिक्त अन्यत्र सुलभ भी नहीं । वृक्ष, लता, पशु, पक्षी जीवन के अनादि सहचर हैं । प्रकृति का यह साहचर्य अब सभ्य जीवन से बहुत दूर हट गया है, लेकिन गमले के पौधों और पिंजड़े के पक्षियों का साथ शायद नहीं छूट सकेगा । अपने सुख-दुख के भावों को उनपर आरोपित कर, हम उन्हें स्पंदित करते ही रहते हैं । काव्य में भी जीवन की ऐसी व्यापकता के अभाव में मानो हम विह्वल-से बने रह जाते हैं । प्राण-भक्षक को भी रक्षक समझने की शक्ति प्रेम में ही है ।

ग्राम-गीतों में ऐसे वर्णन बहुत हैं, जहाँ नायिका अपने प्रेमी की खोज में बाघ, भालू, साँप आदि से उसका पता पूछती चलती है । आदिकवि वाल्मीकि ने विरह-विह्वल राम के मुख से सीता की खोज के लिए न जाने कितने पशु-पक्षी, लता-द्रुम आदि से पता पुछवाया है । इसके अतिरिक्त सीता के अनुसंधान तथा उनके पास राम का प्रणय-संदेश पहुँचाने के लिए, जो हनुमान को दूत बनाकर तैयार किया, वह काव्य में इस परिपाटी का मार्ग-दर्शक ही हो गया । इसके उपरांत मेघदूत, पवनदूत, हंसदूत, भ्रमरदूत आदि न मालूम, कितने दूत प्रेम-संभार के लिए आ धमके । अब तो वैज्ञानिक युग में टेलीफोन, टेलीग्राफ, रेडियो आदि यंत्र दूत बने ही, पोस्टमैन को भी यह मर्यादा मिलनी चाहिए । कला-गीतों में पशु, पक्षी, लता-द्रुम आदि से जो प्रश्न पूछे गए हैं, उनके उत्तर में वे प्रायः मौन रहे हैं । विरही यक्ष का मेघदूत भी मौन ही रहा है, किंतु ग्राम-गीत का दूत मौन नहीं रहा है ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. 'ग्राम-गीत का मर्म' निबंध में व्यक्त सुधांशु जी के विचारों को सार रूप में प्रस्तुत करें ।
2. जीवन का आरंभ जैसे शैशव है, वैसे ही कला-गीत का ग्राम-गीत है । लेखक के इस कथन का क्या आशय है ?
3. गार्हस्थ्य कर्म-विधान में स्त्रियाँ किस तरह के गीत गाती हैं ?
4. मानव जीवन में ग्राम-गीतों का क्या महत्त्व है ?
5. "ग्राम-गीत हृदय की वाणी है, मस्तिष्क की ध्वनि नहीं ।" -आशय स्पष्ट करें ।
6. ग्राम-गीत की प्रकृति क्या है ?
7. कला-गीत और ग्राम-गीत में क्या अंतर है ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

8. 'ग्राम-गीत का ही विकास कला-गीत में हुआ है ।' पठित निबंध को ध्यान में रखते हुए उसकी विकास-प्रक्रिया पर प्रकाश डालें ।
9. ग्राम-गीतों में प्रेम-दशा की क्या स्थिति है ? पठित निबंध के आधार पर उदाहरण देते हुए समझाइए ।
10. 'प्रेम या विरह में समस्त प्रकृति के साथ जीवन की जो समरूपता देखी जाती है, वह क्रोध, शोक, विस्मय, उत्साह, जुगुप्सा आदि में नहीं ।' - आशय स्पष्ट करें ।
11. ग्राम-गीतों में मानव जीवन के किन प्राथमिक चित्रों के दर्शन होते हैं ?
12. गीत का उपयोग जीवन के महत्त्वपूर्ण समाधान के अतिरिक्त साधारण मनोरंजन भी है । निबंधकार ने ऐसा क्यों कहा है ?
13. ग्राम-गीतों के मुख्य विषय क्या हैं ? निबंध के आधार पर उत्तर दें ।
14. किसी विशिष्ट वर्ग के नायक को लेकर जो काव्य रचना की जाती थी । किन स्वाभाविक गुणों के कारण साधारण जनता के हृदय पर उनके महत्त्व की प्रतिष्ठा बनती थी ?
15. ग्राम-गीत की कौन-सी प्रवृत्ति अब काव्य-गीत में भी चलने लगी है ?
16. ग्राम-गीत के मेरुदंड क्या हैं ?
17. 'प्रेम-दशा जितनी व्यापक विधायिनी होती है, जीवन में उतनी और कोई स्थिति नहीं ।' प्रेम के इस स्वरूप पर विचार करें तथा आशय स्पष्ट करें ।
18. 'कला-गीतों में पशु-पक्षी, लता-द्रुम आदि से जो प्रश्न पूछे गए हैं, उनके उत्तर में वे प्राय: मौन रहे हैं। विरही यक्ष का मेघदूत भी मौन ही रहा है ।' लेखक के इस कथन से क्या आप सहमत हैं ? यदि हैं तो अपने विचार दें ।
19. 'ग्राम-गीत का मर्म' निबंध के इस शीर्षक में लेखक ने 'मर्म' शब्द का प्रयोग क्यों किया है ? विचार कीजिए ।

पाठ के आस-पास

1. ग्राम-गीतों से ही काल्पनिक तथा वैचित्र्यपूर्ण कविताओं का विकास हुआ है । ऐसी कोई कविता बताइए जिसका निकटतर संबंध ग्राम-गीतों से हो ।
2. कला-गीत के अंतर्गत मुक्तक और प्रबंध काव्य को समाविष्ट किया गया है । अपने शिक्षक से मुक्तक तथा प्रबंध काव्य के बारे में जानकारी प्राप्त करें ।
3. लक्ष्मीनारायण सुधांशु बिहार विधान सभा के सभापति रहे हैं । उनके राजनीतिक जीवन की जानकारी प्राप्त कीजिए ।
4. सुधांशु जी बिहार के एक प्रमुख लेखक थे । राजनीति और सामाजिक कर्म के अतिरिक्त उन्होंने कई पत्रिकाएँ भी निकालीं और संस्थाएँ भी स्थापित कीं । इस विषय में अपने शिक्षक से चर्चा करते हुए सुधांशु जी पर एक निबंध तैयार कीजिए ।
5. यह निबंध आपको कैसा लगा ? इसके महत्त्व पर वर्ग में एक संगोष्ठी आयोजित कर अपने विचार दें या इस निबंध के संबंध में अपने विचार स्वतंत्र पन्ने पर लिखकर अपने शिक्षक से दिखाएँ ।
6. गाँवों में महिलाओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक अवसर पर संस्कार गीत गाए जाते हैं ? ये गीत आपके मन पर कैसा प्रभाव छोड़ते हैं ? बताएँ ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

7. आप कुछ ग्राम-गीत एकत्र कर विद्यालय की गोष्ठी में उनका पाठ कीजिए।

भाषा की बात

1. **निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय बताएँ –**

रमणीय, शुद्धता, जातीय, प्रधानता, पुरुषत्व, मार्मिकता, बर्ताव, अपूर्वता, स्वाभाविक, वर्तमान, प्रतिनिधित्व, शास्त्रीय, मधुरता

2. **निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग बताएँ –**

अपूर्व, अभिप्राय, परिश्रम, अतिरिक्त, उपलक्ष्य, अनुसंधान, विशिष्टता

3. **समास-विग्रह करें –**

उत्तरोत्तर, अटूट, पुरुषोत्तम, राजकुमार, राजा-रानी, संस्कारवश, ग्राम्यगीत, सास-ससुर, दशरथ, फल-फूल, मनोविज्ञान

4. **संधि-विच्छेद करें –**

उल्लास, संस्कृति, उद्दीप्त, समाविष्ट, उच्छ्वास, उद्गीत

5. **निम्नलिखित विशेषणों से संज्ञा बनाएँ –**

स्त्रैण, दरिद्र, पारस्परिक, शास्त्रीय

6. पाठ से कारक के परसर्ग रहित एवं परसर्ग सहित उदाहरण चुनें और कारक का रूप स्पष्ट करें।

7. **अर्थ की दृष्टि से वाक्यों की प्रकृति बताएँ –**

(क) कितनी दूर तक जा सका है ?

(ख) क्या जीवन का आरंभ शैशव है ?

(ग) कला-गीत में उनकी उपेक्षा करना समुचित न माना गया।

(घ) विरही यक्ष का मेघ-दूत भी मौन ही रहा है, किंतु ग्राम-गीत का दूत मौन नहीं रहा है।

शब्द निधि :

दंतकथा	:	वह लोकप्रचलित कथा जिसका कोई तथ्यपूर्ण पुस्तकीय आधार न हो
संहति	:	समुच्चय, एकत्र होना
आलोचन	:	गुणदोष मूल्यांकन
परवशता	:	अन्य के वश में होना, पराश्रितता
प्रत्युत	:	बल्कि
परवर्ती	:	बाद का
आशु कवित्व	:	तुरंत कविता रच देने की क्षमता
स्त्रैण	:	स्त्री प्रकृति से युक्त
उद्भावना	:	सृजन, उत्पन्न होना या करना
वैयक्तिक	:	व्यक्तिगत
अन्तर्निहित	:	समाहित, छिपा हुआ
अपूर्वता	:	अतिविशिष्टता, विलक्षणता
वैचित्र्यपूर्ण	:	विचित्रता से परिपूर्ण, विशेष कलात्मक

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उच्छ्वास	:	विषादपूर्ण अभिव्यक्ति, आह
वेदना		दुख, पीड़ा
उद्गीत		ऊँचे स्वर में गाया हुआ
समष्टि	:	समूह, सबकुछ के एक साथ होने का भाव
तिरोहित	:	लुप्त
समरूपत्व	:	रूपगत समानता
परिष्कृत	:	शुद्ध किया हुआ, स्वच्छता से युक्त
आसन्नता	:	निकटता
दक्षता	:	निपुणता, कुशलता
तेजस्विता	:	प्रखरता, तेज से युक्तता
रूढ़वंशता	:	वंश की पारंपरिकता यानी खानदानी रूढ़िवादिता, कुलीनता
वाग्मिता	:	वक्तृत्व की कुशलता, वाणी की समृद्धि
रसोत्कर्ष	:	रसात्मकता की परिपूर्णता
संपत्तिशालीनता	:	संपत्ति से पैदा हुई शालीनता, समृद्धिजन्य शालीनता
उद्दीप्त	:	जाग्रत
मेरुदंड	:	रीढ़ की हड्डी
उत्कंठित	:	उत्सुक
विस्मय	:	आश्चर्य
जुगुप्सा	:	घृणा
द्रुम	:	वृक्ष
वियुक्त	:	अलग
साहचर्य	:	साथ होना, सहचरता
अनादि सहचर	:	शाश्वत साथी
प्रेम-संभार	:	प्रेम और उससे जुड़े हुए अन्य भाव

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

फणीश्वरनाथ रेणु

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म औराही हिंगना नामक गाँव, जिला अररिया (बिहार) में 4 मार्च 1921 को हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गढ़बनैली, सिमरबनी, अररिया और फारबिसगंज में तथा माध्यमिक शिक्षा विराटनगर (नेपाल) के विराटनगर आदर्श उच्च विद्यालय में हुई। रेणु ने 1942 ई० के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख सेनानी की भूमिका निभाई। 1950 ई० में नेपाली जनता को राणाशाही के दमन और अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए वहाँ की सशस्त्र क्रांति और राजनीति में उन्होंने सक्रिय योगदान दिया। वे दमन और शोषण के विरुद्ध आजीवन संघर्षरत रहे। सत्ता के दमनचक्र के विरोध में उन्होंने पद्मश्री की उपाधि का त्याग कर दिया था। 11 अप्रैल 1977 ई० को उनका देहावसान हो गया।

हिंदी कथा साहित्य में जिन कथाकारों ने युगांतर उपस्थित किया है, फणीश्वरनाथ रेणु उनमें से एक हैं। उन्होंने कथा साहित्य के अतिरिक्त संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि विधाओं को नई ऊँचाई दी। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - 'मैला आँचल', 'परती परिकथा', 'दीर्घतपा', 'कलंक मुक्ति', 'जुलूस', 'पल्टू बाबू रोड', (उपन्यास); 'ठुमरी', 'अगिनखोर', 'आदिम रात्रि की महक', 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप', 'अच्छे आदमी' (कहानी संग्रह); 'ऋणजल-धनजल', 'वन तुलसी की गंध', 'श्रुत अश्रुत पूर्व' (संस्मरण); 'नेपाली क्रांतिकथा' (रिपोर्ताज) आदि।

हिंदी में रेणु का वास्तविक उदय 1954 ई० में प्रकाशित उनके बहुचर्चित उपन्यास 'मैला आँचल' से हुआ। 1954 ई० से बहुत पहले 1936 ई० में ही उनकी पहली कहानी 'बटबाबा' एक साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में छप चुकी थी। 'मैला आँचल' ने हिंदी कथा साहित्य में आंचलिकता को एक पारिभाषिक अभिधा दी। उपन्यास और कहानी दोनों कथारूपों की अपनी मनोरम कलाकृतियों से रेणु ने गाँव की धरती का जो चित्र खींचा है, वह अमिट छाप छोड़ जाता है। देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद नेताओं और कार्यकर्ताओं का ध्यान ग्रामोत्थान की ओर गया। रेणु ने अपनी गहरी संवेदना का परिचय देते हुए गाँवों के संपूर्ण अंतर्विरोधों और अंगड़ाई लेती हुई चेतना को जीवंत कथारूप दिया। उनके गाँव में एक तरफ पुरातन जड़ता और नवीन गत्यात्मकता की टकराहट है, विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों के अंतर्विरोध हैं, बिरादरीवाद की कड़वाहट है तो दूसरी तरफ इनके बीच बजती हुई लोक संस्कृति की शहनाई भी है।

प्रस्तुत कहानी 'लाल पान की बेगम' ग्रामीण परिवेश की कहानी है। नाच देखने-दिखाने के बहाने कहानीकार ने ग्रामीण जीवन के अनेक रंग-रेशे को गहरी संवेदना के साथ प्रकट किया है। गाँव में लोग-बाग किस तरह एक-दूसरे के साथ ईर्ष्या-द्वेष, राग-विराग, आशा-निराशा, हर्ष-विषाद के गहरे आवर्त में बँधे होते हैं, उसकी जीवंत बानगी है - 'लाल पान की बेगम'।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लाल पान की बेगम

"क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या ?"

बिरजू की माँ शकरकंद उबालकर बैठी मन-ही-मन कुढ़ रही थी । अपने आँगन में सात साल का लड़का बिरजू शकरकंद के बदले तमाचे खाकर आँगन में लोट-लोटकर सारी देह में मिट्टी मल रहा था । चँपिया के सर भी चुड़ैल मँडरा रही है..... । आधा आँगन धूप रहते जो गई है सहुआइन की दुकान पर छोवा-गुड़ लाने, सो अभी तक नहीं लौटी; दीया-बाती की बेला हो गई । आए आज लौटके जरा ! बागड़ बकरे की देह में कुकुरमाछी लगी थी, इसलिए बेचारा बागड़ रह-रहकर कूद-फाँद कर रहा था । बिरजू की माँ बागड़ पर मन का गुस्सा उतारने का बहाना ढूँढ़कर निकल चुकी थी । पिछवाड़े की मिर्च की फूली गाछ ! बागड़ के सिवा और किसने कलेवा किया होगा । बागड़ को मारने के लिए एक छोटा ढेला उठा चुकी थी कि पड़ोसिन मखनी फुआ की पुकार सुनाई पड़ी, "क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या ?"

"बिरजू की माँ के आगे नाथ और पीछे पगहिया न हो, तब न फुआ !"

गरम गुस्से में बुझी नुकीली बात फुआ की देह में धँस गई और बिरजू की माँ ने हाथ के ढेले को पास ही फेंक दिया-बेचारा बागड़ को कुकुरमाछी परीशान कर रही है । आ-हा, आय..... हर्र-र-र-र ! आय-आय ?

बिरजू ने लेटे-ही-लेटे बागड़ को एक डंडा लगा दिया । बिरजू की माँ की इच्छा हुई कि जाकर उसी डंडा से बिरजू का भूत भगा दे, किंतु नीम के पास खड़ी पनभरनियों की खिलखिलाहट सुनकर रुक गई । बोली, "ठहर, तेरे बप्पा ने बड़ा हथछुट्टा बना दिया है तुझे ! बड़ा हाथ चलता है लोगों पर । ठहर !"

मखनी फुआ नीम के पास झुकी कमर से घड़ा उतारकर पानी भरकर लौटती पनभरनियों से बिरजू की माँ की बहकी हुई बात का इंसाफ करा रही थी, "जरा देखो तो इस बिरजू की माँ को । चार मन पाट (जूट) का पैसा क्या हुआ है, धरती पर पाँव ही नहीं पड़ते । निसाफ करो ! खुद अपने मुँह से आठ दिन पहले से ही गाँव की अली-गली में बोलती फिरी है, हाँ, इस बार बिरजू के बप्पा ने कहा है, बैलगाड़ी पर बैठाकर बलरामपुर का नाच दिखा लाऊँगा । बैल अब अपने घर है तो हजार गाड़ियाँ मँगनी मिल जाएँगी । सो मैंने अभी टोक दिया, नाच देखनेवाली सब तो औन-पौन कर तैयार हो रही हैं, रसोई-पानी कर रही हैं । मेरे मुँह आग लगे, क्यों मैं टोकने गई । सुनती हो, क्या जवाब दिया बिरजू की माँ ने ?"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मखनी फुआ ने अपनी जीभ पोपले मुँह के होंठों को एक ओर मोड़कर ऐंठती हुई निकाली, "अरे-रे-हाँ-हाँ ! बि- र-र-रज्जू की मै-या के आगे नाथ और पीछे पगहिया ना हो, तब्बा न -आ-आ !"

जंगी की पतोहू बिरजू की माँ से नहीं डरती । वह जरा गला खोलकर ही कहती है, "फुआ आ ! सरवे सित्तलमिटी (सर्वे सेट्लमेंट) के हाकिम के बासा पर ..... यदि तू भी भेंटी चढ़ाती तो तुम्हारे नाम से भी दु-तीन बीघा धनहर जमीन का ट कट जाता । फिर तुम्हारे घर भी आज दस मन सोनाबंग पाट होता, जोड़ा बैल खरीदती ! फिर आगे नाथ और पीछे सैंकड़ों पगहिया झूलती ।"

बिरजू की माँ के आँगन में जंगी की पतोहू की गला-खोल बोली गुलेल की गोलियों की तरह दनदनाती हुई आई । बिरजू की माँ ने एक तीखा जवाब खोलकर निकाला, लेकिन मन मसोसकर रह गई । ....गोबर की ढेरी में कौन ढेला फेंके !

जीभ के झाल को गले में उतारकर बिरजू की माँ ने अपनी बेटी चंपिया को आवाज दी, "अरी चंपिया-या-या, आज लौटे तो तेरी मूड़ी मरोड़कर चूल्हे में झोंकती हूँ ! दिन-दिन बेचाल होती जाती है ! गाँव में तो अब ठेठर-बैसकोप का गीत गानेवाली पतुरिया-पतोहू सब आने लगी है । कहीं बैठके 'बाजे न मुरलिया' सीख रही होगी ह-र-जा ई-ई ! अरी चंपिया-या-या-या !"

जंगी की पतोहू ने बिरजू की माँ की बोली का स्वाद लेकर कमर पर घड़े को सँभाला और मटककर बोली, "चल दिदिया, चल ! इस मुहल्ले में लाल पान की बेगम बसती है ! नहीं जानती, दोपहर-दिन और चौपहर-रात बिजली की बत्ती भक्-भक् कर जलती है !"

भक्-भक् बिजली-बत्ती की बात सुनकर न जाने क्यों सभी खिलखिलाकर हँस पड़ी । फुआ की टूटी हुई दंत-पंक्तियों के बीच से एक मीठी गाली निकली, "शैतान की नानी !"

बिरजू की माँ की आँखों पर मानो किसी ने तेज टॉर्च की रोशनी डालकर चौंधिया दिया... भक् -भक् बिजली-बत्ती ! तीन साल पहले सर्वे कैंप के बाद गाँव की जलन-डाही औरतों ने एक कहानी गढ़के फैलाई थी, चंपिया की माँ के आँगन में रात-भर बिजली-बत्ती भुकभुकाती थी ! चंपिया की माँ के आँगन में, नालवाले जूते की छाप, घोड़े की टाप की तरह ! ...जलो, जलो ! और जलो ! चंपिया की माँ के आँगन में चाँदी-जैसी पाट सूखते देखकर जलनेवाली सब औरतें खलिहान पर सोनाली धान के बोझों को देखकर बैगन का भुर्ता हो जाएँगी ।

मिट्टी के बरतन से टपकते हुए छोवा-गुड़ को उँगलियों से चाटती हुई चंपिया आई और माँ से तमाचे खाकर चीख पड़ी, "मुझे क्यों मारती है ऐं-ऐं-ऐं ? सहुआइन जल्दी से सौदा नहीं देती है ऐं ऐं-ऐं !"

"सहुआइन जल्दी सौदा नहीं देती की नानी ! एक सहुआइन की ही दुकान पर मोती झरते हैं, जो जड़ गाड़कर बैठी हुई थी । बोल, गले पर लात देकर कल्ला तोड़ दूँगी हरजाई, फिर कभी 'बाजे न मुरलिया' गाते सुना ! चाल सीखने जाती है, टीशन की छोकरियों से !"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बिरजू की माँ ने चुप होकर अपनी आवाज अंदाजी की कि उसकी बात जंगी के झोंपड़े तक साफ-साफ पहुँच गई होगी ।

बिरजू बीती हुई बातों को भूलकर उठ खड़ा हुआ था और धूल झाड़ते हुए बरतन से टपकते गुड़ को ललचाई निगाह से देखने लगा था । दीदी के साथ वह भी दुकान जाता तो दीदी उसे भी गुड़ चटाती, जरूर । वह शकरकंद के लोभ में रहा और माँगने पर माँ ने शकरकंद के बदले.....

"ए, मैया, एक अँगुली गुड़ दे-दे !" बिरजू ने तलहथी फैलाई, "दे ना मैया, एक रत्तीभर !"

"एक रत्ती क्यों, उठाके बरतन को फेंक आती हूँ पिछवाड़े में; जाके चाटना । नहीं बनेगी मीठी रोटी । ..... मीठी रोटी खाने का मुँह होता है ।" बिरजू की माँ ने उबले शकरकंद का सूप रोती हुई चंपिया के सामने रखते हुए कहा, "बैठके छिलके उतार, नहीं तो अभी .... ।"

दस साल की चंपिया जानती है, शकरकंद छीलते समय कम-से-कम बारह बार माँ उसे बाल पकड़कर झकझोरेगी, छोटी-छोटी खोट निकालकर गालियाँ देगी । चंपिया माँ के गुस्से को जानती है ।

बिरजू ने इस मौके पर थोड़ी-सी खुशामद करके देखा, "मैया, मैं भी बैठकर शकरकंद छीलूँ ?"

"नहीं !" माँ ने झिड़की दी, "एक शकरकंद छीलेगा और तीन पेट में । जाके सिद्धू की बहू से कहो, एक घंटे के लिए कड़ाही माँगकर ले गई तो फिर लौटाने का नाम नहीं ।"

मुँह लटकाकर आँगन से निकलते-निकलते बिरजू ने शकरकंद और गुड़ पर निगाह दौड़ाई । चंपिया ने अपने झबरे केश की ओट से माँ की ओर देखा और नजर बचाकर चुपके से बिरजू की ओर एक शकरकंद फेंक दिया ..... बिरजू भागा ।

"सूरज भगवान डूब गए । दीया-बत्ती की बेला हो गई । अभी तक गाड़ी ....."

चंपिया बीच में ही बोल उठी, "कोयरी टोले में किसी ने गाड़ी नहीं दी मैया ! बप्पा बोले - माँ से कहना, सब ठीक-ठाक करके तैयार रहे ! मलदहिया टोली के मियाँजान की गाड़ी लाने जा रहा हूँ ।"

सुनते ही बिरजू की माँ का चेहरा उतर गया । लगा, छाते की कमानी उतर गई घोड़े से अचानक । जब अपने गाँव के लोगों की आँख में पानी नहीं तो मलदहिया टोली के मियाँजान की गाड़ी का क्या भरोसा ! न तीन में, न तेरह में । क्या होगा शकरकंद छीलकर ! रख दे उठाके ! ..... यह मर्द नाच दिखाएगा ! बैलगाड़ी पर चढ़ाकर नाच दिखाने ले जाएगा । चढ़ चुकी बैलगाड़ी पर, देख चुकी जी-भर नाच । पैदल जानेवाली सब पहुँचकर पुरानी हो चुकी होंगी ।

बिरजू छोटी कड़ाही सिर पर औंधाकर वापस आया, "देख दिदिया, मलेटरी टोपी ! इस पर दस लाठी मारने से भी कुछ नहीं होगा ।"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चंपिया चुपचाप बैठी रही, कुछ बोली नहीं, जरा-सी मुसकराई भी नहीं । बिरजू ने समझ लिया, मैया का गुस्सा अभी उतरा नहीं है पूरे तौर से ।

मड़ैया के अंदर से बागड़ को बाहर भगाती हुई बिरजू की माँ बड़बड़ाई, "कल ही पँचकौड़ी कसाई के हवाले करती हूँ राकस तुझे ! हर चीज में मुँह लगाएगा । चंपिया, बाँध दे बगड़ा को । खोल दे गले की घंटी । टुनुर-टुनुर । मुझे जरा भी नहीं सुहाता है !"

टुनुर-टुनुर सुनते ही बिरजू को सड़क से जाती हुई बैलगाड़ियों की याद हो आई "अभी बबुआ टोले की गाड़ियाँ नाच देखने जा रही थीं-झुनुर-झुनुर बैलों की झुनकी, तुमने सु.....।"

"बेसी बकबक मत करो !" बागड़ के गले से झुनक खोलती बोली चंपिया ।

"चंपिया, डाल दे चूल्हे में पानी ! बप्पा आएँ तो कहना कि अपने उड़न-जहाज पर चढ़कर नाच देख आएँ ! मुझे नाच देखने का सौख नहीं ! ..... मुझे जगाओ मत कोई ! मेरा माथा दुख रहा है ।"

मड़ैया के ओसारे पर बिरजू ने फिसफिसा के पूछा, "क्यों दिदिया, नाच में उड़नजहाज भी उड़ेगा ?"

चटाई पर कथरी ओढ़कर बैठती हुई चंपिया ने बिरजू को चुपचाप अपने पास बैठने का इशारा किया, मुफ्त में मार खाएगा बेचारा ।

बिरजू ने बहन की कथरी में हिस्सा बाँटते हुए चुक्की-मुक्की लगाई । जाड़े के समय इस तरह घुटने पर ठुड्डी रखकर चुक्की-मुक्की लगाना सीख चुका है । उसने चंपिया के कान के पास मुँह ले जाकर कहा, "हम लोग नाच देखने नहीं जाएँगे ? ....गाँव में एक पंछी भी नहीं है । सब चले गए ।"

चंपिया को अब तिल-भर भी भरोसा नहीं । सँझा तारा डूब रहा है । बप्पा अभी तक गाड़ी लेकर नहीं लौटे । एक महीना पहले से ही मैया कहती थी, 'बलरामपुर के नाच के दिन मीठी रोटी बनेगी; चंपिया छींट की साड़ी पहनेगी, बिरजू पैंट पहनेगा ! बैलगाड़ी पर चढ़कर ...'

चंपिया की भीगी पलकों पर एक बूँद आ गया ।

बिरजू का भी दिल भर आया । उसने मन-ही-मन इमली पर रहनेवाले जिन बाबा को एक बैगन कबूला, गाछ का सबसे पहला बैगन, उसने खुद जिस पौधे को रोपा है ! .....जल्दी से गाड़ी लेकर बप्पा को भेज दो, जिन बाबा ।'

मड़ैया के अंदर बिरजू की माँ चटाई पर पड़ी करवटें ले रही थी । उँहूँ, पहले से किसी बात का मनसूबा नहीं बाँधना चाहिए किसी को ! भगवान ने मनसूबा तोड़ दिया । उसको सबसे पहले भगवान से पूछना चाहिए, यह किस चूक का फल दे रहे हो भोला बाबा ! अपने जानते उसने किसी देवता-पित्तर की मान-मनौती बाकी नहीं रखी ! सर्वे के समय जमीन के लिए जितनी मनौतियाँ की थीं - ठीक ही तो ! महाबीरजी का रोट तो बाकी ही है । हाय रे दैव !- भूल-चूक माफ करो महाबीर बाबा । मनौती दूनी करके चढ़ाएगी बिरजू की माँ !....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बिरजू की माँ के मन में रह-रहकर जंगी की पतोहू की बातें चुभती हैं, भक्-भक् बिजली-बत्ती ! ....चोरी-चमारी करनेवाले की बेटी-पतोहू जलेगी नहीं ! पाँच बीघा जमीन क्या हासिल की है बिरजू के बप्पा ने, गाँव की भाईखौकियों की आँखों में किरकिरी पड़ गई है । खेत में पाट लगा देखकर गाँव के लोगों की छाती फटने लगी, धरती फोड़कर पाट लगा है; वैशाखी बादलों की तरह उमड़ते आ रहे हैं पाट के पौधे ! तो अलान तो फलान ! तनी आँखों की धार भला फसल सहे ! जहाँ पंद्रह मन पाट होना चाहिए, सिर्फ दस मन पाट काँटा पर तौल का ओजन हुआ रब्बी भगत के यहाँ । .....

इसमें जलने की क्या बात है भला ! .....बिरजू के बप्पा ने तो पहले ही कुर्मी टोला के एक आदमी को समझाके कहा था, 'जिंदगी-भर मजदूरी करते रह जाओगे । सर्वे का समय आ रहा है, लाठी कड़ी करो तो दो-चार बीघे जमीन हासिल कर सकते हो । सो गाँव की किसी पुतखौकी का भतार सर्वे के समय बाबू साहेब के खिलाफ खाँसा भी नहीं ।... बिरजू के बप्पा को कम सहना पड़ा है ! बाबू साहेब गुस्से से सरकस नाच के बाघ की तरह हुमड़ते रह गए । उनका बड़ा बेटा घर में आग लगाने की धमकी देकर गया । ...आखिर बाबू साहेब ने अपने सबसे छोटे लड़के को भेजा । बिरजू की माँ को 'मौसी' कहके पुकारा-'यह जमीन बाबूजी ने मेरे नाम से खरीदी थी । मेरी पढ़ाई-लिखाई उसी जमीन की उपज से चलती है । ....और भी कितनी बातें । खूब मोहना जानता है । उत्तना जरा-सा लड़का । जमींदार का बेटा है कि-

"चँपिया, बिरजू सो गया क्या ? यहाँ आ जा बिरजू, अंदर । तू भी आ जा, चँपिया ! – भला आदमी आवे तो एक बार आज !"

बिरजू के साथ चँपिया अंदर चली गई ।

"ढिबरी बुझा दे । .... बप्पा बुलाए तो जवाब मत देना, खपच्ची गिरा दे ।"

भला आदमी रे, भला आदमी ! मुँह देखो जरा इस मर्द का । ...बिरजू की माँ दिन-रात मंझा न देती तो ले चुके थे जमीन ! रोज आकर माथा पकड़के बैठ जाएँ, मुझे जमीन नहीं लेनी है बिरजू की माँ, मजूरी ही अच्छी । ....जवाब देती थी बिरजू की माँ खूब सोच-समझके । 'छोड़ दो, जब तुम्हारा कलेजा ही थिर नहीं होता है तो क्या होगा । जोरू-जमीन जोर के, नहीं तो किसी और के !-

बिरजू के बाप पर बहुत तेजी से गुस्सा चढ़ता है । चढ़ता ही जाता है । ...बिरजू की माँ का भाग ही खराब है, जो ऐसा गोबर गणेश घरवाला उसे मिला । कौन-सा सौख-मौज दिया है उसके मर्द ने । कोल्हू के बैल की तरह खटकर सारी उम्र काट दी इसको यहाँ, कभी एक पैसे की जलेबी भी लाकर दी है, उसके खसम ने ? – पाट का दाम भगत के यहाँ से लेकर बाहर-ही-बाहर बैल-हट्टा चले गए । बिरजू की माँ को एक बार नमरी लोट देखने भी नहीं दिया आँख से । बैल खरीद आए । उसी दिन से गाँव में ढिंढोरा पीटने लगे, 'बिरजू की माँ इस बार बैलगाड़ी पर चढ़कर जाएगी नाच देखने ।' ....दूसरे की गाड़ी के भरोसे नाच दिखाएगा !..

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अंत में उसे अपने-आप पर क्रोध आया । वह खुद भी कुछ कम नहीं ! उसकी जीभ में आग लगे ! बैलगाड़ी पर चढ़कर नाच देखने की लालसा किस कुसमय में उसके मुँह से निकली थी, भगवान जानें । फिर आज सुबह से दोपहर तक किसी-न-किसी बहाने उसने अट्ठारह बार बैलगाड़ी पर नाच देखने जाने की चर्चा छेड़ी है । लो खूब देखो नाच ! वाह रे नाच ! कथरी के नीचे दुशाले का सपना ! ...कल भोरे पानी भरने के लिए जब जाएगी, पतली जीभवाली पतुरिया सब हँसती आएँगी, हँसती जाएँगी । ...सभी जलते हैं उससे हाँ, भगवान दाढ़ी जार भी ! दो बच्चे की माँ होकर भी वह जस-की-तस है । उसका घरवाला उसकी बात में रहता है । वह बालों में गरी का तेल डालती है । उसकी अपनी जमीन है । है किसी के पास एक धुर जमीन भी अपनी इस गाँव में ! जलेंगे नहीं, तीन बीघे में धान लगा हुआ है, अगहनी ! लोगों की विखदीठ से बचे, तब तो !

बाहर बैलों की घंटी है, क्यों री चंपिया ?"

चंपिया और बिरजू ने प्रायः एक ही साथ कहा, "हूँ-ऊँ-ऊँ !"

"चुप !" बिरजू की माँ ने फिसफिसाकर कहा, "शायद गाड़ी भी है ! घड़घड़ाती है न ?"

"हूँ-ऊँ-ऊँ !" दोनों ने फिर हुंकारी भरी ।

"चुप गाड़ी नहीं है । तू चुपके से टट्टी में छेद करके देख तो आ चंपी ! भागके आ, चुपके-चुपके ।"

चंपिया बिल्ली की तरह हौले-हौले पाँव से टट्टी के छेद से झाँक आई, "हाँ मैया, गाड़ी है ।"

बिरजू हड़बड़ाकर उठ बैठा । उसकी माँ ने उसे हाथ पकड़कर सुला दिया, "बोलो मत !"

चंपिया भी गुदड़ी के नीचे घुस गई ।

बाहर बैलगाड़ी खोलने की आवाज हुई । बिरजू के बाप ने बैलों को जोर से डाँटा, "हाँ-हाँ ! आ गए घर ! घर आने के लिए छाती फटी जाती थी ।"

बिरजू की माँ ताड़ गई, जरूर मलदहिया टोली में गांजे की चिलम चढ़ रही थी; आवाज तो बड़ी खनखनाती हुई निकल रही है ।

"चंपिया है ।" बाहर से ही पुकारकर कहा उसके बाप ने, "बैलों को घास दे दे, चंपिया है !"

अंदर से कोई जवाब नहीं आया । चंपिया के बाप ने आँगन में आकर देखा तो न रोशनी, न चिराग, न चूल्हे में आग....बात क्या है । नाच देखने, उतावली होकर, पैदल ही चली गई क्या....।

बिरजू के गले में खसखसाहट हुई और उसने रोकने की पूरी कोशिश भी की, लेकिन खाँसी जब शुरू हुई तो पूरे पाँच मिनट तक वह खाँसता रहा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"बिरजू बेटा ! बेटा बिरजमोहन !" बिरजू के बाप ने पुचकारकर बुलाया, "मैया गुस्से के मारे सो गई क्या ? ...अरे, अभी तो लोग जा ही रहे हैं ।"

बिरजू की माँ के मन में आया कि कसकर जवाब दे, 'नहीं देखना नाच ! लौटा दो गाड़ी ।' "चंपिया है ! उठती क्यों नहीं ? ले धान की पँचसीस रख दे ।" धान की बालियों का छोटा झब्बा झोंपड़े के ओसारे पर रखकर उसने कहा, "दीया बालो !"

बिरजू की माँ उठकर ओसारे पर आई, "डेढ़ पहर रात को गाड़ी लाने की क्या जरूरत थी ? नाच तो खत्म हो रहा होगा ।"

ढिबरी की रोशनी में धान की बालियों का रंग देखते ही बिरजू की माँ के मन का सब मैल दूर हो गया । धानी रंग उसकी आँखों से उतरकर रोम-रोम में घुस गया ।

"नाच अभी शुरू भी नहीं हुआ होगा । अभी-अभी बलरामपुर के बाबू की संपनी गाड़ी मोहनपुर होटिल बंगला से हाकिम साहब को लाने गई है । इस साल आखिरी नाच है । ...पंचसीस टट्ट में खोंस दे, अपने खेत का है ।"

"अपने खेत का ?" हुलसती हुई बिरजू की माँ ने पूछा, "पक गए धान ?"

"नहीं, दस दिन में अगहन चढ़ते-चढ़ते लाल होकर झुक जाएँगी, सारे खेत की बालियाँ ! मलदहिया टोली जा रहा था, अपने खेत में धान देखकर आँखें जुड़ा गईं । सच कहता हूँ, पँचसीस तोड़ते समय ऊँगलियाँ काँप रही थीं मेरी ।"

बिरजू ने धान की एक बाली से एक धान लेकर मुँह में डाल लिया और उसकी माँ ने एक हल्की डाँट दी, "कैसा लुक्कड़ है तू रे ! ....इन दुश्मनों के मारे कोई नेम-धरम जो बचे ।"

"क्या हुआ, डाँटती क्यों है ?"

"नवान्न के पहले ही नया धान जुठा दिया, देखते नहीं ?"

"अरे इन लोगों का सबकुछ माफ है । चिरई-चुरमुन हैं ये लोग ! बस हम दोनों के मुँह में नवान्न के पहले नया अन्न न पड़े ।"

इसके बाद चंपिया ने भी धान की बाली से दो धान लेकर, दाँतों-तले दबाया, "ओ मैया ! इतना मीठा चावल !"

"और गमकता भी है न दिदिया ?" बिरजू ने फिर मुँह में धान लिया ।

"रोटी-पोटी तैयार कर चुकी क्या ?" बिरजू के बाप ने मुस्कराकर पूछा ।

"नहीं !" मान-भरे सुर में बोली बिरजू की माँ, "खाने का ठीक-ठिकाना नहीं - और रोटी बनाती है ।"

"वाह ! खूब हो तुम लोग ! जिसके पास बैल है, उसे गाड़ी माँगनी नहीं मिलेगी भला ? गाड़ीवालों को भी बैल की कभी जरूरत होगी । -पूछूँगा तब कोयरीटोला वालों से ! -ले, जल्दी से रोटी बना ले ।"

"देर नहीं होगी ?"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"अरे टोकरी-भर रोटी तो तू पलक मारते बना लेती है; पाँच रोटियाँ बनने में कितनी देर लगेगी ।"

अब बिरजू की माँ के ओठों पर मुस्कराहट खुलकर खेलने ली । उसने नजर बचाकर देखा, बिरजू का बप्पा उसकी ओर एकटक निहार रहा है । .....चंपिया और बिरजू न होते तो मन की बात हँसकर खोलते देर न लगती । चंपिया और बिरजू ने एक-दूसरे को देखा और खुशी से उनके चेहरे जगमगा उठे । .....मैया बेकार गुस्सा हो रही थी !

"चंपिया ! जरा घैलसार में खड़ी होकर भवानी फुआ को आवाज दे तो ।"

"ऐ फु-आ-आ ! सुनती हो फुआ-आ ! मैया बुला रही है ।"

फुआ ने कोई जवाब सीधे नहीं दिया, किंतु उसकी बड़बड़ाहट स्पष्ट सुनाई पड़ी, "हाँ, अब फुआ को क्यों गुहारती है ? सारे टोले में बस एक फुआ ही तो बिना नाथ-पगहियावाली है ।"

"अरी फुआ !" बिरजू की माँ ने हँसकर जवाब दिया, "उस समय बुरा मान गई थी क्या ? नाथ-पगहियावाले को आकर देखो, दोपहर रात में गाड़ी को लेकर आया है । आ जाओ फुआ, मैं मीठी रोटी पकाना नहीं जानती ।"

फुआ खाँसती-खाँसती आई, "इसी से बड़ी-पहर दिन रहते ही पूछ रही थी कि नाच देखने जाएगी क्या ? कहती, तो मैं पहले से ही अपनी अँगीठी यहाँ सुलगा जाती ।"

बिरजू की माँ ने फुआ को अँगीठी दिखला दी और कहा, "घर में अनाज-दाना वगैरह तो कुछ है नहीं । एक बागड़ है और कुछ बरतन-बासन । सो रातभर के लिए यहाँ तंबाकू रख जाती हूँ । अपना हुक्का ले आई हो न फुआ ?"

फुआ को तंबाकू मिल जाए तो रात-भर क्या, पाँच रात बैठकर जाग सकती है । फुआ ने अँधेरे में टटोलकर तंबाकू का अंदाज किया । .....ओ हो ! हाथ खोलकर तंबाकू रखा है बिरजू की माँ ने ! और एक वह है सहुआइन ! राम कहो ! उस रात को अफीम की गोली की तरह मटर-भर तंबाकू रख कर चली गई गुलाब-बाग मेले और कह गई कि डिब्बा-भर तंबाकू है ।

बिरजू की माँ चूल्हा सुलगाने लगी । चंपिया ने शकरकंद को भसलकर गोले बनाए और बिरजू सिर पर कड़ाही औंधाकर अपने बाप को दिखलाने लगा, "मालेटरी टोपी ! सिर पर दस लाठी मारने से भी कुछ नहीं होगा ।"

सभी ठठाकर हँस पड़े । बिरजू की माँ हँसकर बोली, "ताखे पर तीन-चार मोटे शकरकंद हैं, दे दे बिरजू को चंपिया, बेचारा शाम से ही ....."

"बेचारा मत कहो मैया, खूब लजाता है ।" अब चंपिया चहकने लगी, "तुम क्या जानो, कथरी के नीचे मुँह क्यों चल रहा था बाबू साहब का !"

"ही-ही-ही !"

बिरजू के टूटे दूध के दाँतों की फाँक से बोली निकली, "बिलैक-मेंस्टिन में पाँच शकरकंद खा लिए ! हा-हा-हा !"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सभी फिर उठाकर हँस पड़े । बिरजू की माँ ने फुआ का मन रखने के लिए पूछा, "एक कनवाँ गुड़ है । आधा डाल दूँ फुआ ?"

फुआ ने गद्‌गद होकर कहा, "अरी शकरकंद तो खुद मीठा होता है, उतना क्यों डालेगी !"

जब तक दोनों बैल दाना-घास खाकर एक-दूसरे की देह को जीभ से चाटें, बिरजू की माँ तैयार हो गई । चंपिया ने छींट की साड़ी पहनी और बिरजू बटन के अभाव में पैंट पर पटसन की डोरी बाँधने लगा ।

बिरजू की माँ ने आँगन से निकल गाँव की ओर कान लगाकर सुनने की चेष्टा की, "ऊहूँ, इतनी देर तक भला पैदल जानेवाले रुके रहेंगे !"

पूर्णिमा का चाँद सिर पर आ गया है ... बिरजू की माँ ने असली रूपा का मँगटीका पहना है आज, पहली बार । बिरजू के बप्पा को हो क्या गया है, गाड़ी जोतता क्यों नहीं, मुँह की ओर एकटक देख रहा है, मानो नाच की लाल पान की.....

गाड़ी पर बैठते ही बिरजू की माँ की देह में एक अजीब गुदगुदी लगने लगी । उसने बाँस की बल्ली को पकड़कर कहा, "गाड़ी पर अभी बहुत जगह है । जरा दाहिनी सड़क से गाड़ी हाँकना ।"

बैल जब दौड़ने लगे और पहिया चूँ-चूँ करके घरघराने लगा तो बिरजू से नहीं रहा गया, "उड़नजहाज की तरह उड़ाओ बप्पा !"

गाड़ी जंगी के पिछवाड़े पहुँची । बिरजू की माँ ने कहा, "जरा जंगी से पूछो न, उसकी पतोहू नाच देखने चली गई क्या ?

गाड़ी रुकते ही जंगी के झोंपड़े से आती हुई रोने की आवाज स्पष्ट हो गई । बिरजू के बप्पा ने पूछा, "जंगी भाई, काहे कन्ना-रोहट हो रहा है । आँगन में ?"

जंगी घूर ताप रहा था, बोला, 'क्या पूछते हो, जंगी बलरामपुर से लौटा नहीं, पतोहिया नाच देखने कैसे जाए ? आसरा देखते-देखते उधर गाँव की सभी औरतें चली गईं ।"

"अरी टीशनवाली, तो रोती है ?" बिरजू की माँ ने पुकारकर कहा, "आ जा झट से कपड़ा पहनकर । सारी गाड़ी पड़ी है । बेचारी ! ....आ जा जल्दी !"

बगल की झाड़ी से राधे की बेटी सुनरी ने कहा, "काकी, गाड़ी में जगह है ? मैं भी जाऊँगी !"

बाँस की झाड़ी के उस पार लरेना खबास का घर है । उसकी बहू भी नहीं गई है । गिलट की झुनकी कड़ा पहनकर झमकती आ रही है ।

"आ जा । जो बाकी रह गई, सब आ जाए जल्दी !"

जंगी की पतोहू, लरेना की बीवी और राधे की बेटी सुनरी, तीनों गाड़ी के पास आईं । बैल ने पिछला पैर फेंका । बिरजू के बाप ने एक भद्दी गाली दी "साला ! लताड़ मारकर लँगड़ी बनाएगा पतोहू को !"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सभी ठठाकर हँस पड़े । बिरजू के बाप ने घूँघट में झुकी दोनों पतोहुओं को देखा । उसे अपने खेत की झुकी हुई बालियों की याद आ गई ।

जंगी की पतोहू का गौना तीन ही मास पहले हुआ है । गौने की रंगीन साड़ी से कड़वे तेल और लठवा-सिंदूर की गंध आ रही है । बिरजू की माँ को अपने गौने की याद आई । उसने कपड़े की गठरी से तीन मीठी रोटियाँ निकालकर कहा, "खा ले एक-एक कर । सिमराहा के सरकारी कूप में पानी पी लेना ।"

गाड़ी गाँव से बाहर होकर धान के खेतों की बगल से जाने लगी । चाँदनी कार्तिक की ! ...खेतों से धान के झरते फूलों की गंध आती है । बाँस की झाड़ी में कहीं दुद्धी की लता फूली है । जंगी की पतोहू ने एक बीड़ी सुलगा कर बिरजू की माँ की ओर बढ़ाई । बिरजू की माँ को अचानक याद आई चाँपिया, सुनरी, लरेना की बीवी और जंगी की पतोहू, ये चारों ही तो गाँव में वैसकोप का गीत गाना जानती हैं । खूब !

गाड़ी की लीक धनखेतों के बीच होकर गई है । चारों ओर गौने की साड़ी की खसमसाहट-जैसी आवाज होती है ...बिरजू की माँ के माथे में मँगटीक्के पर चाँदनी छिटकती है ।

"अच्छा, अब एक बैसकोप का गीत गा तो चाँपिया । डरती है काहे ? जहाँ भूल जाएगी, बगल में तो मास्टरनी बैठी ही है !"

दोनों पतोहुओं ने तो नहीं, किंतु चाँपिया और सुनरी ने खखारकर गला साफ किया ।

बिरजू के बाप ने बैलों को ललकारा, "चल भैया, और जरा जोर से । .....गा रे चाँपिया, नहीं तो बैलों को धीरे-धीरे चलने को कहूँगा ।"

जंगी की पतोहू ने चाँपिया के कान के पास घूँघट ले जाकर कुछ कहा और चाँपिया ने धीमे से शुरू किया -चंदा की चाँदनी ....."

बिरजू को गोद में लेकर बैठी उसकी माँ की इच्छा हुई कि वह भी साथ-साथ गीत गाए । बिरजू की माँ ने जंगी की पतोहू की ओर देखा, धीरे-धीरे गुनगुना रही है वह भी । कितनी प्यारी पतोहू है ! गौने की साड़ी से एक खास किस्म की गंध निकलती है । ठीक ही तो कहा है उसने ! बिरजू की माँ बेगम है, लाल पान की बेगम ! यह तो कोई बुरी बात नहीं । हाँ, वह सचमुच लाल पान की बेगम है !

बिरजू की माँ ने अपनी नाक पर दोनों आँखों को केंद्रित करने की चेष्टा करके अपने रूप की झाँकी ली, लाल साड़ी की झिलमिल किनारी, मँगटीक्का पर चाँद । ...बिरजू की माँ के मन में अब और कोई लालसा नहीं । उसे नींद आ रही है ।

◆ ◆ ◆

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

पाठ के साथ

1. बिरजू की माँ को लाल पान की बेगम क्यों कहा गया है ?
2. "नवान्न के पहले ही नया धान जुठा दिया ।" इस कथन से बिरजू की माँ का कौन-सा मनोभाव प्रकट हो रहा है ?
3. बिरजू की माँ बैठी मन-ही-मन क्यों कुढ़ रही थी ?
4. 'लाल पान की बेगम' शीर्षक कहानी की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
5. सप्रसंग व्याख्या करें –

   (क) "चार मन पाट (जूट) का पैसा क्या हुआ है, धरती पर पाँव ही नहीं पड़ते ।"
6. "दस साल की चंपिया जानती है कि शकरकंद छीलते समय कम-से-कम बारह बार माँ उसे बाल पकड़कर झकझोरेगी, छोटी-छोटी खोट निकालकर गालियाँ देगी ।" इस कथन से चंपिया के प्रति माँ की किस मनोभावना की अभिव्यक्ति होती है ?
7. "बिरजू की माँ का भाग ही खराब है, जो ऐसा गोबर गनेश घरवाला उसे मिला । कौन-सा सौख-मौज दिया है उसके मर्द ने । कोल्हू के बैल की तरह खटा कर सारी उम्र काट दी इसके यहाँ ।" प्रस्तुत कथन से बिरजू की माँ और पिता के संबंधों में कड़वाहट दिखाई पड़ती है । कड़वाहट स्थाई है या अस्थाई ? इसके कारणों पर विचार कीजिए ।
8. गाँव की गरीबी तथा आपसी क्रोध और ईर्ष्या के बीच भी वहाँ एक प्राकृतिक प्रसन्नता निवास करती है । पाठ के आधार पर बताएँ ।
9. कहानी में बिरजू और चंपिया की चंचलता और बालमन के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करें ।
10. 'लाल पान की बेगम' कहानी का सारांश लिखें ।
11. कहानी के पात्रों का परिचय अपने शब्दों में दीजिए ।
12. रेणु वातावरण और परिस्थिति का सम्मोहक और जीवंत चित्रण करने में निपुण हैं । इस दृष्टि से रेणु की विशेषताएँ अपने शब्दों में बताइए ।

पाठ के आस-पास

1. फणीश्वरनाथ रेणु ने ग्रामीण परिवेश पर कई कहानियाँ लिखी हैं । उनकी कहानियों का 'ठुमरी' नामक संग्रह उपलब्ध कर पढ़ें एवं वर्ग में उस पर चर्चा करें ।
2. ग्रामीण समाज में गरीबी एक प्रमुख समस्या है । इस पर एक निबंध लिखें ।
3. आंचलिकता क्या है ? इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. रेणु की किस कहानी पर फिल्म का निर्माण किया गया ? उस कहानी को उपलब्ध कर पढ़ें एवं उसकी चर्चा शिक्षक से करें ।
5. रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक संक्षिप्त लेख लिखें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें –
   (i) आगे नाथ न पीछे पगहिया ।
   (ii) कथरी के नीचे दुशाले का सपना ।
   (iii) धरती पर पाँव न पड़ना ।
2. सहुआइन में आइन प्रत्यय लगा हुआ है । आइन प्रत्यय से पाँच शब्द बनाएँ –
3. निम्नलिखित शब्दों का प्रत्यय बताएँ –

   पड़ोसिन, पगहिया, मुरलिया, खिलखिलाहट
4. निम्नलिखित शब्दों के समास निर्धारित करें –

   रसोई-पानी, पँचकौड़ी, मान-मनौती, दीया-बाती, बेटी-पतोहू
5. पाठ से देशज शब्दों को छाँटकर लिखें ।

शब्द निधि :

बागड़	:	बकरे की एक खास नस्ल जो कद-काठी में सामान्य बकरे से बड़ी होती है	लालसा	:	इच्छा
			कनवाँ	:	छँटाक (पुरानी माप)
			ढिबरी	:	दीया
मड़ैया	:	फूस से बनी कुटिया	दुशाला	:	एक विशेष किस्म की कश्मीरी ऊनी चादर
मनसूबा	:	इरादा			
मनौती	:	मनोकामना की पूर्ति के लिए किया गया संकल्प	झिड़की	:	डाँट
			खुशामद	:	चापलूसी
किरकिरी	:	फजीहत	हौले	:	धीरे-धीरे
पतुरिया	:	नाचनेवाली स्त्री	लुक्कड़	:	लफंगा
डाह	:	ईर्ष्या	ताखे	:	दीवार में चीजें रखने के लिए बना ताख, आला
मन मसोसना	:	मानसिक विवशता			
कल्ला	:	जबड़ा	मूड़ी	:	माथा
लताड़	:	दुलत्ती मारना, डाँट-डपट करना	राकस	:	राक्षस
			ओजन	:	वजन
झाँकी	:	दृश्य	टीशन	:	स्टेशन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, सन् 1912 ई० को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिला के मीरनपुर गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। पारिवारिक कारणों से इन्हें शिक्षा के लिए हिसार (हरियाणा) जाना पड़ा। वहीं पर एक हाई स्कूल में इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। विष्णु प्रभाकर के जीवन पर आर्य समाज तथा महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन का गहरा प्रभाव है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में इन्होंने अनेक नये प्रयोग किए हैं - कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, स्केच और रिपोर्ताज में इनकी रचनाएँ हमें सर्वथा नई भावभूमि से परिचित कराती हैं। निःसंदेह यह भावभूमि यथार्थ, आदर्श और स्वाभाविकता की टकराहट से उपजी हुई लगती है। कहानियों में कोमल क्षणों की मार्मिक संवेदनाएँ मिलती हैं, इनकी कहानियाँ रोचक होने के साथ-साथ संवेदनशील भी हैं।

विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में प्रारंभ से ही स्वदेशप्रेम, राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार का स्वर प्रमुख रहा है। इसके कारण इन्हें ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन भी बनना पड़ा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रभाकर जी आकाशवाणी, दिल्ली में रेडियो रूपक लिखने का कार्य करने लगे। रेडियो रूपकों के अतिरिक्त इन्होंने रंगमंचीय नाटक भी लिखे हैं।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - 'ढलती रात', 'स्वजयी' (उपन्यास), 'संघर्ष के बाद' (कहानी संग्रह), 'नव प्रभात', 'डॉक्टर' (नाटक), 'प्रकाश और परछाइयाँ', 'बारह एकांकी', 'अशोक' (एकांकी संग्रह), 'जाने अनजाने' (संस्मरण और रेखाचित्र) 'आवारा मसीहा' (शरतचंद्र की जीवनी)। 'आवारा मसीहा' इनकी सर्वाधिक चर्चित कृति रही है।

'अष्टावक्र' शारीरिक रूप से कमजोर एक ऐसा चरित्र है जिसका जीवन-संघर्ष हिला देनेवाला है। दिक्कत यह है कि तथाकथित सभ्य समाज के पास इन जैसों के लिए कोई जगह नहीं है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अष्टावक्र

खजांचियों की विशाल अट्टालिका को जानेवाले मार्ग पर सौभाग्य के चिरसंगी दुर्भाग्य की तरह अनेक छोटी-छोटी, अंधेरी और बदबूदार कोठरियाँ बनी हुई थीं। उन्हीं में से एक में विचित्र व्यक्ति रहता था जिसे संस्कृत पढ़े-लिखे लोग अष्टावक्र कहा करते थे। उसके पैर कवि की नायिका की तरह बल खाते थे और उसका शरीर हिंडोले की तरह झूलता था। बोलने में वह साधारण आदमी के अनुपात से तिगुना समय लेता। वर्ण श्याम, नयन निरीह, शरीर एक शाश्वत खाज से पूर्ण, मुख लंबा और वक्र, वस्त्र कीट से चिकटे, यह था उसका व्यक्तित्व और इसमें यदि कुछ कमी रह जाती तो उसे शीनके शडाके पूरा कर देते। इस आखिरी बात के लिए उसकी माँ अक्सर उसकी लानत-मलामत किया करती थी।

उसकी माँ, जी हाँ, उसकी माँ थी और केवल माँ ही थी। सुना है कभी बाप भी थे पर अष्टावक्र उन्हें याद रख सके इतना परिचय होने से पूर्व ही वे चल बसे। इन बातों को आज तीस वर्ष बीत गए थे। तब से अकेली माँ ही उसका लालन-पालन किया करती आ रही है। खजांचियों के वंश के नौनिहालों की राय में उसकी माँ का स्नेह इतना तीव्र था कि उसने अष्टावक्र की बुद्धि की बाढ़ मार दी थी और उसका भोलापन मूर्खता की सीमारेखा को पार कर गया था।

यद्यपि असमय से आ जाने वाले बुढ़ापे के कारण उसकी माँ का शरीर प्रायः शिथिल हो चुका था, वह कुछ लंगड़ाकर भी चलती थी और निरंतर अभावों से जूझते-जूझते चिड़चिड़ापन भी उसका चिरसंगी बन चुका था, पर तो भी बेटे से मुक्ति पाने की बात उसके मन में कभी नहीं उठी। वह विधवा थी इसलिए उसके वस्त्र काले-किष्ट ही नहीं थे, फटे हुए भी थे जिनमें गरीबी ने पैबंद लगाने के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा था। उसके सिर के बाल सदा उलझे रहते थे। कभी-कभी खुजाने से तंग आकर जब वह अष्टावक्र को जूँ दिखाने के लिए बैठाती तो अच्छा-खासा मनोरंजक दृश्य बन जाता था। माँ उँगली से स्थान बताकर कहती, 'यहाँ देख'।

अष्टावक्र दार्शनिक की-सी गंभीरता से इधर-उधर देखता और जवाब देता, 'माँ। यहाँ तो बाल हैं, तोड़ दूँ ?

तब माँ माथा ठोक लेती और अष्टावक्र महाराज अपने वक्रमुख को और भी वक्र करके या तो कुएँ की जगत पर जा बैठते या फिर वहीं बैठकर आने-जाने वालों को ताकने लगते। उस समय उसे देखकर जड़ भरत या मलूकदास की याद आ जाना स्वाभाविक था। वास्तव में वह उसी अवतार-परंपरा का रत्न था। नींद खुलते ही वह पैरों को नीचे लटकाकर और हाथों को गोदी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

में रखकर कुछ इस प्रकार बैठ जाता था, जिस प्रकार एक शिशु जननी के अंक में लेट जाता है। माँ आकर उसे नित्यकर्म की याद दिलाती। और जब कई बार के कहने पर भी वह न उठता तो तंग आकर उसका मुँह ऐसे रगड़-रगड़ धोती जैसे वह कोई अबोध शिशु हो। उसके बाद उसे कलेउ मिलता था जिसमें प्रायः रात की बची हुई रोटी या खोमचे की बची हुई चाट रहती थी।

जी हाँ! वह खोमचा लगाता था। अक्सर कचालू की चाट, मूंग की दाल की पकौड़ियाँ, दही के आलू और पानी के बतासे – इन सबको एक काले से लोहे के थाल में सजाकर वह बेचा करता था। उसके पास थाल रखने के लिए एक मूढ़ी और मक्खी उड़ाने के लिए एक छड़ी भी रहती थी। मूढ़ी को वह बगल में दबाता, थाल को बाएँ हाथ पर रखता और छड़ी को दाहिने हाथ में लेता, फिर गली-गली पुकारता फिरता, 'चाट लो चाट, आलू की चाट, पानी के बतासे!'

यह बात नहीं है कि कोई उसकी चाट नहीं खरीदता था। इसके विपरीत जब देखो तब उसके आस-पास एक भीड़ लगी रहती थी। बच्चे ही नहीं, किशोर और कुमार तक उसके रूप और वाणी के प्रेमी थे। ठीक समय पर वे हजार काम छोड़कर दौड़े आते और उसके स्वर में स्वर मिलाकर पुकार उठते, 'पकौड़ी बतासा ले, उल्लू की चाट ले.....।' फिर होंठों के भीतर-ही-भीतर हँसकर वे उसे एक पैसा देते और चार पत्ते चाटकर उठते। माँ उसे समझाकर भेजती थी, 'देख बेटा, पैसे के चार बतासे देना, चार पकौड़ी देना और चार चम्मच आलू देना।' ऐसी अवस्था में यदि वह अपने ग्राहकों को चार पत्ते दे देता था तो हमारे उदार कानून की दृष्टि में वह कोई संगीन अपराध नहीं करता था। चार की संख्या उसके स्मृति-पटल पर पत्थर की रेखा की तरह अंकित हो गई थी।

संध्या को उसके लौटने के समय माँ उसकी बाट जोहती बैठी रहती। उस पर निगाह पड़ते ही वह ललककर उठती। पहले उसका थाल सँभालती। फिर पानी भरे लोटे में से पैसे निकालकर गिनती। उस समय माथा ठोक लेना उसका नित्य का धर्म बन गया था। लगभग डेढ़ रुपये की बिक्री का सामान ले जाकर वह सदा दस-बारह आने के पैसे लेकर लौटता था। माँ की डाँट-डपट या सिखावन उसके इस अटल नियम को कभी भंग नहीं कर सकी। वैसे कभी-कभी उसकी बुद्धि भी जाग्रत हो उठती थी। उदाहरण के लिए एक दिन उसने माँ से कहा, 'माँ! चाट तू बेचा कर। मुझे लड़के मारते हैं।'

सुनकर माँ ने अपने लाल को कुछ इस प्रकार निहारा कि उसके शुष्क नयन सजल हो उठे। उसे कुछ याद आ गया। शैशव और यौवन का कुछ, जो स्वयं तो मधुर होता है पर उसकी याद मोटर के धुएँ की तरह काली, कड़वी और दुर्गंधपूर्ण होती है। यह बात नहीं कि माँ को अपनी चाट बेचने की बात सुनकर दुख हुआ था। उसी ने तो बेटे को साथ ले जाकर चाट बेचना सिखाया था पर, जब कोई सीख न सके तो क्या करे? क्यों ऐसे व्यक्ति पैदा होते हैं? क्यों वे जीते रहते हैं? क्यों भगवान उनके अपमान को चुपचाप देखता रहता है.....

बेटे ने कहा, 'माँ! भूख लगी है'।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

माँ ने नहीं सुना ।

'माँ भूख....।' बेटे ने आग्रह से दोहराया ।

माँ चिनचिना पड़ी, 'तो मुझे खा ले ।'

बेटा कुछ समझा नहीं ।

'खा क्यों नहीं लेता ! पाप कट जाएगा । नाशपीटे ने नाक में दम कर रखा है । न जीने देवे है, न मरने देवे है । कब तक बैठी रहूँगी तेरी खातिर ? अमर पट्टा किसने लिखाया है । कोई पानी की बूँद भी नहीं डालेगा, पर तू समझे तब न.....'

वह बोलने लगी तो बोलती ही रही, पर सुनने के लिए अष्टावक्र वहाँ बैठा नहीं रहा । वह आसन-पाटी लेकर कुएँ की जगत पर जा लेटा । तब तक लेटा रहा जब तक बहुत रात बीत जाने पर, माँ खाना लेकर न आ गई । बिना कुछ बोले वह चुपचाप टुकड़े तोड़-तोड़ कर उसके मुँह में न देने लगी । खाते हुए बेटे ने एक बार केवल 'माँ' इतना ही कहा, पर वह बोलने की कठिनता के कारण इतना लंबा हो गया कि माँ को लगा मानो अखिल ब्रह्मांड उसे माँ कहकर पुकार रहा है ।

बेटे को खिलाकर उसने स्वयं खाया । फिर वहीं उसके पास जगत पर जा लेटी । सारी गरमी वे बिना ओढ़े, बिना बिछाए वहीं सोया करते थे । जाड़ों में कोठरी के किवाड़ बंद करके, चूल्हे की गरम राख और एक-दूसरे के शरीर से वे काफी गरमी ले लेते थे । परंतु फिर भी इस बार एक दिन अष्टावक्र को बुखार चढ़ ही आया । उस दिन खजांची वंश के नौनिहालों ने देखा, अष्टावक्र चिथड़ों में लिपटा, चूल्हे के पास लेटा हुआ छटपटा रहा है और उसकी माँ वहीं कोठरी के आगे मूढ़ी पर लोहे के उस थाल को रखे, कमची से मक्खी उड़ाती हुई चाट बेचने को बैठी है । वे स्थितप्रज्ञ अनासक्त बंधु जब आगे बढ़ गए तब अष्टावक्र ने सदा की तरह प्लुत स्वर में पुकारा, 'माँ !'

'क्या है ?' माँ ने कड़वे स्वर में पूछा ।

'पानी ।'

वह उठी । बेटे को पानी पिलाया और लौट चली पर, तभी अष्टावक्र ने उसकी धोती का छोर पकड़ लिया । वह क्रुद्ध हो उठी । बोली, 'छोड़ मुझे । एक पैसे की चाट नहीं बिकी । कल को क्या मुझे खाएगा !'

बेटे ने उसी स्वर में कहा, 'माँ....'

पैर ठिठक गए । वह मुड़ी और नीचे बैठकर उसका सिर दबाने लगी । बड़बड़ाने लगी, 'तेरी दवा लानी है । डॉक्टर पौने चार आने माँग लेगा । उतने पैसे तो आने दे ।'

फिर क्षणों ने करवट ली । पैसे आए, दवा आई, अष्टावक्र का ज्वर जाता रहा । परंतु उसके कुछ दिन बाद जब उसकी माँ को ज्वर चढ़ आया तो वह संकट में पड़ गया ।

लेटे-लेटे माँ ने आज्ञा दी, 'बेसन उठा ला ।'

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

'यह....'

'नहीं रे, यह तो राख है । वह उधर...

वह बेसन ले आया तो माँ ने लेटे-लेटे उसे पानी में घोला । उसमें आलू डाले । इतने पर वह बुरी तरह हाँफ उठी । धुएँ ने तन-मन को और भी कड़वा कर दिया । उधर तेल अलग छटपटा रहा था । किसी तरह पकौड़ी बनाने की रीति बेटे को समझाकर बोली, 'ले, अब धीरे-धीरे तेल में छोड़ता जा । धीरे-से छोड़ना नहीं तो जल जाएगा ।'

अष्टावक्र ने धीरे-से पर पैर जलने के भय से कुछ ऊँचे से जो मुट्ठी भर आलू बेसन कड़ाही में छोड़े तो तेल सीधा छाती पर आया । तब 'हाय माँ' कहकर वह वहीं लुढ़क गया ।

'क्या हुआ...क्या हुआ', कहती हुई माँ उठ बैठी । फिर तो उसका रोग न जाने कहाँ चला गया । सीधी डॉक्टर के पास पहुँची । सौभाग्य से तेल उछटता हुआ पड़ा था । इसलिए कुछ देर बाद अष्टावक्र उसकी जलन को सह गया और तब तक उसी तीव्र ज्वर में माँ ने उसका थाल तैयार कर दिया । लेकिन जब वह लौटा तो माँ में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उठकर उसका थाल ले लेती ।

अष्टावक्र को यह परिवर्तन अच्छा नहीं लगा । थाल रखकर वह थोड़ी देर विमूढ़-सा बैठा रहा । फिर माँ के पास आया । उसका बदन देखा । हाथ जैसे तवे से छू गया हो, पर इस स्पर्श ने माँ की चेतना को बल दिया । उसने आँख खोलकर बेटे को निहारा और यंत्रवत हाथ फैला दिए । मुँह से निकला, 'पैसे ?'

अष्टावक्र ने लोटे से निकालकर ठंढे-ठंढे पैसे माँ के जलते हुए हाथ पर रख दिए और चिरपरिचित स्वर में पुकारा, 'माँ...'

माँ ने हिम्मत की, पूछा, 'भूख लगी है ?'

बेटे ने दो क्षण रुककर उत्तर दिया, 'माँ, भूख....'

'खा ले ।' इतना ही माँ बोल सकी ।

पर माँ न दे तो बेटा खाए कैसे ? वह इतनी थकी हुई थी कि दवा की बात भी न कह सकी । बस पैसों को मुट्ठी में दबाए संज्ञाहीन-सी पड़ी रही । अष्टावक्र बैठ सका तब तक बैठा रहा । फिर वहीं लेट गया । आज माँ के शरीर से उसे और दिन से अधिक गरमी मिल रही थी । वह उसके पास और पास खिसकता आ रहा था ।

दूसरा दिन और किसी तरह बीत गया । तीसरे दिन माँ ने उठने का प्रयत्न किया पर पूरी शक्ति लगा चुकने के बाद भी वह केवल घिसट सकी । उसने गर्दन उठाकर देखा, चाट का थाल उसी तरह पड़ा है । अष्टावक्र ने कुछ छुआ तक नहीं ।

उसकी जलती हुई आँखों में पानी की बूंदें उतर आईं । उसने अपने काँपते हाथों को उठाकर पास लेटे हुए पुत्र के मुँह को सहलाया । पुत्र की चेतना जागी, सदा की भाँति उसने पुकारा, 'माँ....'

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

माँ की जैसे हिचकी बँधने को हुई पर उतनी शक्ति भी अब उसमें नहीं थी । वह रोने के प्रयत्न में एक ओर को लुढ़क गई । तब कुछ क्षण के लिए एक बार फिर अष्टावक्र की बुद्धि जाग्रत हुई । वह उठ बैठा और फिर अपनी समझ में बड़ी तेजी से बाहर निकला चला गया । उसके पीछे एक बहुत छोटे क्षण के लिए माँ की संज्ञा लौटी, हाथ से टटोलकर बेटे को देखा पर वह स्थान अब रिक्त था । तब यंत्रवत् उसका हाथ तेजी से घूमने लगा और हाथ के साथ हृदय भी । वह तेज हुआ, और तेज हुआ, और तेज और फिर सहसा बंद हो गया ।

बहुत देर बाद जब अष्टावक्र की अपर्याप्त पर याचना भरी भाषा की उपेक्षा न कर सकने के कारण एक डॉक्टर महोदय वहाँ आए तो माँ उस नरक से मुक्त हो चुकी थी ।

उसके बाद खजांचियों के राजभवन को जाने वाले उस मार्ग पर एक बार फिर नया परिवर्तन दिखाई दिया । कुलफी बनाने वाला बूढ़ा उस कोठरी में आ बसा । पर उसी संध्या को वह क्या देखता है कि कहीं से आकर अष्टावक्र अपने सामान सहित कुएँ की जगत पर गुमसुम बैठा है और उसका वक्र मुख किसी अज्ञात गंभीरता से और भी वक्र हो उठा है । इससे पूर्व वह उससे कुछ पूछे, बालकों के एक दल ने उसे देख लिया । वे हर्ष से चिल्ला उठे, 'बतासा ले । उल्लू की चाट ले ।'

पर जब उन्हें कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला तो उनका हर्ष मुरझाने लगा । एक बालक ने आगे बढ़कर पूछा, 'तुम अब चाट नहीं बेचोगे ?'

दूसरी बालिका अत्यंत गंभीर हुई, 'इसकी माँ मर गई है ।'

तीसरा लड़का शरारती था, चिल्लाया, 'पागल है ।'

अब तक बूढ़ा कुलफीवाला पास आ गया था । बालक भाग गए । उसने अष्टावक्र से पूछा, 'क्यों भाग आए ?'

अष्टावक्र ने एक क्षण मानो कुछ सोचा, फिर प्लुप्त-स्वर में कहा, 'माँ.....।'

'माँ नहीं आएगी, पगले !'

'माँ कहाँ गई ?'

'मर गई ।'

तब अष्टावक्र ने उस बूढ़े कुलफी वाले किराएदार को ऐसी विचित्र दृष्टि से देखा मानो कहता हो—तुम क्या कहते हो, जी । मर गई है तो इसका यह मतलब नहीं है कि वह लौटेगी ही नहीं । उसकी इस चुनौती को अस्वीकार करने में असमर्थ बूढ़े कुलफीवाले ने गरदन मोड़ ली । मन कुछ गीला-गीला हो आया । सुना अष्टावक्र कह रहा था, 'माँ आएगी । चाट बनाएगी ।'

उस रात वहीं नीलांबर के नीचे उस जगत पर सोते-सोते कई बार बड़बड़ाया, 'माँ... भूख....'

सबेरे बड़े खजांची ने एक बार फिर दया करके उसे अपने बाग में भेज दिया । पशुओं की बैरक के पास काफी खुली जगह पड़ी थी, पर उसे वह अच्छी नहीं लगी । खजांचिन माँ के

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कपड़े भी उसने अस्वीकार कर दिए । रोटी देखकर उसे माँ की याद आ गई । बोला, 'माँ चाट बनाएगी । मैं बेचूँगा, फिर खाऊँगा ।'

और उसने नहीं खाया ।

और उसने कुएँ की जगत को नहीं छोड़ा ।

पर एक दिन जगत पर बैठे-बैठे उसकी बुद्धि एक बार फिर जाग्रत हो उठी । वह चाटवाला खाली थाल लेकर अपने पुराने परिचित मार्गों पर घूमने लगा । वे ही मकान, वही सड़क और वही मानव समुदाय और वही बोलियाँ.....

'चाटवाला आया है ।'

'कौन अष्टावक्र ?'

'हाँ ।'

'पर इसके पास चाट नहीं है ।'

'बेचारे की माँ मर गई ।'

एक बार, दो बार, दस बार, बार-बार उसने सुना, 'बेचारे की माँ मर गई है ।' और इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी जाग्रत बुद्धि सोचने लगी—माँ मर गई है । माँ मर गई है । माँ मर गई है तो वह अब नहीं आएगी । हाँ, वह अब नहीं आएगी । आती ही नहीं ।

जिस समय उसकी बुद्धि में यह तर्क जन्म ले रहा था उसी समय एक वृद्धा ने अपनी वाणी में स्नेह भरकर उसे रोटी खाने के लिए कहा । उसने कई क्षण उस वृद्धा की ओर देखा, देखता रहा, फिर न जाने क्या हुआ वह वहीं बैठ गया ।

उसी रात को कुल्फी वाले ने सुना, अष्टावक्र बार-बार माँ-माँ पुकार रहा है । उस पुकार में सदा की तरह सरल विश्वास नहीं है, एक कराहट है । कुल्फीवाले ने करवट बदल ली, पर इस ओर कर्ण-रंध्र में वह कराहट और भी कसक उठी । वह लेट न सका । धीरे-धीरे न उठा और झुंझलाता हुआ वहाँ आया जहाँ अष्टावक्र छटपटा रहा था । देखकर जाना उसके पेट में तीव्र दर्द है । यहाँ तक कि देखते-देखते उसे दस्त शुरू हो गए । अब तो कुलफीवाला घबरा उठा । दौड़ा हुआ बड़े खजांची के पास पहुँचा । वे पहले तो चिनचिनाए, फिर अस्पताल को फोन किया । कुछ देर बाद गाड़ी आई और अष्टावक्र को लाद कर ले गई । उसके दो घंटे बाद कुलफीवाले ने फिर आइसोलेशन वार्ड में उसे दूर से देखा । वह अकेला था । उसकी कराहट बढ़ती जा रही थी । प्राण खिंच रहे थे । वह लगभग मूर्च्छित था । कभी-कभी उसकी जीभ होंठों से संपर्क स्थापित करने की चेष्टा करती थी । शायद वह प्यासा था ।

डॉक्टर आया, देखकर बोला, 'बस, अब समाप्त होने वाला है ।'

नर्स ने कुलफीवाले से पूछा, 'तुम्हारा मरीज है ?'

कुलफीवाले ने गरदन हिलाकर जवाब दिया, 'जी नहीं । इसके कोई नहीं है ।'

उसी क्षण अष्टावक्र की बुद्धि जैसे जाग्रत हुई हो । धीमे पर गंभीर स्वर में पुकारा, 'माँ.....

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दोनों एक साथ उसके पास लपके । कुलफीवाले ने समझा, शायद संज्ञा लौट रही है पर नर्स जानती थी, वह मृत्यु की चेतावनी है ।

अष्टावक्र ने वाक्य पूरा किया, 'माँ, अब नहीं खाऊँगा...अब नहीं....'

और फिर उसकी चेतना मौन हो गई, सदा के लिए मौन ।

नर्स ने शीघ्रता से उसका मुँह ढँककर यंत्रवत भंगी को पुकारा, 'जमादार ! स्ट्रेचर लाओ ।'

जमादार ने दूर से सधा हुआ जवाब दिया, 'अभी लाया मिस साहब !' लौटते समय कुलफीवाला परम शांत था । यद्यपि उसके मन में करुणा का उद्रेक हुआ था तो भी उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया जिसने अष्टावक्र को अपने पास बुलाकर उन दोनों को सुख की नींद सोने का अवसर दिया ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. इस रेखाचित्र के प्रधान पात्र को लेखक ने अष्टावक्र क्यों कहा है ?
2. कोठरियाँ कहाँ बनी हुई थीं ?
3. अष्टावक्र कहाँ रहता था ?
4. अष्टावक्र के पिता कब चल बसे थे ?
5. चिड़चिड़ापन अष्टावक्र की माँ का चिरसंगी क्यों बन गया था ?
6. अष्टावक्र क्या-क्या बेचा करता था ?
7. चार की संख्या अष्टावक्र के स्मृति-पटल पर पत्थर की रेखा की तरह अंकित क्यों हो गई थी ?
8. माँ माथा क्यों ठोका करती थी ?
9. गर्मी के दिनों में माँ-बेटे कहाँ सोया करते थे ?
10. अष्टावक्र 'हाय माँ' कहकर वहीं क्यों लुढ़क गया ?
11. माँ के शुष्क नयन सजल क्यों हो उठे ?
12. अष्टावक्र विमूढ़-सा क्यों बैठा रहा ?
13. कुलफीवाले ने ईश्वर को धन्यवाद क्यों दिया ?
14. इस पाठ का सबसे मार्मिक प्रसंग कौन है और क्यों ?
15. इस रेखाचित्र का सारांश लिखें ।
16. माँ की मृत्यु के पश्चात् अष्टावक्र की मानसिक स्थिति का वर्णन करें ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पाठ के आस-पास

1. अपने आस-पास पड़ोस में ऐसे चरित्र की खोज करें जो अष्टावक्र से मिलता-जुलता हो। उसकी गरीबी और संघर्ष का चित्रण करते हुए एक रेखाचित्र खींचिए।
2. अष्टावक्र के नाम से एक ऋषिपुत्र हो चुके हैं जिनका बौद्धिक और आध्यात्मिक संपर्क राजर्षि जनक से हुआ था। उन्होंने जनक को जो उपदेश दिए उसे अष्टावक्र गीता या महागीता कहते हैं। इसके संबंध में विस्तृत विवरण अपने शिक्षक या अन्य विज्ञजनों से मालूम करें।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक रूप लिखें –

   विशाल, बदबूदार, सौभाग्य, शाश्वत, मूर्ख, विधवा

2. निम्नलिखित शब्दों के वचन परिवर्तित करें –

   बेटे, कपड़े, बूँदें, माता, लता, कोठरियाँ

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –

   सौभाग्य, बुद्धि, वस्त्र, उँगली, कुआँ, गोद, दही, पानी, पकौड़ी, संध्या

4. उसने कहा कि वह नहीं आएगा। पाठ में आए इस तरह के मिश्र वाक्यों का चुनाव करें।
5. पाठ में आए पाँच अव्यय पदों को चुनें।
6. 'पत्थर की रेखा' और 'माथा ठोंकना' मुहावरे का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें।

शब्द निधि :

अट्टालिका	:	ऊँचा बहुमंजिला भवन	स्थितप्रज्ञ	:	स्थिर मति, जिसकी बुद्धि स्थिर हो चुकी है
चिरसंगी	:	लंबे समय तक साथ रहनेवाला			
शाश्वत	:	चिरंतन, स्थाई	अनासक्त	:	शांत, आसक्ति से मुक्त
लानत-मलामत	:	दुर्दशा करना	यंत्रवत्	:	मशीन की तरह
पैबंद	:	थिगली, जोड़	संज्ञाहीन	:	अचेत
वक्र	:	टेढ़ा	गुमसुम	:	चुप-चाप
खोमचा	:	बाँस की खपचियों से बनी वस्तु जिसमें पकौड़े आदि बेचे जाते हैं।	प्लुत स्वर	:	लंबा खींचा हुआ स्वर
			कसक	:	अफसोस, पछतावा, पीड़ा
			आइसोलेशन वार्ड	:	वह कक्ष (वार्ड) जिसमें संक्रामक रोगी को अकेला रखा जाता है।
स्मृति	:	याद, स्मरण			
सजल	:	भीगा, आर्द्र, भावुक			

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अमृतलाल नागर

अमृतलाल नागर का जन्म आगरा जिला के गोकुलपुरा में 17 अगस्त 1916 को हुआ। गोकुलपुरा उनका ननिहाल था। वे मूलतः गुजराती थे। उनके पितामह पंडित शिवराम नागर 1895 ई० में लखनऊवासी हो गए थे। जब नागर जी 19 वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया। अर्थोपार्जन की विवशता के कारण उनकी विधिवत शिक्षा हाई स्कूल तक ही हुई, किंतु निरंतर स्वाध्याय द्वारा साहित्य, इतिहास, पुराण, पुरातत्व, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों पर तथा हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, बाँग्ला आदि भाषाओं पर अधिकार हुआ। एक छोटी-सी नौकरी के बाद कुछ समय तक मुक्त लेखन एवं हास्यरस के प्रसिद्ध पत्र 'चकल्लस' के संपादन के अनंतर 1940 से 1947 तक कोल्हापुर, मुंबई एवं चेन्नई के फिल्म क्षेत्र में लेखन कार्य किया। 1953 से 1956 तक वे आकाशवाणी, लखनऊ में ड्रामा प्रोड्यूसर के पद पर रहे। तदुपरांत वे स्वतंत्र लेखन करते रहे और हिंदी साहित्य में अपनी स्थाई पहचान बनाई।

हिंदी साहित्य में नागर जी की पहचान एक श्रेष्ठ कथाकार के रूप में तो है ही, साथ ही नाटक, रिपोर्ताज, निबंध, संस्मरण, अनुवाद, बाल साहित्य आदि के क्षेत्र में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं :- **उपन्यास** - 'महाकाल', 'सेठ बाँकेलाल', 'बूँद और समुद्र', 'सुहाग के नूपुर', 'अमृत और विष', 'मानस का हंस' आदि। **कहानी एवं रेखाचित्र** - 'वाटिका', 'अवशेष', 'नवाबी मसनद', 'तुलाराम शास्त्री', 'आदमी नहीं, नहीं', 'एक दिल हजार दास्ताँ', 'पाचवाँ दस्ता और सात अन्य कहानियाँ' आदि। **रिपोर्ताज एवं संस्मरण** - 'गदर के फूल', 'ये कोठेवालियाँ' आदि। **अनुवाद** - 'बिसाती', 'प्रेम की प्यास', 'आँखों देखा गदर' आदि। **निबंध** - 'फिल्म क्षेत्रे रंग क्षेत्रे'। **बाल साहित्य** - 'नटखट चाची', 'निंदिया आजा', 'बजरंगी नौरंगी', 'बाल महाभारत' आदि। नागर जी को 'बूँद और समुद्र' पर काशी नागरी प्रचारिणी सभा का बटुक प्रसाद पुरस्कार, 'सुहाग के नूपुर' पर उत्तरप्रदेश शासन का प्रेमचंद पुरस्कार, 'अमृत और विष' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार मिला।

नागर जी किसी दृष्टि या वाद को जस का तस नहीं लेते। अपने व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों की कसौटी पर विचारों को कसते हैं। उनकी कसौटी मूलतः भारतीय जन की कसौटी है। अंधश्रद्धा को काटने के लिए वे तर्कों का प्रयोग अवश्य करते हैं, किंतु तर्कों के कारण अनुभवों को नहीं झुठलाते। नागर जी किस्सागोई में माहिर हैं। उनकी जिंदादिली और विनोदवृत्ति उनकी कृतियों को कभी विषादपूर्ण नहीं बनने देती।

प्रस्तुत निबंध 'भारतीय चित्रपट : मूक से संवाक् फिल्मों तक' उनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'फिल्म क्षेत्रे-रंग क्षेत्रे' से लिया गया है। इस निबंध में नागर जी ने हिंदी सिनेमा के मूक से सवाक् होने तक की यात्रा को दिलचस्प और विश्वसनीय तरीके से पाठकों के सामने रखा है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भारतीय चित्रपट : मूक फिल्मों से सवाक् फिल्मों तक

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों ने दुनिया को ऐसे-ऐसे करिश्मे दिखलाए कि लोग बस दाँतों तले उँगली दबा-दबा के ही रह गए । आँखें अचंभे से फट-फट पड़ीं । गपोड़ियों की गप्पों का बाजार ठप पड़ गया क्योंकि वे लोग जो झूठ बयान करते थे वह देर सबेर साइंस का करिश्मा बनकर सच साबित हो जाता था । गैस की रोशनी, बिजली का चमत्कार, टेलीग्राम, टेलीफोन के जादू, रेल, मोटर वगैरह-वगैरह जो पहले किसी ने देखे सुने तक न थे, जिंदगी की असलियत बनकर हमारे सामने आ गए थे । सिनेमा का आविष्कार भी उन्नीसवीं सदी के बीतते न बीतते जादू बनकर जमाने के लिए सिर पर चढ़कर बोलने लगा । 6 जुलाई सन् 1896 का दिन हिंदुस्तान और खासकर बंबई के लिए एक अनोखा दिन था जब पहली बार भारत में सिनेमा दिखलाया गया । अखबारों में विज्ञापन निकला कि 'जिंदा तिलस्मात् देखिए फोटुएँ आपको चलती-फिरती-दौड़ती दिखलाई पड़ेंगी । टिकट एक रुपिया ।' इस विज्ञापन ने बंबई की जनता में तहलका मचा दिया । बंबई में आज जहाँ प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम की इमारत और उसके पास ही चौराहे पर काले घोड़े की मूर्ति खड़ी है उसके आस ही पास किसी जगह उस जमाने का वाट्सन होटल था । वहीं पर भारत का पहला सिने-प्रदर्शन हुआ । फ्रांस के ल्युमीयेर ब्रदर्स के एजेंट उन्नीसवीं सदी के इस जिंदा तिलस्मात को दिखलाने के लिए भारत में लाए थे । फ्रांस में एक साल पहले इस तमाशे का श्रीगणेश हो चुका था । अमेरिका में कुछ ही महीनों पहले इस तमाशे को दिखलाया गया था । लेकिन उस समय सिनेमा आज की तरह किसी कहानी पर आधारित नहीं होता था । छोटी-छोटी तस्वीरें थीं किसी में समुद्र स्नान के दृश्य दिखलाए गए और किसी में कारखाने से छूटते हुए मजदूरों का दृश्य, ऐसे ही जीवन की हल्की-फुल्की झाँकियाँ देखकर लोगबाग बड़े खुश हो जाते थे । उन्हें सचमुच इस बात पर बड़ा ही अचंभा हो जाया करता था कि तस्वीरें भी चलती-फिरतीं और नाचती हैं । उनमें तरह-तरह के करिश्मे दिखलाए जा सकते हैं ।

लेकिन यह तो शुरुआत थी जब बंबई की जनता को फिल्म का चस्का लग गया तब उस दिशा में कामकाज भी शुरू हो गया । दो एक विलायती कंपनियाँ अपने प्रोजेक्टर और कैमरे वहाँ ले आईं और 1897 में पहली बार बंबई की जनता को रुपहले पर्दे पर कुछ भारतीय दृश्य देखने को मिले । बंबई की नारली पूर्णिमा यानी रक्षाबंधन का त्योहार, दिल्ली के लाल किले और अशोक की लाट वगैरह के चंद दृश्यों की झलक के साथ-साथ लखनऊ में इमामबाड़े भी रुपहले पर्दे पर चमके । बंबई के अलावा कलकत्ते में भी मिस्टर स्टीवेंसन नाम के एक अंग्रेज सज्जन ने स्टार

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

थियेटर की स्थापना करके फिल्मी धंधे को बढ़ाना शुरू किया । उस जमाने में इसे वायोस्कोप के नाम से पुकारा जाता था । बंबई, कलकत्ते की इन विदेशी कंपनियों ने भारत के अन्य नगरों में भी चलती-फिरती तस्वीरों के तमाशे दिखाने आरंभ कर दिए थे । ये कंपनियाँ अपने प्रोजेक्टर और फिल्में लेकर विभिन्न नगरों में जातीं और विज्ञापनों के सहारे साइंस के इस नए करिश्मे का प्रदर्शन किया करती थीं ।

भारत में इस नए काम को शुरू करनेवाले पहले व्यक्ति एक सावे दादा थे । दुर्भाग्यवश उनका असली नाम मैं भूल गया हूँ । मैं सन् 1941 में जब स्वर्गीय मास्टर विनायक की एक फिल्म 'संगम' लिखने के लिए कोल्हापुर गया था तब शालिनी स्टूडियोज में उनके दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे मिला था । मझोले कद के गोरे चिट्टे, दुबली-पतली कायावाले सावे दादा को देखकर कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि ये अपने जमाने के बहुत बड़े कैमरामैन और भारतीय फिल्म व्यवसाय के आदि पुरुष रहे होंगे । मुझे तो अब याद नहीं कि सावे दादा कोल्हापुर ही के निवासी थे या बंबई, पुणे के पर बंबइया मार्का हिंदी वे मजे में बोल लेते थे । उन्होंने ल्युमीयेर ब्रदर्स के प्रोजेक्टर, फोटो डेवलप करने की मशीन या मशीनें खरीद कर भारत में इस धंधे का एक तरह से राष्ट्रीयकरण कर लिया था । जहाँ तक मेरी जानकारी है सावे दादा इंग्लैंड जाकर एक कैमरा भी लाए थे और शायद इंग्लैंड और फ्रांस के सिनेमेटोग्राफी कला विशेषज्ञों से भेंट करके उन्होंने भारत में इस उद्योग को स्थापित करने के लिए महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ भी प्राप्त की थीं । शालिनी सिनेटोन के एक कमरे में लकड़ी जड़ी कुर्सी पर टांग पर टांग चढ़ाए बैठे हुए चश्माधारी सावे दादा ने अपनी हल्की-फुल्की नकसुरी आवाज में मुझे उन प्रारंभिक अंग्रेज सिनेमेटोग्राफरों के नाम भी बातों के प्रसंग में ही बतलाए थे । सावे दादा ने छोटी-मोटी बहुत फिल्में बनाईं । भारत के प्रसिद्ध गणितज्ञ और कैंब्रिज विश्वविद्यालय के प्रथम भारतीय छात्र सर आर० पी० परांजपे जो सन् 1936-37 के लगभग लखनऊ विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर भी हुए थे, उनके स्वागतोत्सव पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाई थी । इसी तरह लोकमान्य तिलक, गोखले आदि देश के मान्य नेताओं पर भी फिल्में बनाई थीं । मुझे यह भी याद पड़ता है कि भारतीय फिल्म उद्योग के जनक माने जाने वाले दादा साहब फालके द्वारा बनाई गई फीचर फिल्म 'हरिश्चंद्र' से पहले भी एक फीचर फिल्म बनी थी उसका नाम शायद 'भक्त पुंडलीक' था । दुर्भाग्यवश मैं उसके निर्माता का नाम भूल चुका हूँ (इनका नाम था दादा साहब तोरणे) । हो सकता है वह फिल्म दादा साहब फालके ने ही बनाई हो । जो भी हो इतिहास ने दादा साहब फालके को ही भारतीय फिल्म उद्योग का जनक माना साबे दादा को नहीं । इसका कारण शायद यह भी हो सकता है कि दादा साहब फालके ने केवल एक ही नहीं वरन् कई फीचर फिल्म एक के बाद एक बनाई और इस प्रकार उन्होंने ही इस उद्योग की नींव जमाई । सावे दादा ने छोटी-मोटी डाक्यूमेंट्री फिल्में तो बहुत बनाई और समय को देखते हुए पैसा भी अच्छा ही कमाया और यदि पहली फीचर फिल्म 'भक्त पुंडलीक' उन्हीं की बनाई सिद्ध हो तो भी उनकी अपेक्षा दादा साहब फालके को ही

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भारतीय फिल्मों का जनक मानना मेरी समझ में उचित है । भारत सरकार ने भी फिल्म के सर्वोच्च पुरस्कार को दादा साहब फालके पुरस्कार कहके ही इतिहास की वंदना की है ।

सन् 1940 में मेरे मित्र श्री किशोर साहू की पहली फिल्म 'बहूरानी' का उद्घाटन दादा साहब फालके के कर-कमलों द्वारा ही संपन्न हुआ था । बहूरानी के अर्थपति मेरे दूसरे मित्र स्वर्गीय द्वारकादास डागा थे । बड़े पढ़े-लिखे सुरुचिपूर्ण, साहित्यिक व्यक्ति थे । उन्हीं के कारण बहूरानी के निर्माण काल में फिल्मी दुनिया से मेरा संबंध जुड़ा । दादा साहब फालके से मुझे दो-तीन बार भेंट करने के सुअवसर प्राप्त हुए थे । बड़े दबंग, जोश में आकर बड़े झपाटे से बोलने लगते थे । वे स्वयं को बात-बात में महत्त्व देने से तो न चूकते थे परंतु उनमें अच्छाई यह थी कि वे नई पीढ़ी के महत्त्व को एकदम नकारते न थे । मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे सामने उन्होंने श्री शांताराम और श्री देवकी बोस की प्रशंसा की थी । मूक चित्रपटों के सुख्यात डायरेक्टर आनंदप्रसाद कपूर, जाल मर्चेंट आदि-आदि बड़े नामी स्टारों को रजत पट पर लाने वाले बनारस के स्वर्गीय भगवती प्रसाद मिश्र की प्रशंसा भी मैंने उनके मुख से सुनी थी । दादा साहब फालके अपनी फिल्मों के निर्माता, निर्देशक, लेखक, कैमरामैन, प्रोसेसिंग-डेवलपिंग करने वाले, प्रचारक, वितरक सब कुछ एक साथ थे । मुझे फिल्म व्यवसाय में रहते हुए उनकी सन् उन्नीस सौ तेरह में बनाई हुई 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म देखने का अवसर भी प्राप्त हुआ था । उसमें स्त्रियों का पार्ट भी पुरुषों ने ही किया था । श्री फीरोज रंगूनवाला ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि दादा साहब फालके ने पहले तो वेश्या वर्ग की कुछ स्त्रियों को अपनी फिल्म में काम करने के लिए राजी कर लिया था लेकिन बाद में कैमरा के सामने आने पर वे शरमा गईं । कुछ एक को तो उनके संरक्षक दल्लाल भी भगाकर ले गए और इस प्रकार राजा हरिश्चंद्र की रानी मास्टर साडुंके को ही बनना पड़ा । खैर, राजा हरिश्चंद्र के तीन ही महीने बाद उन्होंने 'मोहिनी भस्मासुर' नामक दूसरा चित्र दिया । उनका तीसरा चित्र 'लंकादहन' भारत की पहिली बाक्स-ऑफिस हिट कही जा सकती है, अपने जमाने में खूब चली थी ।

बंबई की तरह ही कलकत्ते में एक पारसी व्यवसायी जे० एफ० मादन जिन्होंने मादन थियेटर नामक सुप्रसिद्ध संस्था की स्थापना भी की थी, सन् 1917 में एलफिंस्टन बाइस्कोप कंपनी नामक फिल्म संस्था चलाई और दादा साहब फालके की तरह ही वे भी फीचर फिल्में बनाने लगे । इस तरह सन् 1913 से सन् 1920 तक फिल्मों में क्रमशः पौराणिक कथानक ही अधिकतर हमारे सामने पेश हुए । तीसरे दशक की सबसे महान् फिल्मी हस्ती बाबूराव पेंटर थे । साँवला रंग, दुबला-पतला शरीर, आँखों पर चश्मा, लंबी दाढ़ीयुक्त श्री बाबूराव पेंटर का व्यक्तित्व बहुत ही सौम्य और शालीन था । आज के सुप्रसिद्ध निर्माता-निर्देशक श्री व्ही० शांताराम, स्वर्गीय बाबूराव पेंढारकर, भालजी पेंढारकर तथा स्वर्गीय मास्टर विनायक आदि अनेक जानी-मानी फिल्मी हस्तियों के वे गुरु थे । उन्होंने काफी कम फिल्में बनाईं, उनकी एक मराठी फिल्म 'सावकार पाश' (साहूकार का फंदा) मैंने भी देखी थी । वह अपने जमाने की बड़ी ही प्रसिद्ध फीचर फिल्म थी ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

इसी दशक के लगभग अंतिम काल में कई नामी फिल्म स्टार हुए, जिल्लो, जुबैदा, मास्टर विट्ठल, ई० बिलीमोरिया, डी० बिलोमारिया, गौहर, सुलोचना, माधुरी, जाल मर्चेंट, अर्मलीन, पृथ्वीराज कपूर आदि स्टारों का जमाना यही था । और इसी दशक के अंत में सन् 1930 के आस-पास बंबई की इंपीरियल फिल्म कंपनी ने भारत की 'सौ टक्का, नाचती गाती, बोलती, फीलम' आलम आरा का निर्माण किया । मादन की बोलती फिल्म शीरीं-फरहाद भी इसी समय के आस-पास आई । फिल्मी दुनिया में नया युग आ गया ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. उन्नीसवीं और बीसवीं शती ने दुनिया को कई करिश्मे दिखाए । लेखक ने किस करिश्मे का वर्णन विस्तार से किया है ?
2. भारतीय चित्रपट में मूक से सवाक् फिल्मों तक के इतिहास को रेखांकित करते हुए दादा साहब फालके का महत्त्व बताइए ।
3. सावे दादा कौन थे ? भारतीय सिनेमा में उनके योगदान को पाठ के माध्यम से समझाइए ।
4. लेखक ने सावे दादा की तुलना में दादा साहब फालके को क्यों भारतीय सिनेमा का जनक माना ? स्पष्ट कीजिए ।
5. भारतीय सिनेमा के विकास में पश्चिमी तकनीक के महत्त्व को रेखांकित कीजिए ।
6. अपने शुरुआती दिनों में सिनेमा आज की तरह किसी कहानी पर आधारित नहीं होते थे, क्यों ?
7. भारत में पहली बार सिनेमा कब और कहाँ दिखाया गया ?
8. सिनेमा दिखलाने के लिए अखबारों में क्या विज्ञापन निकला ? इस विज्ञापन का बम्बई की जनता पर क्या असर हुआ ?
9. 1897 में पहली बार बम्बई की जनता को रुपहले पर्दे पर कुछ भारतीय दृश्य देखने को मिले । उन दृश्यों को लिखें ।
10. कलकत्ते में स्टार थियेटर की स्थापना किसने की ?
11. भारत में फिल्म उद्योग किस तरह स्थापित हुआ ? इसकी स्थापना में किन-किन व्यक्तियों ने योगदान दिया ।
12. पहली फीचर फिल्म कौन थी ?
13. भारत की पहली बॉक्स-ऑफिस हिट फिल्म किसे कहा जाता है ?
14. जे० एफ० मादन का भारतीय फिल्म के विकास में योगदान रेखांकित करें ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

15. शुरुआती दौर की फिल्म को लोग क्या कहते थे ?
16. 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म में स्त्रियों का पार्ट भी पुरुषों ने ही किया था । क्यों ?

पाठ के आस-पास

1. 'दादा साहब फालके' के बारे में जानकारी प्राप्त करें ।
2. प्रारंभिक दौर की फिल्मों की एक क्रमवार सूची बनाएँ ।
3. राजा हरिश्चंद्र की कहानी अपने शिक्षक से पूछें ।
4. आरंभिक दौर की फिल्मों को बनाने में क्या-क्या कठिनाइयाँ रही होंगी ? आप क्या सोचते हैं ?
5. आरंभिक दौर की फिल्मों और आधुनिक दौर की फिल्मों में क्या अंतर पाते हैं ? लिखें ।
6. दादा साहब फालके पुरस्कार अब तक किन लोगों को मिला है । क्रमवार सूची बनाएँ ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए –
   दाँतों तले उँगली दबाना, श्रीगणेश होना
2. निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद करें –
   संगम, विश्वविद्यालय, स्वागतोत्सव, हरिश्चंद्र
3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग स्पष्ट कीजिए –
   टेलीग्राम, आँख, सिनेमा, टिकट, होटल, फिल्म, व्यवसाय
4. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय बताएँ –
   बंबइया, स्वर्गीय अच्छाई, व्यक्तित्व, चश्माधारी
5. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग बताएँ –
   विज्ञापन, प्रचारक, विनायक, सुप्रसिद्ध, सुख्यात
6. निम्नलिखित वाक्यों से कोष्ठक में दिए गए निर्देश के अनुरूप पद चुनें –
   (क) आँखें अचंभे से फट पड़ीं । (कारक चिह्न)
   (ख) अमेरिका में कुछ ही महीनों पहले इस तमाशे को दिखाया गया था । (कारक चिह्न)
   (ग) सावे दादा ने छोटी-मोटी बहुत फिल्में बनाईं । (विशेषण)
   (घ) मुझे अच्छी तरह से याद है । (सर्वनाम)
7. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखें –
   बाजार, करिश्मा, चमत्कार, आविष्कार, जनता, व्यवसाय, खरीदना, प्रारंभ ।

शब्द निधि :

मूक : चुप, मौन
सवाक् : बोलता हुआ, वाणी युक्त
गपोड़ियों : गप्प हाँकने वाले
शताब्दी : सौ वर्षों की अवधि (शत्+अब्द+इ)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तिलस्मात	:	जादू, चमत्कार
अचंभा	:	आश्चर्य
विलायती	:	विदेशी
रुपहले पर्दे	:	सिनेमा का पर्दा जिसपर तस्वीरें दिखाई जाती हैं ।
राष्ट्रीयकरण	:	राष्ट्र की संपत्ति बनाना
नकसुरी	:	बोलने में नाक की ध्वनि का ज्यादा प्रभाव
डाक्यूमेंट्री	:	वृत्तचित्र
अर्थपति	:	धनवान
सुरुचिपूर्ण	:	परिष्कृत रुचि से पूर्ण, अच्छी रुचि से पूर्ण
कथानक	:	कथा का ढाँचा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रामकुमार

प्रख्यात चित्रकार और लेखक रामकुमार का जन्म सन् 1924 में शिमला में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा शिमला में ही हुई। सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से अर्थशास्त्र में उन्होंने एम० ए० किया। इसी दौरान उन्होंने प्रख्यात चित्रकार शैलोज मुखर्जी (शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट) से चित्रकला की शिक्षा ली। अपनी चित्रकला की शिक्षा को विस्तार देने के लिए वे 1949 में पेरिस गए और 1952 तक वहाँ रहे। उन्हें 1972 में पद्मश्री सम्मान और 1985 में प्रतिष्ठित कालिदास सम्मान समेत अबतक अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

रामकुमार की कृतियों के नाम हैं : **उपन्यास** – 'घर बने घर टूटे', 'देर सबेर'; **कहानी संग्रह** – 'हुस्ना बीबी तथा अन्य कहानियाँ', 'एक चेहरा', 'समुद्र', 'एक लंबा रास्ता', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'दीमक तथा अन्य कहानियाँ', 'झींगुरों का स्वर' आदि; **रिपोर्ताज** – 'यूरोप के स्केच'; **अनुवाद** – 'वार्ड नं० छह' (चेखव के बहुचर्चित लघु उपन्यास का हिंदी अनुवाद), 'अपनी छाया' (ऑस्कर वाईल्ड के उपन्यास 'द पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे' का हिंदी अनुवाद)।

रामकुमार के साहित्य में निम्नवर्गीय कस्बाई जीवन गहरी अनुभूति और संवेदना के साथ व्यक्त हुआ है। उनके साहित्य में भावुकता और बड़बोलेपन के लिए कोई स्थान नहीं है। वे मानवीय संबंधों के छीजन और संत्रास को विश्वसनीयता के साथ पाठकों के सामने पेश करते हैं। रामकुमार का कथाकार यायावरी और चित्रकला से समृद्ध हुई उस भावभूमि पर मिलता है जहाँ विस्तृत अनुभव संसार है और मानवीय गरिमा को कभी न आहत करने वाली दृष्टि।

प्रस्तुत पाठ 'टॉल्सटाय के घर में' उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'यूरोप के स्केच' से संकलित है। वे सन् 1949 में चित्रकला का अध्ययन करने के लिए पेरिस गए थे। उन्हीं दिनों जब कभी मौका लगा, उन्होंने इटली, डेनमार्क, जर्मनी, पोलैंड, लंदन, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों की यात्रा की। 1955 ई० में जब प्राग में उनके चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित हुई तब उन्हें दूसरी बार यूरोप यात्रा का अवसर मिला। इस बार उन्होंने पेरिस के अलावा सोवियत संघ, फिनलैंड, ऑस्ट्रिया, हंगरी आदि देशों की यात्राएँ कीं। 'यूरोप के स्केच' में उन्हीं यात्राओं के रिपोर्ताज हैं। एक निरुद्देश्य यात्री की तरह घूमते हुए जो कुछ देखा, महसूस किया, उन्हीं स्मृतियों को उन्होंने इस पुस्तक में सँजोया है। इन रिपोर्ताजों में तत्कालीन यूरोप की साहित्यिक-सांस्कृतिक जगत् की तस्वीरें हैं तो दूसरे विश्वयुद्ध के कारण उत्पन्न बिखराव से बाहर निकलने की कोशिशों की मार्मिक छवियाँ भी दर्ज हैं। 'टॉल्सटाय के घर में' में लेखक ने टॉल्सटाय को स्मरण करते हुए उनके जीवन की कभी न भुला पाने वाली यादों की एक झाँकी प्रस्तुत की है। लेखक के लिए टॉल्सटाय के घर की यात्रा तीर्थयात्रा की तरह है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

टॉल्सटाय के घर में

आकाश गहरे नीले रंग का था और बिखरी धूप में मॉस्को की चमचमाती सड़कों पर उजले हरे रंग के पेड़ों और सड़कों पर टहलते लोगों की परछाइयाँ अजीब-अजीब-सी आकृतियाँ बना रही थीं। लोगों में एक प्रकार का उल्लास था क्योंकि मॉस्को में धूप के दिन अधिक देर तक नहीं टिकते।

सुबह नाश्ता करके मैं अपने एक रूसी मित्र यूरा के साथ एक बड़ी-सी कार में यासनाया पोलयाना के लिए रवाना हो गया। यासनाया पोलयाना के विषय में कब पहली बार पढ़ा था सो अब याद नहीं, लेकिन जब-जब 'आना करीनिना' और 'युद्ध और शांति' पढ़ा तब-तब इस अजीब से अनजाने स्थान की ओर आकर्षण बढ़ा। टॉल्सटाय की जीवनी में भी इस स्थान का विचित्र-सा वर्णन पढ़कर कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि एक दिन मैं इस स्थान को देखूँगा। कार में बैठकर भी मुझे विश्वास नहीं हो सका कि मैं उस महत्त्वपूर्ण स्थान पर जा रहा हूँ, जहाँ विश्व साहित्य की अमर कृतियाँ लिखी गई थीं, जहाँ आना का चरित्र कागज पर उतरा था, जहाँ 'युद्ध और शांति' के कितने ही सजीव चित्र रचे गए थे। प्रसन्नता के साथ-साथ एक प्रकार का भय भी मेरे मन में समा रहा था कि कैसे वह सब मैं अपनी आँखों से देख सकूँगा, कैसे उस वातावरण के साथ अपने आपका समन्वय कर पाऊँगा।

कार 70 मील की रफ्तार से भागी जा रही थी, सड़क के दोनों ओर हरे और गहरे पीले रंग के लहलहाते खेत सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। कार में लगे रेडियो में न जाने किस संगीतकार के स्वर धीमे-धीमे गूँज रहे थे। रात में कम सोने के कारण यूरा सीट पर सिर टिकाए सो रहा था और मैं खुली खिड़की से बाहर के दृश्य देख रहा था परंतु मन में यासनाया पोलयाना की बात सोच रहा था। आज न जाने हृदय के कौन-से कोने में से बार-बार नताशा, लेविन, आंद्रे, डाली के धुँधले-धुँधले चित्र मेरी आँखों के सामने घूमे जा रहे थे और मैं कोशिश करने पर भी उन्हें अपने से दूर नहीं कर पा रहा था।

छोटे-छोटे गाँव, छोटे-छोटे शहर पीछे छूटे जा रहे थे और रेडियो से प्यानो, बायलिन, मैंडोलिन के स्वर हृदय के सब सोए भागों को एक-एक करके जगा रहे थे। 150 मील की यात्रा हमने तीन घंटों में पूरी की और हम यासनाया पोलयाना के बड़े फाटक पर जा पहुँचे।

लगभग सौ डेढ़ सौ घरों के एक छोटे-से गाँव के सिरे पर टॉल्सटाय का घर है जिसके चारों ओर दूर-दूर तक फैले हुए बाग-बगीचे हैं। पास ही एक तालाब है जिसके किनारे टॉल्सटाय

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

घंटों जाकर बैठे रहते थे । आजकल इस मकान को सरकार ने म्यूजियम बना दिया है जिसमें टॉल्सटाय का सब सामान तरतीबवार सजा हुआ है । छुट्टी न होने पर भी उस दिन वहाँ लगभग 1,000 पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे म्यूजियम देखने आए हुए थे ।

म्यूजियम के डायरेक्टर ने हमारे साथ एक ऐसे व्यक्ति को कर दिया जो टॉल्सटाय के सेक्रेटरी रह चुके थे और अब उनकी अवस्था 70 वर्ष के लगभग थी, परंतु उनकी मुद्रा को देखकर ऐसा जान पड़ा मानो टॉल्सटाय की चर्चा करते समय अब भी वह स्वर्गीय सुख अनुभव करते हों ।

"यह वह पेड़ है जिसकी छाया में बैठकर टॉल्सटाय किसानों को पढ़ाया करते थे, इस झोंपड़ी में रेपिन रहा करते थे, जब कभी टॉल्सटाय के चित्र बनाने वह यहाँ आते थे... यहाँ टॉल्सटाय के घोड़े रहते थे । टॉल्सटाय ने अपनी माँ द्वारा लगाए गए बाग और पेड़ों की बड़ी सावधानी के साथ रक्षा की क्योंकि जब वह ढाई वर्ष के थे तभी उनकी माँ मर गई थी परंतु टॉल्सटाय कभी आजीवन उन्हें भूल नहीं सके थे...." हमारे गाइड धीरे-धीरे रूसी भाषा में कहते जा रहे थे और यूरा मेरे लिए अनुवाद करता जा रहा था ।

छोटी-छोटी पगडंडियाँ बरसाती नालों की भाँति मकान के इर्द-गिर्द फैले बाग में दूर-दूर तक सिकुड़ी हुई थीं । कदम-कदम पर टॉल्सटाय के जीवन की अनगिनत स्मृतियाँ बिखरी हुई थीं । कहीं कोई लकड़ी का बेंच था जिस पर वह सुबह बैठा करते थे, कहीं कोई पेड़ था जो उन्हें बहुत पसंद था, एक शाखा पर एक घंटा लगा था जिसे खाने के समय बजाकर परिवार के सब सदस्यों को डाइनिंग रूम में आने की सूचना दी जाती थी । धीरे-धीरे हम उस रहस्यमय वातावरण में खोते जा रहे थे ।

बाहर की परिक्रमा समाप्त करके हम उनके घर में घुसे । दरवाजे के भीतर कदम रखते ही सारे शरीर में एक प्रकार की सनसनी-सी दौड़ गई । उनकी जीवनी में पढ़ी कितनी ही घटनाएँ एक-साथ मस्तिष्क में घुड़दौड़ लगाने लगीं ।

एक कमरे में शीशे की आलमारियों में उनके कपड़े टँगे हुए थे, मानो उन्होंने अभी उतारे हों । उनका कोट, पतलून, ओवरकोट, ड्रेसिंग गाऊन, मोजे, लंबे-लंबे रूसी जूते, कमीजें, सब थे । एक कोट के विषय में उनके सेक्रेटरी ने बतलाया कि 'आना करीनिना' के रुपयों से उन्होंने वह कोट खरीदा था । दीवारों पर उनके और उनके परिवार के चित्र टँगे हुए थे । उनकी पत्नी और पुत्री को चित्रकारी का शौक था, उनके बनाए चित्र भी थे ।

यह उनके पढ़ने-लिखने का कमरा था । एक कोने में छोटी-सी मेज और बिना सिरहाने की एक तिपाई रखी हुई थी । मेज पर एक कलम और दवात रखी थी । इस तिपाई पर उन्होंने अपने जीवन का कितना बड़ा भाग बिताया होगा, यहीं बैठकर उन्होंने 'आना करीनिना' और 'युद्ध और शांति' की रचना की होगी, यही कोना उनके मकान का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग था । उनकी सादगी देखकर हृदय विचलित हुए बिना नहीं रहा । शेल्फों पर अनगिनत किताबें सजी हुई थीं । वह जर्मन, फ्रांसीसी और अँग्रेजी भी पढ़ लेते थे । उनके पुस्तकालय में 23,000 पुस्तकें थीं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उनके पास दुनिया के कोने-कोने से पत्र आते थे जिनकी संख्या 20,000 के लगभग है और वह अधिकतर उन पत्रों के उत्तर दिया करते थे ।

यह उनका सोने का कमरा था । खिड़की के पास उनकी चारपाई बिछी हुई थी । दूसरी मंजिल से दूर तक फैले हुए खेत, गाँव के मकानों की छतें और छोटी-छोटी हरी पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं । उनकी पत्नी के सोने का कमरा अलग था क्योंकि अंतिम वर्षों में आपस में खटपट रहने के कारण उनके सोने के कमरे अलग-अलग थे । सुबह उठकर कुछ घंटे वह अपनी चारपाई पर बैठकर ही लिखा करते थे । एक अन्य कमरे में एक और मेज भी थी जिस पर टॉल्सटाय की पत्नी पहले उनकी पांडुलिपियों की नकल किया करती थीं और शायद 'युद्ध और शांति' जैसी बड़ी पुस्तक की उन्होंने तीन बार नकल की थी, परंतु बाद में उन्होंने यह सब छोड़ दिया था ।

खाने का कमरा दूसरी मंजिल के एक सिरे पर था । यह बहुत बड़ा था । बीच में एक मेज थी जिसके इर्द-गिर्द 12 कुर्सियाँ रखी हुई थीं । दो बड़े-बड़े प्यानो थे । टॉल्सटाय को संगीत का बहुत शौक था और प्रायः खाने के बाद उनकी लड़की प्यानो पर किसी क्लासीकल संगीतकार का संगीत बजाया करती थी । चारों ओर आरामकुर्सियाँ थीं जिन पर खाने के बाद लोग आराम किया करते थे । दीवार पर रेपिन के बनाए हुए चित्र थे । वह टॉल्सटाय के अभिन्न मित्रों में से एक थे और कितने-कितने दिन आकर उनके पास रहते थे और उनके चित्र बनाते थे । रेपिन के चित्रों को देखकर ऐसा जान पड़ा मानो उन्होंने टॉल्सटाय की आत्मा और उनके हृदय की गहराई को छू लिया होगा जिसका आभास टॉल्सटाय की आँखों से हुआ । इस कमरे का वातावरण अत्यंत सजीव जान पड़ा । आँखों के सामने कल्पना के वे चित्र घूमने लगे जब टॉल्सटाय का परिवार खाने के बाद उस कमरे में जीवन भर देता होगा ।

नीचे की मंजिल में कुछ अतिथियों के लिए कमरे थे । एक उनके डॉक्टर का था जो उनके साथ ही रहता था और अंतिम बार जब सदा के लिए टॉल्सटाय ने अपना घर छोड़ा तो केवल डॉक्टर ही उनके साथ गया था । एक और उनका निजी कमरा था । उनके सेक्रेटरी ने बतलाया कि यह कमरा उन्हें बेहद पसंद था क्योंकि यह घर के शोरगुल से दूर था और यहाँ उन्हें सदा एकांत मिलता था । इस कमरे का बहुत-सा वर्णन उन्होंने 'आना करीनिना' में लेविन के कमरे की चर्चा करते समय किया था क्योंकि लेविन के चरित्र में उन्होंने बहुत कुछ अपनी बातें कही थीं । कमरे की सादगी, बाहर खुलती हुई एक खिड़की, एक चारपाई....बहुत कुछ वही था । एक कोने में पानी भरने का एक बर्तन रखा हुआ था जिसमें टॉल्सटाय अपने अंतिम दिनों में बाहर जाकर कुएँ से स्वयं ही पानी भरकर लाते थे ।

म्यूजियम को देखकर ऐसा जान पड़ा कि जिस व्यक्ति को जीवन में कभी नहीं देखा, जिसकी मृत्यु हुए भी पचास साल के लगभग बीत चुके हैं, उसके जीवन की एक झाँकी, एक धुँधली-सी छाया आज दिखाई दी जिसकी स्मृति शायद कभी धुँधली नहीं पड़ सकेगी । सूने मकान के कमरों में आज भी मुझे आना और लेविन की हल्की-हल्की पदचाप सुनाई दी, वे सब व्यक्ति

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शायद इस स्थान को कभी नहीं छोड़ सकेंगे । इस मकान में केवल टॉल्सटाय के जीवन का इतिहास ही नहीं पता चलता बल्कि कितनी ही आत्माओं के स्वर सुनाई देते हैं जिन्हें टॉल्सटाय ने जन्म दिया था ।

जब मकान से बाहर निकले तो हम तीनों ही चुप थे मानो दो घंटों तक कोई स्वप्न देख रहे थे । बाहर तेज धूप निकली हुई थी और कुछ क्षणों के लिए मेरी आँखें उस रोशनी में चौंधिया-सी गईं । लोगों के झुंड इधर-उधर घूम रहे थे । कुछ देर बाद हम टॉल्सटाय की समाधि की ओर बढ़ गए, जो उस घर से दो फर्लांग की दूरी पर थी । पतली-सी सड़क के दोनों ओर विशालकाय हरे-भरे पेड़ों की कतारें आकाश को ढँके हुए थीं । छोटे-छोटे बाग, कहीं फूलों की क्यारियाँ और कहीं ऊबड़-खाबड़ झाड़ियाँ थीं । सेक्रेटरी धीमे स्वर में धीरे-धीरे टॉल्सटाय के विषय में कुछ कह रहे थे परंतु मेरे कानों तक उनका स्वर पहुँच नहीं पा रहा था । चारों ओर उदासी भरा एक सन्नाटा छाया हुआ था ।

समाधि से थोड़ी दूर पहले सड़क पर एक बोर्ड लगा हुआ था जिस पर लिखा था कि इससे आगे लोगों को चुप रहना चाहिए । समाधि क्या थी, एक छोटा-सा मामूली पत्थर प्रकृति के बीच में पड़ा था जिस पर रंग-बिरंगे फूल सजे हुए थे । अपनी मृत्यु से पूर्व टॉल्सटाय ने अपनी समाधि के विषय में विस्तार से आदेश दिया था कि जैसी निर्धन से निर्धन व्यक्ति की समाधि होती है वैसी ही उनकी भी बने, उनकी मृत्यु पर किसी भी व्यक्ति का भाषण न हो । उसका स्थान भी वह स्वयं ही चुन गए थे । उनकी समाधि के निकट हम झुके और बिना एक भी शब्द कहे हमने उस महान आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की । कहने को कुछ भी बाकी नहीं बचा था । हम दबे पाँव लौट आए ।

बाहर निकलकर अपने डायरेक्टर के साथ एक रेस्तराँ में खाना खाया । म्यूजियम के डायरेक्टर ने बतलाया कि वह वर्षों से टॉल्सटाय के जीवन और उनके कृतित्व का विशेष अध्ययन कर रहे हैं, सामाजिक और वैज्ञानिक रूप से टॉल्सटाय द्वारा चरित्रों, कथानकों आदि का विश्लेषण कर रहे हैं । अपने जीवन के अंतिम वर्ष वह इसी म्यूजियम में व्यतीत करना चाहते हैं ।

हमारी कार फिर तेजी से मॉस्को की ओर रवाना हो गई । रेडियो से फिर संगीत की ध्वनि हमारे कानों तक पहुँचने लगी । शाम की धुँधली रोशनी में पेड़ों की परछाइयाँ लंबी होने लगीं । अतीत की दुनिया से बाहर आकर वर्तमान की ओर हम बहुत तेजी से बढ़े जा रहे थे । सुबह आते वक्त खिड़की से बाहर जिन गाँवों, शहरों और मकानों को देखने में जो मेरी दिलचस्पी थी, वह अब समाप्त हो गई थी । मैंने आँखें बंद कर लीं परंतु यासनाया पोलयाना की दुनिया से अपने-आपको अलग नहीं कर सका ।

मेरी तीर्थयात्रा समाप्त हो गई । पाँच वर्ष पूर्व फ्रांस में रोमाँ रोलाँ का घर देखने के बाद जो भावनाएँ उठी थीं, वही मैं इस समय भी अनुभव कर रहा था । अनुभव करता हूँ कि इस प्रकार की तीर्थयात्रा से कितना उत्साह मिलता है, कितनी प्रेरणा मिलती है ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

पाठ के साथ

1. टॉल्सटाय ने अपनी अमर कृतियों की रचना कहाँ की थी ?
2. यासनाया पोलयाना के लिए जाते हुए लेखक के मन में कैसा भय समा रहा था और क्यों ?
3. यूरा कौन था ? लेखक की यात्रा के दरम्यान उसकी भूमिका पर प्रकाश डालें ।
4. टॉल्सटाय के परिवार में चित्रकारी का शौक किन्हें था ?
5. रामकुमार के अनुसार टॉल्सटाय के मकान का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग कौन था ? उसका एक संक्षिप्त परिचय दीजिए ।
6. टॉल्सटाय रूसी के अलावा और कौन-कौन सी भाषाएँ पढ़ लेते थे ?
7. टॉल्सटाय ने अंतिम बार जब घर छोड़ा तो उनके साथ कौन गया था ?
8. टॉल्सटाय ने अपने निजी कमरे का चित्रण किस उपन्यास के किस पात्र के कमरे के रूप में किया है ? कमरे की कुछ विशेषताएँ बताइए ।
9. टॉल्सटाय ने अपनी समाधि के विषय में क्या कहा था ?
10. टॉल्सटाय के गाँव का एक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करें ।
11. लेखक ने अपनी इस यात्रा को तीर्थयात्रा क्यों कहा है ?

पाठ के आस-पास

1. टॉल्सटाय की किस विशेषता के चित्रण से महात्मा गाँधी की याद आती है ?
2. टॉल्सटाय के अलावा रूस के अन्य प्रमुख कथाकारों तथा उनकी कृतियों के नाम पता करें ।
3. क्या आप जानते हैं कि हिंदी के महान कथाकार प्रेमचंद कहाँ के रहनेवाले थे ? टॉल्सटाय से उनकी क्या समानताएँ थीं ?
4. रोमाँ रोलाँ की प्रमुखतम कृति का नाम पता कीजिए ।
5. अपने शिक्षक से पूछ कर जानिए कि अन्तोन चेखव, मक्सिम गोर्की, लू-शुन और सआदत हसन मंटो किन-किन देशों के रहने वाले थे ?
6. टॉल्सटाय का उपन्यास 'युद्ध और शांति' (वार एंड पीस) क्यों विश्व का महानतम उपन्यास माना जाता है ? इस संबंध में अधिक से अधिक जानकारियाँ जुटाएँ ।
7. हिंदी के उन महान कथाकार-कवियों के नामों का चयन करें जिनके घर को संग्रहालय का रूप देकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया जा सकता है ?
8. आप साहित्यकार को अधिक महान मानते हैं या वैज्ञानिक को या दोनों को ? इसपर एक संगोष्ठी आयोजित कर विचार-विमर्श करें ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

9. क्या आपको पता है कि रामकुमार एक प्रसिद्ध चित्रकार और कहानीकार भी हैं ? उनकी प्रसिद्ध कहानी 'सेलर' कहीं से उपलब्ध कर पढ़ें ।

10. टॉल्सटाय की प्रमुख कहानियों तथा उनके उपन्यासों के नाम की जानकारी प्राप्त करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित संज्ञाओं के प्रकार बताइए -

आकाश, धूप, सड़क, मास्को, उल्लास, आना करीनिना, यासनाया पोलयाना, सूरज, गाँव

2. निम्नलिखित शब्दों के भेद (उद्गम की दृष्टि से) बताइए -

सुबह, नाश्ता, रूसी, मित्र, मील, घर, निकल, झोंपड़ी, स्मृति, पुरुष, स्त्री, माँ, रक्षा, आत्मा, चारपाई, कुआँ, खटपट

3. निम्नलिखित विशेषणों के प्रकार बताइए –

चमचमाती, इस, सजीव, सौ डेढ़ सौ, धुँधली, कितना, स्वर्गीय, आजीवन ।

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करें और संधि-निर्देश करें –

उल्लास, वातावरण, पुस्तकालय

5. निम्नलिखित शब्दों का सविग्रह समास बताइए –

आजीवन, रहस्यमय, तिपाई, चारपाई, सजीव, शोरगुल, विशालकाय

6. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ –

(क) लोगों में एक प्रकार का उल्लास था ।
(ख) कैसे वह सब मैं अपनी आँखों से देख पाऊँगा ?
(ग) इससे आगे लोगों को चुप रहना चाहिए ।
(घ) कहने को कुछ बाकी नहीं बचा था ।
(ङ) इस प्रकार की तीर्थयात्रा से कितना उत्साह मिलता है ?

7. रचना की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों के प्रकार बताइए –

(क) पास ही एक तालाब है जिसके किनारे टॉल्सटाय घंटों जाकर बैठे रहते थे ।
(ख) यह उनके पढ़ने-लिखने का कमरा था ।
(ग) बाहर तेज धूप निकली हुई थी और कुछ क्षणों के लिए मेरी आँखें चौंधिया-सी गईं ।
(घ) जब मकान से बाहर निकले तो हम तीनों ही चुप थे मानो दो घंटों तक कोई स्वप्न देख रहे थे ।
(ङ) उनकी पत्नी के सोने का कमरा अलग था क्योंकि अंतिम वर्षों में आपस में खटपट रहने के कारण उनके सोने के कमरे अलग-अलग थे ।

शब्द निधि

यासनाया पोलयाना : टॉल्सटाय का गाँव
आना करीनिना : टॉल्सटाय का एक उपन्यास
युद्ध और शांति : टॉल्सटाय का सुप्रसिद्ध उपन्यास

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रेपिन	:	उन्होंने टॉल्सटाय के अनेक चित्र बनाए थे । वे टॉल्सटाय के मित्र भी थे ।
रोमाँ रोलाँ	:	नोबेल पुरस्कार प्राप्त महान फ्रांसीसी उपन्यासकार । उन्होंने रामकृष्ण परमहंस, गाँधीजी और विवेकानंद की जीवनियाँ भी लिखीं हैं ।
मास्को	:	रूस की राजधानी
आकृति	:	तस्वीर
समन्वय	:	मेल, सामंजस्य
दृश्य	:	जो दिखाई पड़ रहा हो वह प्रसंग या परिवेश
धुँधले	:	अस्पष्ट
प्यानो	:	एक बाजा जो बड़े आकार का होता है और कुर्सी पर बैठकर बजाया जाता है
बायलिन	:	एक तारवाला बाजा
मैंडोलिन	:	तारवाला एक यूरोपीय बाजा
मील	:	दूरी का एक पैमाना जो 1760 फीट का होता है
म्यूजियम	:	संग्रहालय, जहाँ महत्त्वपूर्ण सामग्री संग्रह कर सुरक्षित रखी गई हों
आजीवन	:	जीवनभर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अनुपम मिश्र

अनुपम मिश्र का जन्म सन् 1948 ई० में हुआ । वे हिंदी के मूर्धन्य कवि भवानी प्रसाद मिश्र के सुपुत्र हैं । उनके जीवन के प्रारंभिक वर्ष छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव में बीते । उनकी प्रारंभिक शिक्षा हैदराबाद एवं मुंबई में हुई । बाद में वे दिल्ली आ गए और यहीं से संस्कृत में एम० ए० किया । उन्होंने सन् 1969 में गाँधी शांति प्रतिष्ठान में कार्यभार सँभाला और तभी से इस संस्था के पर्यावरण प्रकोष्ठ में सेवारत हैं ।

लंबे अरसे तक नगरीय जीवन बिताने पर भी गाँव का मोह नहीं छूटा और इसलिए ग्रामीण संस्कृति की झलक उनके साहित्य में दिखाई देती है । मिश्र जी गाँधीवादी विचारक और एक सजग सामाजिक कार्यकर्ता हैं । पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर उनकी पैनी दृष्टि रही है । पानी की समस्या पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया और उन्हीं समस्याओं से संबंधित कार्यक्षेत्र में वे जुटे रहते हैं ।

अनुपम मिश्र की रचनाओं में एक ओर भारत के गाँवों की मिट्टी की सोंधी गंध है तो दूसरी ओर ज्वलंत समस्याओं के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण । इसीलिए अकाल, वर्षा, पानी जैसी समस्याओं ने उनके लेखन में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । उनकी भाषा सरल-सहज बोलचाल की भाषा है । आंचलिक शब्द उनकी रचनाओं में खूब बोलते हैं ।

अनुपम मिश्र की प्रमुख रचनाएँ हैं - 'आज भी खरे हैं तालाब', 'राजस्थान की रजत बूँदें' । 'हमारा पर्यावरण' पुस्तक के निर्माण में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही है ।

पानी मनुष्य के लिए ईश्वर की सबसे बड़ी नेमत है । लेकिन 'धेले भर' के विकास के इस नये दौर ने पानी का अपव्यय बड़ी तेजी से किया है । इस संकट के प्रति यदि हम सचेत नहीं होंगे तो आने वाला कल हाहाकारी होगा - इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए । अगर हम पानी के साथ अच्छा रिश्ता बना लें तो कभी भी पानी की कमी नहीं पड़ेगी ; चाहे उपलब्ध पानी की मात्रा कम ही क्यों न हो । राजस्थान की जल-संस्कृति इसका सबसे अच्छा उदाहरण है । प्रस्तुत पाठ 'राजस्थान की रजत बूँदें' से साभार संकलित है, इस पाठ में दिखाया गया है कि किस तरह राजस्थान के समाज ने प्रकृति से मिलने वाले कम पानी का कभी रोना नहीं रोया, बल्कि इसे एक चुनौती के साथ स्वीकार कर जल-संग्रह की अनोखी परंपरा का विकास किया ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पधारो म्हारे देस

कभी यहाँ समुद्र था । लहरों पर लहरें उठती रही थीं । काल की लहरों ने उस अथाह समुद्र को न जाने क्यों और कैसे सुखाया होगा । अब यहाँ रेत का समुद्र है । लहरों पर लहरें अभी भी उठती हैं ।

प्रकृति के एक विराट रूप को दूसरे विराट रूप में–समुद्र से मरुभूमि में बदलने में लाखों बरस लगे होंगे । नए रूप को आकार लिए भी आज हजारों बरस हो चुके हैं । लेकिन राजस्थान का समाज यहाँ के पहले रूप को भूला नहीं है । वह अपने मन की गहराई में आज भी उसे **हाकड़ो** नाम से याद रखे है । कोई हजार बरस पुरानी डिंगल भाषा में और आज की राजस्थानी में भी हाकड़ो शब्द उन पीढ़ियों की लहरों में तैरता रहा है, जिनके पुरखों ने भी कभी समुद्र नहीं देखा था ।

आज के मारवाड़ के पश्चिम में लाखों बरस पहले रहे हाकड़ो के अलावा राजस्थान के मन में समुद्र के और भी कई नाम हैं । संस्कृत से विरासत में मिले **सिंधु, सरितापति, सागर, वाराधिप** तो हैं ही; **आच, उअह, देधाण, वडनीर, वारहर, सफरा-भडार** जैसे संबोधन भी हैं । एक नाम हेल भी है और इसका अर्थ समुद्र के साथ-साथ विशालता और उदारता भी है ।

यह राजस्थान के मन की उदारता ही है कि विशाल मरुभूमि में रहते हुए भी उसके कंठ में समुद्र के इतने नाम मिलते हैं । इसकी दृष्टि भी बड़ी विचित्र रही होगी । सृष्टि की जिस घटना को घटे हुए ही लाखों बरस हो चुके, जिसे घटने में भी हजारों बरस लगे, उस सबका जमा-घाटा करने कोई बैठे तो आँकड़ों के अनंत विस्तार के अँधेरे में खो जाने के सिवा और क्या हाथ लगेगा । खगोलशास्त्री लाखों, करोड़ों मील की दूरियों को 'प्रकाश वर्ष' से मापते हैं । लेकिन राजस्थान के मन ने तो युगों के भारी-भरकम गुना-भाग को पलक झपक कर निपटा दिया । इस बड़ी घटना को वह 'पलक दरियाव' की तरह याद रखे हैं–पलक झपकते ही दरिया का सूख जाना भी इसमें शामिल है और भविष्य में इस सूखे स्थल का क्षणभर में फिर से दरिया बन जाना भी ।

समय की अंतहीन धारा को क्षण-क्षण में देखने और विराट विस्तार को अणु में परखने वाली इस पलक ने, दृष्टि ने हाकड़ो को खो दिया । पर उसके जल को, कण-कण को, बूँदों में देख लिया । इस समाज ने अपने को कुछ इस रीति से ढाल लिया कि अखंड समुद्र खंड-खंड होकर ठाँव-ठाँव यानी जगह-जगह फैल गया । पाठ्यपुस्तकों से लेकर देश के योजना आयोग तक राजस्थान की, विशेषकर मरुभूमि की छवि एक सूखे, उजड़े और पिछड़े क्षेत्र की है । थार रेगिस्तान

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

का वर्णन तो कुछ ऐसा मिलेगा कि कलेजा सूख जाए । देश के सभी राज्यों में क्षेत्रफल और आबादी की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाला राजस्थान भूगोल की सब किताबों में वर्षा के मामले में सबसे अंतिम है । वर्षा को पुराने इंच में नापें या नए सेंटीमीटर में, वह यहाँ सबसे कम ही गिरती है । यहाँ पूरे बरस भर में वर्षा 60 सेंटीमीटर का औसत लिए है । देश की औसत वर्षा 110 सेंटीमीटर आँकी गई है । उस हिसाब से भी राजस्थान का औसत आधा ही बैठता है । लेकिन औसत बताने वाले आँकड़े भी यहाँ का कोई ठीक चित्र नहीं दे सकते । राज्य में एक छोर से दूसरे छोर तक कभी भी एक सी वर्षा नहीं होती । कहीं यह 100 सेंटीमीटर से अधिक है तो कहीं 25 सेंटीमीटर से भी कम ।

भूगोल की किताबें प्रकृति को, वर्षा को यहाँ 'अत्यंत कंजूस महाजन' की तरह देखती हैं और राज्य के पश्चिमी क्षेत्र को इस महाजन का सबसे दयनीय शिकार बताती हैं । इस क्षेत्र में जैसलमेर, बीकानेर, चूरू, जोधपुर और श्रीगंगानगर आते हैं । लेकिन यहाँ कंजूसी में भी कंजूसी मिलेगी । वर्षा का 'वितरण' बहुत असमान है । पूर्वी हिस्से से पश्चिमी हिस्से की तरफ आते-आते वर्षा कम-से-कम होती जाती है । पश्चिम तक जाते-जाते वर्षा सूरज की तरह 'डूबने' लगती है । यहाँ पहुँचकर वर्षा सिर्फ 16 सेंटीमीटर रह जाती है । इस मात्रा की तुलना कीजिए दिल्ली से, जहाँ 150 सेंटीमीटर से ज्यादा पानी गिरता है, तुलना कीजिए उस गोवा से, कोंकण से, चेरापूँजी से, जहाँ यह आँकड़ा 500 से 1000 सेंटीमीटर तक जाता है ।

मरुभूमि में सूरज गोवा, चेरापूँजी की वर्षा की तरह बरसता है । पानी कम और गरमी ज्यादा - ये दो बातें जहाँ मिल जाएँ वहाँ जीवन दूभर हो जाता है, ऐसा माना जाता है । दुनिया के बाकी मरुस्थलों में भी पानी लगभग इतना ही गिरता है, गरमी लगभग इतनी ही पड़ती है । इसलिए वहाँ बसावट बहुत कम ही रही है । लेकिन राजस्थान के मरुप्रदेश में दुनिया के अन्य ऐसे प्रदेशों की तुलना में न सिर्फ बसावट ज्यादा है, उस बसावट में जीवन की सुगंध भी है । यह इलाका दूसरे देशों के मरुस्थलों की तुलना में सबसे जीवंत माना गया है ।

इसका रहस्य यहाँ के समाज में है । राजस्थान के समाज ने प्रकृति से मिलने वाले इतने कम पानी का रोना नहीं रोया । उसने इसे एक चुनौती की तरह लिया और अपने ऊपर से नीचे तक कुछ इस ढंग से खड़ा किया कि पानी का स्वभाव समाज के स्वभाव में बहुत सरल ढंग से बहने लगा ।

इस 'सवाई' स्वभाव से परिचित हुए बिना यह कभी समझ में नहीं आएगा कि यहाँ पिछले एक हजार साल के दौर में जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर और फिर जयपुर जैसे बड़े शहर भी बहुत सलीके के साथ कैसे बस सके थे । इन शहरों की आबादी भी कोई कम नहीं थी । इतने कम पानी के इलाके में होने के बाद भी इन शहरों का जीवन देश के अन्य शहरों के मुकाबले कोई कम सुविधाजनक नहीं था । इनमें से हरेक शहर अलग-अलग दौर में लंबे समय तक सत्ता, व्यापार और कला का प्रमुख केंद्र भी बना रहा था । जब मुंबई, कोलकाता, चेन्नई जैसे आज के बड़े शहरों

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

की 'छठी' भी नहीं हुई थी तब जैसलमेर आज के ईरान, अफगानिस्तान से लेकर रूस तक के कई भागों से होनेवाले व्यापार का एक बड़ा केंद्र बन चुका था ।

जीवन की, कला की, व्यापार की, संस्कृति की ऊँचाइयों को राजस्थान के समाज ने अपने जीवन-दर्शन की विशिष्ट गहराई के कारण ही छुआ था । इस जीवन-दर्शन में पानी का काम एक बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था । सचमुच धेले भर के विकास के इस नए दौर ने पानी की इस भव्य परंपरा का कुछ क्षय जरूर किया है, पर वह उसे आज भी पूरी तरह तोड़ नहीं सका है । यह सौभाग्य ही माना जाना चाहिए ।

पानी के काम में यहाँ भाग्य भी है और कर्त्तव्य भी । वह भाग्य ही तो था कि महाभारत युद्ध समाप्त हो जाने के बाद श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र से अर्जुन को साथ लेकर वापस द्वारका इसी रास्ते से लौटे थे । उनका रथ मरुदेश पार कर रहा था । आज के जैसलमेर के पास त्रिकूट पर्वत पर उत्तुंग ऋषि तपस्या करते हुए मिले थे । श्रीकृष्ण ने उन्हें प्रणाम किया था और उनके तप से प्रसन्न होकर उन्हें वर माँगने कहा था । उत्तुंग का अर्थ है ऊँचा । वे सचमुच बहुत ऊँचे थे । उन्होंने अपने लिए कुछ नहीं माँगा । प्रभु से प्रार्थना की कि "यदि मेरे कुछ पुण्य हैं तो भगवन वर दें कि इस क्षेत्र में कभी जल का अकाल न रहे ।"

"तथास्तु", भगवान ने वरदान दिया था ।

लेकिन मरुभूमि का भागवान समाज इस वरदान को पाकर हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा । उसने अपने को पानी के मामले में तरह-तरह से कसा । गाँव-गाँव, ठाँव-ठाँव वर्षा को वर्ष भर सहेज कर रखने की रीति बनाई ।

रीति के लिए यहाँ एक पुराना शब्द **वोज** है । यानी रचना, युक्ति और उपाय तो है ही, सामर्थ्य, विवेक और विनम्रता के लिए भी इस शब्द का उपयोग होता रहा है । वर्षा की बूँदों को सहेज लेने का वोज विवेक के साथ रहा है और विनम्रता लिए हुए भी । यहाँ के समाज ने वर्षा को इंच या सेंटीमीटर में नहीं, अँगुलों या बित्तों में नहीं, बूँदों में मापा होगा । उसने इन बूँदों को करोड़ों बूँदों की तरह देखा और बहुत ही सजग ढंग से, वोज से इस तरल रजत की बूँदों को सँजोकर, पानी की अपनी जरूरत को पूरा करने की एक ऐसी भव्य परंपरा बना ली, जिसकी धवलधारा इतिहास से निकल कर वर्तमान तक बहती है और वर्तमान को भी इतिहास बनाने का वोज यानी सामर्थ्य रखती है ।

राजस्थान के पुराने इतिहास में मरुभूमि का या अन्य क्षेत्रों का भी वर्णन सूखे, उजड़े और एक अभिशप्त क्षेत्र की तरह नहीं मिलता । रेगिस्तान के लिए आज प्रचलित **थार** शब्द भी ज्यादा नहीं दिखता । अकाल पड़े हैं, कहीं-कहीं पानी का कष्ट भी रहा है पर गृहस्थों से लेकर जोगियों ने, कवियों से लेकर मांगणियारों ने, लंगाओं ने, हिंदू-मुसलमानों ने इसे 'धरती धोरां री' कहा है । रेगिस्तान के पुराने नामों में **स्थल** है, जो शायद हाकड़ो, समुद्र के सूख जाने से निकले स्थल का सूचक रहा हो । फिर स्थल का **थल** और **महाथल** बना और बोलचाल में **थली** और **धरधूधल**

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भी हुआ । थली तो एक बड़ी मोटी पहचान की तरह रहा है । बारीक पहचानें में उसके अलग-अलग क्षेत्र अलग-अलग विशिष्ट नाम लिए हुए थे । **माड़, मारवाड़, मेवाड़, मेरवाड़, ढूँढार, गोडवाड़, हाडौती** जैसे बड़े विभाजन, तो **दसरेक** और **धन्वदेश** जैसे छोटे विभाजन भी थे और इस विराट मरुस्थल के छोटे-बड़े राजा चाहे जितने रहे हों-नायक तो एक ही रहा है - श्रीकृष्ण । यहाँ उन्हें बहुत स्नेह के साथ **मरुनायकजी** की तरह पुकारा जाता है ।

मरुनायकजी का वरदान और फिर समाज के नायकों के वोज, सामर्थ्य का एक अनोखा संजोग हुआ । इस संजोग से **वोजतो-ओजतो** यानी हरेक द्वारा अपनाई जा सकने वाली सरल, सुंदर रीति को जनम मिला । कभी नीचे धरती पर क्षितिज तक पसरा हाकड़ो ऊपर आकाश में बादलों के रूप में उड़ने लगा था । ये बादल कम ही होंगे । पर समाज ने इनके समाए जल को इंच या सेंटीमीटर में न देख अनगिनत बूँदों की तरह देख लिया और इन्हें मरुभूमि में, राजस्थान भर में ठीक बूँदों की तरह ही छिटके **टाँकों, कुंड-कुंडियों, बेरियों, जोहड़ों, नाडियों, तालाबों, बावड़ियों** और **कुएँ, कुँइयों** को अखंड **हाकड़ो** को खंड-खंड नीचे उतार लिया ।

जसढोल, यानी प्रशंसा करना । राजस्थान ने वर्षा के जल का संग्रह करने की अपनी अनोखी परंपरा का, उसके जस का कभी ढोल नहीं बजाया । आज देश के लगभग सभी छोटे-बड़े शहर, अनेक गाँव, प्रदेश की राजधानियाँ और तो और देश की राजधानी तक खूब अच्छी वर्षा के बाद भी पानी जुटाने के मामले में बिलकुल कंगाल हो रही है । इससे पहले कि देश पानी के मामले में बिलकुल 'ऊँचा' सुनने लगे, सूखे माने गए इस हिस्से राजस्थान में, मरुभूमि में फली-फूली जल-संग्रह की भव्य परंपरा का जसढोल बजना ही चाहिए ।

पधारो म्हारे देस ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. 'हाकड़ो' राजस्थानी समाज के हृदय में आज भी क्यों रचा-बसा है ?
2. 'हेल' नाम समुद्र के साथ-साथ अन्य कौन-कौन से अर्थों को दर्शाता है ?
3. किस रेगिस्तान का वर्णन कलेजा सुखा देता है ?
4. भूगोल की किताबें किनको 'अत्यंत कंजूस महाजन' की तरह देखती हैं और क्यों ?
5. राजस्थानी समाज ने प्रकृति से मिलने वाले इतने कम पानी का रोना क्यों नहीं रोया ?
6. "यह राजस्थान के मन की उदारता ही है कि विशाल मरुभूमि में रहते हुए भी उसके कंठ में समुद्र के इतने नाम मिलते हैं ?" इस कथन का क्या अभिप्राय है ?
7. जल संग्रह कैसे करना चाहिए ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

8. त्रिकूट पर्वत कहाँ है ?
9. 'धरती धोरां री' किसे कहा गया है और क्यों ?
10. मरुनायकजी कहकर किसे पुकारा गया है ? उनकी भूमिका स्पष्ट करें ।
11. राजस्थान में वर्षा का क्या स्वरूप है ?
12. 'रीति' के लिए राजस्थान में 'वोज' शब्द है । यह क्या-क्या अर्थ रखता है ?
13. लेखक ने 'जसढोल' शब्द का किस अर्थ में प्रयोग किया है और क्यों ?
14. इस फीचर को पढ़कर आपको क्या शिक्षा मिली ? आप अपने जीवन में इसका उपयोग कैसे करेंगे ?
15. लेखक क्यों **'पधारो म्हारे देस'** कहते हैं ?

पाठ के आस-पास

1. राजस्थान में जल संरक्षण के लिए कुंड-कुंडियों, तालाब-कुँओं इत्यादि का उपयोग किया जाता है । आप अपने घरों में किस तरह जल का संरक्षण करना चाहेंगे ?
2. जल संरक्षण के महत्त्व पर अपने विद्यालय में एक गोष्ठी करें ।
3. जल संरक्षण की नई तकनीक के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा करें या जानकारी प्राप्त करें ।
4. पाठ में भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े जिन स्थानों का उल्लेख हुआ है उन्हें मानचित्र पर दर्शाएँ । साथ ही त्रिकूट पर्वत कहाँ है ? इसे भी दिखलाएँ ।
5. राजस्थान की मरुभूमि में एकमात्र बहने वाली नदी लूनी है । इसका प्रवाह क्षेत्र अपने शिक्षक से पूछें ।
6. डिंगल क्या है ? इसकी जानकारी अपने शिक्षक से प्राप्त करें ।

भाषा की बात

1. 'समुद्र' शब्द के पर्यायवाची बताएँ ।
2. **निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बताएँ और वाक्य में प्रयोग करें –**

   जल, रेत, समुद्र, पुराण, प्रकाश, स्थल, परंपरा, समाज
3. **दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखें –**

   विराट, प्राचीन, मरुभूमि, दृष्टि, युग, कला, जीवन
4. इस पाठ से राजस्थानी शब्दों को चुनें और उनका हिंदी पर्याय दें ।
5. 'वि' उपसर्ग से पाँच शब्द बनाएँ ।
6. **निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद करें –**

   संस्कृत, नायक, तथास्तु
7. **वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –**

   लहर, देश, दृष्टि, पलक, दरिया, नदी, मरुस्थल, समाज, धरती, आकाश, पानी

शब्द निधि :

अभिशप्त	:	अभिशाप से पीड़ित	विभाजन	:	बँटवारा
सामर्थ्य	:	क्षमता	दृष्टि	:	निगाह
धवल	:	उजला	विस्तार	:	फैलाव

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शरद जोशी

शरद जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में 21 मई 1931 ई० को हुआ । इनका बचपन कई शहरों में बीता । कुछ समय तक सरकारी नौकरी में रहने के बाद इन्होंने लेखन को ही आजीविका के रूप में अपना लिया । इन्होंने आरंभ में कुछ कहानियाँ लिखीं, फिर पूरी तरह व्यंग्य लेखन ही करने लगे । इन्होंने व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य कॉलम के अतिरिक्त हास्य-व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ और संवाद भी लिखे । हिंदी व्यंग्य को प्रतिष्ठा दिलाने वाले प्रमुख व्यंग्यकारों में शरद जोशी भी एक हैं । सन् 1991 में इनका देहांत हो गया ।

शरद जोशी की प्रमुख व्यंग्य कृतियाँ हैं – 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'तिलस्म', 'रहा किनारे बैठ', 'दूसरी सतह', 'प्रतिदिन' । दो व्यंग्य नाटक हैं – 'अंधों का हाथी' और 'एक था गधा' । एक उपन्यास है – 'मैं, मैं, केवल मैं, उर्फ कमलमुख बी० ए०' ।

शरद जोशी की भाषा अत्यंत सरल और सहज है । मुहावरों और हास-परिहास का हलका स्पर्श देकर इन्होंने अपनी रचनाओं को अधिक रोचक बनाया है । धर्म, अध्यात्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण, कुछ भी शरद जोशी की पैनी नजर से बच नहीं सका है । इन्होंने अपनी व्यंग्य रचनाओं में समाज में पाई जाने वाली सभी विसंगतियों का बेबाक चित्रण किया है । पाठक इस चित्रण को पढ़कर चकित भी होता है और बहुत कुछ सोचने को विवश भी ।

प्रस्तुत पाठ 'रेल-यात्रा' में शरद जोशी ने भारतीय रेल की अस्त-व्यस्तता, अव्यवस्था के बहाने भारतीय राजव्यवस्था की पोल खोली है । भारतीय समाज और राजनीति के चाल-चरित्र को समझने में यह व्यंग्य हमारी मदद करता है ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रेल-यात्रा

रेल विभाग के मंत्री कहते हैं कि भारतीय रेलें तेजी से प्रगति कर रही हैं । ठीक कहते हैं । रेलें हमेशा प्रगति करती हैं । वे मुंबई से प्रगति करती हुई दिल्ली तक चली जाती हैं और वहाँ से प्रगति करती हुई मुंबई तक आ जाती हैं । अब यह दूसरी बात है कि वे बीच में कहीं भी रुक जाती हैं और लेट पहुँचती हैं । पर अब देखिए ना, प्रगति की राह में रोड़े कहाँ नहीं आते । राजनीतिक पार्टियों के रास्ते में आते हैं, देश के रास्ते में आते हैं, तो यह तो बिचारी रेल है । आप रेल की प्रगति देखना चाहते हैं, तो किसी डिब्बे में घुस जाइए । बिना गहराई में घुसे आप सच्चाई को महसूस नहीं कर सकते ।

हमारे यहाँ कहा जाता है - ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें । आप पूछ सकते हैं कि इस छोटी-सी रोजमर्रा की बात में ईश्वर को क्यों घसीटा जाता है ? पर जरा सोचिए, रेल की यात्रा में ईश्वर के सिवा आपका है कौन ? एक वही तो है, जिसका नाम लेकर आप भीड़ में जगह बनाते हैं । भारतीय रेलों में तो यह है आत्मा सो परमात्मा और परमात्मा सो आत्मा ! अगर ईश्वर आपके साथ है, टिकिट आपके हाथ है, पास में सामान कम और जेब में पैसा ज्यादा है, तो आप मंजिल तक पहुँच जाएँगे, फिर चाहे बर्थ मिले न मिले । अरे, भारतीय रेलों का काम तो कर्म करना है । फल की चिंता वह नहीं करती । रेलों का काम एक जगह से दूसरी जगह जाना है । यात्री की जो भी दशा हो । जिंदा रहे या मुर्दा, भारतीय रेलों का काम उसे पहुँचा देना भर है । अरे जिसे जाना है, वह तो जाएगा । बर्थ पर लेटकर जाएगा, पैर पसारकर कर जाएगा । जिसमें मनोबल है, आत्मबल, शारीरिक बल और दूसरे किस्म के बल हैं, उसे यात्रा करने से नहीं रोक सकता । वे जो शराफत और अनिर्णय के मारे होते हैं, वे क्यू में खड़े रहते हैं, वेटिंग लिस्ट में पड़े रहते हैं । ट्रेन स्टार्ट हो जाती है और वे सामान लिए दरवाजे के पास खड़े रहते हैं । भारतीय रेलें हमें जीवन जीना सिखाती हैं । जो चढ़ गया उसकी जगह, जो बैठ गया उसकी सीट, जो लेट गया उसकी बर्थ । अगर आप यह सब कर सकते हैं, तो अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हो सकते हैं । भारतीय रेलें तो साफ कहती हैं - जिसमें दम, उसके हम । आत्मबल चाहिए मित्रो ! जब रेलें नहीं चली थीं, यात्राएँ कितनी कष्टप्रद थीं । आज रेलें चल रही हैं, यात्राएँ फिर भी इतनी कष्टप्रद हैं । यह कितनी खुशी की बात है कि प्रगति के कारण हमने अपना इतिहास नहीं छोड़ा । दुर्दशा तब भी थी, दुर्दशा आज भी है । ये रेलें, ये हवाई जहाज, यह सब विदेशी हैं । ये न हमारा चरित्र बदल सकती हैं और न भाग्य ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भारतीय रेलों ने एक बात सिद्ध कर दी है कि बड़े आराम की मंजिलें छोटे आराम से तय होती हैं । और बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है । जैसे आप ससुराल जा रहे हैं, महीने-भर पहले आरक्षण करा लिया है, घंटा-भर पहले स्टेशन पहुँच गए हैं, बर्थ पर बिस्तर फैला दिया है और रेल उस दिशा में दौड़ने लगी है, जिस दिशा में आपकी ससुराल है । ससुराल बड़ा आराम है, आरक्षण छोटा आराम है । बड़े आराम की मंजिल छोटे आराम से तय होती है ।

इसी तरह बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है । मानिए आपके बाप मर गए । (माफ कीजिए, मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ । भगवान उनकी उमर लंबी करे अगर वे पहले ही न मर गए हों तो ।) आप खबर सुनते हैं और अपने गाँव जाने के लिए फौरन रेल में चढ़ जाते हैं । भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज । आप सबकुछ सहन करते खड़े हैं । पिताजी जो मर गए हैं । बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है ।

मैं एक उदाहरण देता हूँ । मानिए एक कुँवारे लड़के को उसका दोस्त कहता है कि जिस लड़की से तुम्हारी शादी की बात चल रही है, वह होशंगाबाद अपने मामा के घर आई है, देखना चाहो तो फौरन जाकर देख आओ । आरक्षण का समय नहीं है । कुँवारा लड़का आव देखता है न ताव और रेल के डिब्बे में चढ़ जाता है । वही भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज । मगर क्या करे ? लड़की से शादी जो करनी है, जिंदगी भर के लिए मुसीबत जो उठानी है । बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है ।

भारतीय रेलें चिंतन के विकास में बड़ा योगदान देती हैं । प्राचीन मनीषियों ने कहा है कि जीवन की अंतिम यात्रा में मनुष्य खाली हाथ रहता है । क्यों भैया ? पृथ्वी से स्वर्ग तक या नरक तक भी रेलें चलती हैं । जाने वालों की भीड़ बहुत ज्यादा है । भारतीय रेलें भी हमें यही सिखाती हैं । सामान रख दो तो बैठोगे कहाँ ? बैठ जाओगे तो सामान कहाँ रखोगे ? दोनों कर दोगे तो दूसरा कहाँ बैठेगा ? वो बैठ गया तो तुम कहाँ खड़े रहोगे ? खड़े हो गए तो सामान कहाँ रहेगा ? इसलिए असली यात्री वो, जो खाली हाथ । टिकिट का वजन उठाना भी जिसे कबूल नहीं । प्राचीन ऋषि-मुनियों ने ये स्थिति मरने के बाद बताई है । भारतीय रेलें चाहती हैं, वह जीते-जी आ जाए । चरम स्थिति, परम हलकी अवस्था, खाली हाथ, बिना बिस्तर, मिल जा बेटा अनंत में, सारी रेलों को अंततः ऊपर जाना है ।

टिकिट क्या है ? देह धरे को दंड है । मुंबई की लोकल ट्रेन में, भीड़ से दबे, कोने में सिमटे यात्री को जब अपनी देह भारी लगती है, वह सोचता है कि यह शरीर न होता, केवल आत्मा होती, तो कितने सुख से यात्रा करती । भारतीय रेलें हमें मृत्यु का दर्शन समझाती हैं और अक्सर पटरी से उतरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती हैं । कोई नहीं कह सकता कि रेल में चढ़ने के बाद वह कहाँ उतरेगा ? अस्पताल में या श्मशान में । लोग रेलों की आलोचना करते हैं । अरे रेल चल रही है और आप उसमें जीवित बैठे हैं, यह अपने में कम उपलब्धि नहीं है ।

रेल-यात्रा करते हुए हम अक्सर विचारों में डूब जाते हैं । विचारों के अतिरिक्त वहाँ कुछ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

डूबने को होता भी नहीं । रेल कहीं भी खड़ी हो जाती है । खड़ी है तो बस खड़ी है । जैसे कोई औरत पिया के इंतजार में खड़ी है । उधर प्लेटफॉर्म पर यात्री खड़े इसका इंतजार कर रहे हैं । यह जंगल में खड़ी पता नहीं किसका इंतजार कर रही है । खिड़की से चेहरा टिकाए हम सोचते रहते हैं । पास बैठा यात्री पूछता है - "कहिए साहब, आपका क्या ख्याल है, इस कंट्री का कोई फ्यूचर है या नहीं ?"

"पता नहीं ।" आप कहते हैं, "अभी तो ये सोचिए कि इस ट्रेन का कोई फ्यूचर है या नहीं" ?

फिर एकाएक रेल को मूड आ जाता है और वह चल पड़ती है । आप हिलते-डुलते, किसी सुंदर स्त्री का चेहरा देखते चल पड़ते हैं । फिर किसी स्टेशन पर वह सुंदर स्त्री भी उतर जाती है । एकाएक लगता है, सारी रेल खाली हो गई । मन करता है हम भी उतर जाएँ । पर भारतीय रेलों में आदमी अपने टिकिट से मजबूर होता है । जिसका जहाँ का टिकिट होता है, वह वहीं तो उतरेगा । उस सुंदर स्त्री का यहाँ का टिकिट था, वह यहाँ उतर गई । हमारा आगे का टिकिट है, हम वहाँ उतरेंगे ।

भारतीय रेलें कहीं-न-कहीं हमारे मन को छूती हैं । वह मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती हैं । एक ऊँघता हुआ यात्री दूसरे ऊँघते हुए यात्री के कंधे पर टिकने लगता है । बताइए ऐसी निकटता भारतीय रेलों के अतिरिक्त कहाँ देखने को मिलेगी ? आधी रात को, ऊपर की बर्थ पर लेटा यात्री, नीचे की बर्थ पर लेटे यात्री से पूछता है - यह कौन-सा स्टेशन है ? तबीयत होती है कहूँ - अबे चुपचाप सो, क्यों डिस्टर्ब करता है ? मगर नहीं वह भारतीय रेल का यात्री है और मातृभूमि पर यात्रा कर रहा है । वह जानना चाहता है कि इस समय एक भारतीय रेल ने कहाँ तक प्रगति कर ली है ?

आधी रात के घुप्प अँधेरे में मैं मातृभूमि को पहचानने का प्रयत्न करता हूँ । पता नहीं किस अनजाने स्टेशन के अनचाहे सिगनल पर भाग्य की रेल रुकी खड़ी है । ऊपर की बर्थ वाला अपने प्रश्न को दोहराता है । मैं अपनी खामोशी को दोहराता हूँ । भारतीय रेलें हमें सहिष्णु बनाती हैं । उत्तेजन के क्षणों में शांत रहना सिखाती हैं । मनुष्य की यही प्रगति है ।

भारतीय रेलें आगे बढ़ रही हैं । भारतीय मनुष्य आगे बढ़ रहा है । आपने भारतीय मनुष्य को भारतीय रेल के पीछे भागते देखा होगा । उसे पायदान से लटके, डिब्बे की छत पर बैठे, भारतीय रेलों के साथ प्रगति करते देखा होगा । कई बार मुझे लगता है कि भारतीय मनुष्य भारतीय रेलों से भी आगे है । आगे-आगे मनुष्य बढ़ रहा है, पीछे-पीछे रेल आ रही है । अगर इसी तरह रेल पीछे आती रही, तो भारतीय मनुष्य के पास सिवाय बढ़ते रहने के कोई रास्ता नहीं रहेगा । बढ़ते रहो - रेल में सफर करते, दिन झगड़ते, रात-भर जागते, बढ़ते रहो । रेलनिशात् सर्व भूतानां ! जो संयमी होते हैं, वे रात-भर जागते हैं । भारतीय रेलों की यही प्रगति है, जब तक एक्सीडेंट न हो, हमें जागते रहना है ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

पाठ के साथ

1. मनुष्य की प्रगति और भारतीय रेल की प्रगति में लेखक क्या देखता है ?
2. "आप रेल की प्रगति देखना चाहते हैं तो किसी डिब्बे में घुस जाइए" – लेखक यह कहकर क्या दिखाना चाहता है ?
3. भारतीय रेलें हमें किस तरह का जीवन जीना सिखाती हैं ?
4. 'ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें।' इस कथन से लेखक पाठकों को भारतीय रेल की किस अव्यवस्था से परिचित कराना चाहता है ?
5. "जिसमें मनोबल है, आत्मबल, शारीरिक बल और दूसरे किस्म के बल हैं, उसे यात्रा करने से कोई नहीं रोक सकता। वे जो शराफत और अनिर्णय के मारे होते हैं, वे क्यू में खड़े रहते हैं, वेटिंग लिस्ट में पड़े रहते हैं।" यहाँ पर लेखक ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था के एक बहुत बड़े सत्य को उद्घाटित किया है 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। इस पर अपने विचार संक्षेप में व्यक्त कीजिए।
6. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट करें-
   (क) 'दुर्दशा तब भी थी, दुर्दशा आज भी है। ये रेलें, ये हवाई जहाज, यह सब विदेशी हैं। ये न हमारा चरित्र बदल सकती हैं और न भाग्य।'
   (ख) 'भारतीय रेलें हमें सहिष्णु बनाती हैं। उत्तेजना के क्षणों में शांत रहना सिखाती हैं। मनुष्य की यही प्रगति है।'
   (ग) 'भारतीय रेलें हमें मृत्यु का दर्शन समझाती हैं और अक्सर पटरी से उतरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती हैं।'
   (घ) 'कई बार मुझे लगता है भारतीय मनुष्य भारतीय रेलों से भी आगे है। आगे-आगे मनुष्य बढ़ रहा है, पीछे-पीछे रेल आ रही है।'
7. रेल-यात्रा के दौरान किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है ? पठित पाठ के आधार पर बताइए।
8. लेखक अपने व्यंग्य में भारतीय रेल की अव्यवस्था का एक पूरा चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है। पठित पाठ के आधार पर भारतीय रेल की कुछ अव्यवस्थाओं का जिक्र करें।
9. 'रेल विभाग के मंत्री कहते हैं कि भारतीय रेलें तेजी से प्रगति कर रही हैं। ठीक कहते हैं ! रेलें हमेशा प्रगति करती हैं।' इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक भारतीय राजनीति व राजनेताओं का कौन-सा पक्ष दिखाना चाहता है। अपने शब्दों में बताइए।
10. संपूर्ण पाठ से व्यंग्य के स्थल और वाक्य चुनिए और उनके व्यंग्यात्मक आशय स्पष्ट कीजिए।
11. इस पाठ में व्यंग्य की दोहरी धार है – एक विभिन्न वस्तुओं और विषयों की ओर तो दूसरी अपनी अर्थात् भारतीय जन की ओर। पाठ से उदाहरण देते हुए यह प्रमाणित कीजिए।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

12. भारतीय रेलें चिंतन के विकास में योगदान देती हैं । कैसे ? व्यंग्यकार की दृष्टि से विचार कीजिए ।
13. टिकिट को लेखक ने 'देह धरे को दंड' क्यों कहा है ?
14. किस अर्थ में रेलें मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती हैं ?
15. "जब तक एक्सीडेंट न हो हमें जागते रहना है" लेखक ऐसा क्यों कहता है ?

पाठ के आस-पास

1. लेखक ने भारतीय रेल की अव्यवस्थित यात्रा पर व्यंग्य किया है । कई बार आपने भी ऐसी यात्राएँ की होंगी, जिनमें आपको धक्का-मुक्की, परेशानियाँ उठानी पड़ी होंगी । आप अपना अनुभव अपने शब्दों में लिखिए ।
2. 'रेल-यात्रा' में लेखक भारतीय रेल की अव्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं । आपको यह व्यंग्य कितना प्रभावित करता है और क्यों ? संक्षेप में बताइए ।
3. होशंगाबाद कहाँ है ? लेखक उसका जिक्र क्यों करता है ?
4. बिहार के मानचित्र में सभी रेलमार्गों को चिह्नित करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों से विदेशज शब्दों को छाँटिए –

   रोजमर्रा, मंत्री, अनंत, सीट, स्टेशन, चिंतन, बर्थ, लोकल, यात्री, ईश्वर, स्टार्ट, फौरन, थुक्का-फजीहत, कबूल, प्राचीन, काम, हाथ, शराफत

2. निम्नांकित वाक्यों में अव्यय को रेखांकित करें –

   (क) अरे जिसे जाना है, वह तो जाएगा ।
   (ख) सारी रेलों को अंततः ऊपर जाना है ।
   (ग) उधर प्लेटफॉर्म पर यात्री खड़े इसका इंतजार कर रहे हैं ।
   (घ) जो संयमी होते हैं, वे रातभर जागते हैं ।
   (च) मगर क्या करें ?
   (छ) इसलिए असली यात्री वो, जो हो खाली हाथ ।

3. निम्नांकित शब्दों का विग्रह करें एवं समास बताएँ –

   रेलयात्रा, रेल विभाग, अनंत, अनचाहा, अनजाना

4. निम्नांकित तद्भव शब्दों का तत्सम रूप लिखिए –

   पुराना, गाँव, हाथ, काम, हल्दी

शब्द निधि :

रोजमर्रा	:	प्रतिदिन, दैनंदिन	क्यू	:	कतार, पंक्ति
मनोबल	:	मन का बल	मंजिलें	:	गंतव्य स्थान
शराफत	:	अच्छाई, सभ्य, सज्जनता	नगण्य	:	नाचीज, तुच्छ
अनिर्णय	:	निर्णयहीनता की अवस्था	घुप्प अँधेरे	:	घना अँधेरा, गहरा अँधेरा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जगदीश नारायण चौबे

जगदीश नारायण चौबे का जन्म 1939 ई० में मोर, पटना (बिहार) में हुआ । इनके पिता का नाम पंडित अरिमर्दन चौबे एवं माता का नाम श्रीमती देवपति देवी था । इनकी शिक्षा-दीक्षा गाँव और पटना में हुई। पटना विश्वविद्यालय से इन्होंने हिंदी में एम० ए० और डी० लिट० किया और पटना विश्वविद्यालय में ही अध्यापक बने । 1951 ई० में इनकी पहली कविता 'राष्ट्रवाणी' में प्रकाशित हुई । 1953 ई० में इनका पहला कविता संग्रह 'एकाकी' प्रकाशित हुआ । इसकी भूमिका शिवपूजन सहाय ने लिखी । इनकी दूसरी कविता पुस्तक 'गीतकार' की भूमिका राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी और एक संभावनाशील कवि के रूप में पहचाना । 1962 ई० में इन्हें बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् का 'उदीयमान साहित्यकार पुरस्कार' और परिषद् से ही 2004 में 'साहित्यकार सम्मान' प्राप्त हुआ ।

1983 ई० में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से 'उपन्यास की भाषा' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जो इनके शोध का विषय भी था । इनके दो व्यंग्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं – 'तारीफ के पुल' और 'देखो जग बौराना' । इन्होंने बच्चों के लिए अनेक कविताएँ और कहानियाँ लिखी हैं । 'दादी का कंबल', 'पिंड छूट गया', 'पीपल वाला भूत', 'दादाजी', 'गिरोह वाले बाबा' आदि बालकथाएँ हैं । 'इन्द्रधनुष कैसे बनता है', 'अच्छे बच्चे', 'हँसते-गाते गिनती सीखो' आदि बालकविताएँ खूब चर्चित हुईं । पटना विश्वविद्यालय का गान 'गंगा तट पर ज्ञान हिमालय' इनके द्वारा ही रचा गया है ।

हिंदी जगत् में जगदीश नारायण चौबे की पहचान एक सधे हुए गद्यकार की है । प्रसिद्ध कवि नागार्जुन ने इनके गद्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है । प्रस्तुत पाठ 'निबंध' में भी उनके काटदार गद्य के नमूने भरे पड़े हैं । यहाँ संकलित पाठ एक सारग्राही अनुभवसमृद्ध शिक्षक साहित्यकार की सोद्देश्य रचना है जिसमें लालित्य और प्रयोजन दोनों के ही गुण पर्याप्त हैं । यह पाठ छात्रों में निबंध लिखने का हुनर तो विकसित करेगा ही, साथ ही उनकी रचनात्मकता के विकास में भी सहायक होगा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निबंध

निबंध-लेखन अथवा निबंध-लेखन के लिए पाठ तैयार करने की दिशा में कई बातें विचारणीय हैं । निबंध-लेखन का सही ज्ञान नहीं होने के कारण छात्र परीक्षा के दिनों में संभावित प्रश्नों के लिए शिक्षक-ज्योतिषियों की तलाश में भटकते रहते हैं । ऐसा आत्मविश्वास की कमी के कारण तथा निबंध संबंधी प्रचारित धारणाओं की वजह से होता है । पाठलेखक को स्पष्ट बता देना चाहिए कि संसार में जितनी वस्तुएँ हैं, सभी निबंध का विषय बन सकती हैं और ऐसी स्थिति में आगामी प्रश्नों की कोई संभावना घोषित नहीं की जा सकती । भ्रांत और निर्मूल धारणाओं को भी दूर करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए, क्योंकि अबतक हिंदी निबंध पर छात्रलेखकों द्वारा इतना अत्याचार किया गया है, जितना और किसी लेखन पर नहीं । परिणामस्वरूप परीक्षकपाठक ऐसे निबंधों को न तो आद्योपांत पढ़ पाते हैं और न छात्रलेखकों को अच्छे अंक ही मिल पाते हैं। निबंध लिखने के समय यदि पढ़ने वाले का ध्यान रखा जाए तो बहुत सारी गड़बड़ियाँ दूर हो सकती हैं । इतनी सतर्कता और जागरूकता आ जाएगी कि अत्याचार करने की हिम्मत ही नहीं होगी । चूँकि बोलने और लिखने के समय सुननेवाले और पढ़नेवाले का ख्याल तो हम रखते ही हैं । क्यों न हम निबंध लिखने के समय उस अज्ञात परीक्षकपाठक को ध्यान में रखें । बहुत कुछ के साथ वह एक आदमी भी है और उसे भी हमारी तरह अच्छी चीजें अच्छी और बुरी चीजें बुरी लगती होंगी । पिछले तेईस वर्षों से मैं छात्रों से पूछता आ रहा हूँ कि क्या वे उत्तर लिखने के समय परीक्षक का, जो पाठक है, ध्यान रखते हैं ? उत्तर में नहीं ही सुनता हूँ । फिर पाठक और लेखक के बीच सेतु कैसे बनेगा ? सबसे बड़ी भ्रांत धारणा पृष्ठसंख्या को लेकर है । पाठलेखक इस निराधार प्रचार को निर्मूल करें । निबंध की कोई निर्धारित या निश्चित पृष्ठसंख्या नहीं है । सच तो यह है कि निबंध के कलेवर बढ़ने के साथ-साथ उसका नाम भी बदल जाता है, जैसे प्रबंध, महानिबंध, शोध-प्रबंध, शोध-निबंध आदि । निबंध विचारों की सुनियोजित अभिव्यक्ति है, इसलिए उसमें कसाव होगा, ढीलापन नहीं । आकस्मिक, लेकिन निरंतर प्रवाह निबंध के लिए अनिवार्य है । फ्रैंसिस बेकन अथवा आचार्य शुक्ल के निबंध इसके प्रमाण हैं । छात्रों के निबंध प्रायः अनंत पृष्ठों के होते हैं, कुछ अज्ञानतावश और कुछ स्पर्द्धावश । अज्ञानतावश, इसलिए कि वे यह मानते ही नहीं कि निबंध दस पृष्ठों से भी कम का हो सकता है और स्पर्द्धावश इसलिए कि अमुक ने कागज लिया तो मैं क्यों न लूँ ? अगर बातों को सुरुचिपूर्ण ढंग से कहने की कला आती हो तो निबंध अनेक पृष्ठों का भी हो सकता है और उसे पढ़ने में पाठक को आनंद भी आएगा तथा छात्रों को

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अंक भी बढ़िया मिलेंगे, लेकिन ऐसा होता बहुत कम है और यह बात मैं पिछले अनुभवों के आधार पर कह रहा हूँ। निबंध पर जिस अत्याचार की बात मैं पहले कर चुका हूँ, वह कई तरफ से होता है; विषय-प्रतिपादन के साथ, विचारों के पल्लवन के साथ, भाषा और शैली के साथ; जिसका नतीजा यह होता है कि हिंदी निबंध नीरस, बोझिल और उबाऊ हो जाता है।

पाठलेखक को यह भी बताना होगा कि निबंध, खासकर हिंदी निबंध न तो कहीं की ईंट और कहीं के रोड़े से निर्मित होता है और न भानुमती का पिटारा ही है। जानते हैं ? हिंदी निबंध में सब कुछ रहता है। क्या नहीं रहता ? भूगोल, इतिहास, फिजिक्स, केमिस्ट्री यानी वह सब कुछ, जो हम पढ़ या जान चुके होते हैं और उनका अन्यत्र इस्तेमाल करने से अबतक डरते रहे हैं। हिंदी निबंध में सभी उलजलूल, ऊटपटांग बातों की खपत हो जाती है, मानो हिंदी निबंध लेखन का दिन इनके उद्धार का दिन हो ! इतना ही नहीं, हिंदी निबंध में अंग्रेजी का उद्धरण हम जरूर देंगे, भले ही वे अशुद्ध ही क्यों न हों। ऐसा शायद अंग्रेजी का रोब गालिब करने अथवा उसके वर्तमान वर्चस्व को अमिट-अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए किया जाता है। मैं उद्धरणों के विरुद्ध नहीं हूँ। अपनी बात की पुष्टि अथवा दूसरे की बात का खंडन करने के लिए निबंध में उद्धरण आवश्यक होते हैं। हिंदीतर भाषाओं का उद्धरण जब भी दें, इस बात का ध्यान रखें कि उसका हिंदी अनुवाद पहले दे दें, और बाद में टिप्पणी में मूल पंक्तियों का कम-से-कम लेखक के नाम के साथ, हवाला अवश्य दे दें। ऐसा जो नहीं करते, वे उद्धरण को सजावट या अलंकरण का सस्ता मजाकिया साधन मानते हैं और ऐसी हालत में वह उद्धरण पाण्डित्य का द्योतक न बनकर, बेवकूफी का उद्घोषक बन जाता है।

हिंदी निबंध की दुर्दशा का एक कारण यह भी है कि छात्र उसे रबर समझकर मनमानी खींचतान करते हैं, जिससे एक पृष्ठवाला निबंध कम-से-कम दो-तीन पृष्ठों तक खिंच ही जाता है। 'भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत एक धर्म प्रधान देश है' आदि अनेक ऐसे आर्ष वाक्य हैं, जिनका सदियों से हिंदी-निबंधों में प्रयोग हो रहा है और, तब 'अतएव अर्थात् शैली' के द्वारा इन वाक्यों को लमारकर पूरे पृष्ठ को भद्दे तरीके से भर दिया जाता है, जैसे "भारत एक कृषि प्रधान देश है। अर्थात् भारत में कृषि की प्रधानता है। तात्पर्य यह कि भारत में कृषक रहते हैं। कहने का मतलब यह है कि भारत के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर करते हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि भारत किसानों का देश है।" यह दुर्दशा नहीं तो क्या है ? पाठ लेखक के लिए आवश्यक है कि वह ऐसी आवृत्तियों से बचते हुए दूसरों को भी बचाने का प्रयास करें।

निबंध-लेखन में क्या नहीं करना चाहिए के बाद अब क्या करना चाहिए की चर्चा करूँगा।

अच्छे निबंध के लिए कल्पनाशक्ति की आवश्यकता है। यूँ भी कुछ अच्छा करने के लिए जीवन में कल्पना की जरूरत पड़ती है। कल्पना केवल कलाकारों की चीज नहीं है, विज्ञान के मूल में भी कल्पना ही है। किसी भी चीज को सुंदर और सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए कल्पना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

से काम लेना अत्यावश्यक हो जाता है । कल्पना अज्ञातलोक का प्रवेशद्वार है । इसका सहारा लेकर एक ही विषय पर हजारों छात्र हजारों प्रकार के निबंध लिख सकते हैं, जबकि "परिचय लाभ-हानि-उपसंहार" वाली पुरातन रीति पर लिखे गए हजार निबंध लगभग एक ही तरह के होते हैं । बिलकुल पिटी-पिटाई लीक । एकदम एक-सी पहुँच और पकड़ । कहीं भी नवीनता या नियंत्रण नहीं । मैंने अभ्यासवर्गों में 'गाय' पर निबंध लिखवाकर छात्रों को परखा है । कॉलेज में आकर भी वे लगभग शतप्रतिशत वही बातें लिखते हैं, जो चौथे-पाँचवें वर्ग में लिखा करते थे—परिचय, आकार-प्रकार, कहाँ-कहाँ पाई जाती है, खान-पान, लाभ, हानि और उपसंहार । लगता है कि गाय तो खूँटे में ही बँधी रह गई, इसके बाहर लिखने वालों की दृष्टि और बुद्धि भी इतने वर्षों में बथान से बाहर नहीं आ पाई । यहीं आवश्यकता पड़ती है कल्पना की, अपने विषय की नवीनता तथा प्रतिपादन को आकर्षक बनाने के लिए । जिनके पास गाय है और जिनके पास गाय नहीं है, जिन्हें गाय खरीदनी है और जिन्हें गाय बेचनी है, जिन्हें आज तक गाय का दूध नहीं मिला अथवा जिन्हें गाय ने कभी पटक दिया था, सभी गाय के बारे में एक ही बात लिखते हैं; जो झूठ भी है और रटी-रटाई भी । कल्पना के द्वारा उस विषय के विभिन्न पक्षों से साक्षात्कार करके, उसकी असंख्य परतों को उकेर करके निबंध को ऐसा बनाया जा सकता है कि उसे चाव के साथ आद्योपांत पढ़ लें । कृषि, कृषक, डेरी फार्म, चर्मोद्योग, संस्कृति, राजनीति, गोशाला, गोरक्षिणी, काँजीघर, चारागाह, दुग्धोत्पादन, मूल्यवृद्धि, सांप्रदायिक सद्भाव, गोपूजा, गोरक्षा और गोपालन जैसे अनेक पक्ष हैं, जिनकी तरफ निगाह जानी चाहिए । गोदान पर तो उपन्यास ही है । गवाक्ष, गवेषणा, गोधूलि, गोचारण आदि शब्द गाय के कारण ही बने हैं । गोबर गैस प्लांट अथवा ईंधन संबंधी समस्याओं को लेकर भी गाय पर निबंध लिख सकते हैं । और तो और, पटने में तो गाय पर बढ़िया निबंध लिखने के लिए कई प्रेरणास्रोत हैं । सड़क की सड़क बथान बनी हुई है । कौन-सी सड़क है, जहाँ गायें साँढ़ की तरह नहीं घूमतीं । कौन ऐसा गोभक्त है, जो दूह लेने के बाद गायों को खुला नहीं छोड़ देता । लोगों के जानमाल की हिफाजत तथा यातायात की सुविधा के लिए पटना के जिलाधीश की हिदायत पिछले सप्ताह आपलोगों ने पढ़ी होगी । 'एक प्याली चाय' पर ही निबंध लिखना है तो इसके विभिन्न पहलुओं से भी कल्पना हमारा परिचय कराएगी । दूध का नहीं होना, चीनी का नहीं मिलना, बिजली नहीं रहने के कारण नल का नहीं खुलना आदि अनेक पहलू हैं । मौसम, मनःस्थिति, पिछला समाचार, सुबह की कोई खबर आदि दूसरा पहलू हैं । एक प्याली चाय यानी भारत का बजट, भारत की आर्थिक अवस्था या भारत की अर्थनीति का पक्का आधार । एक प्याली चाय का मतलब है एक प्याला उत्पाद कर चाय पर, चीनी पर, प्याली पर, पानी पर और लगभग दूध पर भी । चाय उद्योग, चाय मजदूर, चाय व्यवसाय, चाय निर्यात, भारत में चाय के विदेशी उद्योगपति आदि पर भी लिखा जा सकता है । मेहमाननवाजी के लिए आजकल सबसे सस्ता और सुभीता वाला रास्ता है—एक प्याली चाय । कल्पना के द्वारा हम अपरिचित से अपरिचित विषय को भी हृदयंगम कर सकते हैं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दूसरा आवश्यक तत्त्व है व्यक्तिगत अनुभव । कल्पना के द्वारा उस विषय से परिचित होकर उस आधार पर अपने अनुभव गढ़ सकते हैं, जो निबंध को आकर्षक बनाएँगे । निबंध वस्तुनिष्ठ भी होते हैं, लेकिन उनका क्षेत्र दूसरा होता है । छात्र निस्संग होकर जब निबंध लिखते हैं, तो पूरे निबंध में विषय से उनके जुड़ने का भाव ढूँढ़े नहीं मिलता । बिलकुल कटा-कटा सा बर्ताव और चाहिए-चाहिए की रटंत । निबंध को आकर्षक, विश्वासोत्पादक तथा रोचक बनाने के लिए विषय से जुड़ना और जुड़कर अपने अनुभवों का तर्कसंगत ढंग से उल्लेख करना नितांत आवश्यक है । आज निबंध आत्मनिष्ठ होते हैं । वैयक्तिक निबंध को ही आज ललित निबंध कहा जाता है । शास्त्रीय संगीत के गाढ़ेपन को जिस प्रकार थोड़ा घोलकर सुगम संगीत बना दिया गया है, उसी तरह निबंध को भी लोकप्रिय बनाने के लिए उसकी प्राचीन शास्त्रीयता को एक हद तक ढीला करके ललित्य तत्त्व से मढ़ दिया गया है । डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, डॉ० कुबेरनाथ राय, डॉ० विवेकी राय आदि अनेक लेखक ललित निबंध के समर्थ और साक्षी हस्ताक्षर हैं । जिसने गाय को अपने घर पर नजदीक से देखा है उसका अनुभव उस आदमी से भिन्न होगा, जिसने गाय को बहुत नजदीक से बीच सड़क पर देखा है । गाँव में नाद पर सानी खाती हुई गाय और शहर में किसी के बागीचे में घुसकर फूल खाती हुई गाय के अनुभव आसानी से रचे जा सकते हैं । उसी तरह चाय की लत लग जाने के बाद किसी खास जगह पर एक प्याली चाय नहीं मिल पाने की छटपटाहट और चाय नहीं पीने वाले उस परिवार की मानसिकता के अनुभव भी बुने जा सकते हैं ।

छात्रजीवन से संबंधित सैंकड़ों समस्याएँ हैं और हम उनका बखान ऊपर-ऊपर से करते हैं । क्यों नहीं, हम उन समस्याओं से जुड़ें, उनमें डूबें और प्राप्त अनुभवों का जिक्र करें ? और यह सब उस पल भी हो सकता है, जब हम निबंध लिखना शुरू करने जा रहे हैं । कल्पना के द्वारा विषय से संबंध स्थापना और फिर अनुभवों का सृजन डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं ?' इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है । विषय बिलकुल अनसुना, लेकिन कल्पना और निजी संपर्क के आधार पर प्रतिपादन इतना विश्वसनीय कि पाठक विस्मयविमुग्ध रह जाता है । निबंध छोटा ही है, किंतु उतने में ही मनुष्य की आदिम व्यवस्था से लेकर आज तक की जय-यात्रा का समस्त वृत्तांत तथा सभ्यता के बाद भी मनुष्य के भीतरवाले पशु का बढ़ते नाखूनों के रूप में सिर उठाना हमारे विचारों को झकझोर देता है । सूझबूझ से काम लेने पर हमारे निबंध भी प्रेरणादायी हो सकते हैं ।

यूँ तो कल्पना और व्यक्तिगत अनुभवों के मेल से बढ़िया निबंध लिखे जा सकते हैं, परंतु निबंध को अगर वजनदार बनाना हो तो तीसरा तत्त्व भी है । विषय से संबंधित आँकड़े, पुस्तकीय ज्ञान, पत्र-पत्रिकाओं की सूचनाएँ तथा विभिन्न लेखों-निबंधों से प्राप्त जानकारियाँ, इन सबों का यथास्थान उल्लेख करके निबंध को विचारपूर्ण बनाया जा सकता है । ध्यान इतना जरूर रखना होगा कि परीक्षा में इस तरह के निबंध बहुत ऊबाऊ अथवा बहुत शोधमुखी न हो जाएँ । डॉ० हजारी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

प्रसाद द्विवेदी और डॉ० विद्यानिवास मिश्र के वैयक्तिक निबंध इस कोटि में आते हैं, लेकिन वे कहीं से भी ऊबाऊ प्रतीत नहीं होते ।

निबंध कहाँ से शुरू करें और कहाँ खतम करें, यह भी छात्र पूछते नजर आते हैं । यूँ शुरू तो कहीं से भी किया जा सकता है, उस पंक्ति से भी जिससे खतम करना तय कर लिया है । फिर भी 'प्रारंभ' ऐसा रोचक हो कि पाठक पढ़ने के लिए लालायित हो उठे । प्रारंभिक पंक्तियों में उत्सुकता जगानेवाली क्षमता जरूर होनी चाहिए । 'भारत अब कृषि प्रधान देश नहीं है', 'मैं अपनी गाय बेचना चाहता हूँ', 'एक प्याली चाय की कीमत अब चार रुपए हो जाएगी', 'कल से चाय पीना-पिलाना बंद' आदि कुछ नमूने हैं, जिनसे विषय में प्रवेश करने के लिए द्वार खोला जा सकता है । अंत करना तो बहुत आसान है । जहाँ लगे कि अब मेरे पास कहने को कुछ नहीं है, बस वहीं और उसी क्षण लिखना बंद कर दें । कोई मोह-ममता नहीं, कोई 'एतदर्थ, अर्थात्' नहीं । निबंध का स्वाभाविक अंत सर्वोत्तम होता है ।

अंत में भाषा संबंधी कुछ बातें । पाठ लेखक का कर्त्तव्य है कि वह छात्र को सही भाषा प्रयोग संबंधी उदाहरण अपने लेखन के जरिए ही दें, क्योंकि एक अवस्था तक छात्रों की धारणा रहती है कि हिंदी जितनी अलंकृत और अस्वाभाविक होगी, अंक उतने ही अधिक मिलेंगे । भाषा सहज हो । लिखने के समय भी वह उतनी ही सहज रहे, जितनी सोचने के समय रहती है । बीच-बीच में मोहवश ऐसे शब्द न खोंसें, जिन्हें निर्ममतापूर्वक दूसरा आदमी उखाड़ या नोंच दे । वाक्य छोटे हों । बड़े-बड़े वाक्य तभी लिखें, जब भाषा की गति को सँभालने और नियंत्रित करने के गुण आ जाये । भाषा पर अधिकार हो जाने के उपरांत तो हम जैसा चाहें, वैसा लिख सकते हैं, लेकिन अपने पाठक का ध्यान तब भी उसे रखना होगा । निबंध को सुरुचिपूर्ण बनाने की दिशा में भाषा के महत्त्व को बराबर ध्यान में रखना होगा, तभी मिहनत सार्थक होगी ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. निबंध-लेखन का मूल उद्देश्य क्या है ?
2. निबंध-लेखन के समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है ?
3. लेखक ने निबंध की क्या परिभाषा दी है ?
4. निबंध-लेखन में लेखक किस अत्याचार की बात करता है, जिससे हिंदी निबंध बोझिल, नीरस और ऊबाऊ हो जाता है ?
5. निबंध-लेखन में हिंदीतर भाषाओं के उद्धरण में किस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

6. अच्छे निबंध के लिए क्या आवश्यक है ? विस्तार से तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए ।
7. निबंध-लेखन की क्या प्रक्रिया बताई गई है ? पाठ के आधार पर बताएँ ।
8. निबंध के कितने प्रकार होते हैं ? भेदों के साथ उनकी परिभाषा भी दें ।
9. निबंध-लेखन के अभ्यास से छात्र किन समस्याओं से निजात पा सकता है ?
10. निबंध-लेखन में कल्पना का क्या महत्त्व है ?
11. आचार्य शुक्ल के निबंध किस कोटि में आते हैं और क्यों ?
12. ललित निबंध की क्या विशेषता होती है ?
13. निबंध को सुरुचिपूर्ण बनाने की दिशा में भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालें ।

पाठ के आस-पास

1. निबंध लेखक ने कुछ उत्कृष्ट निबंधकारों, जैसे – हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ॰ विवेकी राय इत्यादि का हवाला दिया है। ये सभी ललित निबंध के समर्थ हस्ताक्षर हैं। अपने पुस्तकालय से इन निबंधकारों के निबंध उपलब्ध कर पढ़ें।
2. लेखक ने निबंध लिखने के क्रम में निबंध के बहुत सारे विषय सुझाए हैं । अपनी इच्छानुसार उनमें से किसी दो विषय पर निबंध लिखकर अपने शिक्षक को दिखलाइए ।

भाषा की बात

1. **संधि-विच्छेद करें –**
   संभावना, अत्याचार, अत्यावश्यक, दुग्धोत्पादन, संस्कृति, सद्भाव, विश्वविद्यालय
2. **निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए –**
   प्रतिभा, ज्ञान, रचना, संसार, प्रमाण, आनंद
3. **उद्गम की दृष्टि से शब्दों को चुनिए –**
   फिजिक्स, उलजलूल, ऊटपटांग, गालिब, बेवकूफी, कृषक, संस्कृति
4. भानुमति का पिटारा, रोब गालिब करना मुहावरों का अर्थ वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

अस्पृश्य	न छूने योग्य, अछूत	उपसंहार	ऊपर कही गई बातों को निष्कर्ष रूप में रखना
भ्रांत धारणा	गलत धारणा		
निर्मूल	जड़विहीन, जिसका मूल न हो	निस्संग	बिना संग-साथ के
		आत्मनिष्ठ	अपने में निष्ठ, अपने में एकाग्र
आकस्मिक	अचानक		
स्पर्द्धावश	प्रतियोगितावश	विस्मयविमुग्ध	आश्चर्यचकित
प्रतिपादन	निष्कर्षात्मक विवेचन	शोधमुखी	शोध की ओर उन्मुख
पल्लवन	बढ़ा-चढ़ा कर	एतदर्थ	इस प्रकार
अक्षुण्ण	जिसका क्षरण न हो		

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मंझन

मंझन हिंदी के एक प्रसिद्ध सूफी कवि थे । इनके जीवन के संबंध में बहुत ही कम जानकारी प्राप्त है । अभी तक इनकी एकमात्र रचना 'मधुमालती' का ही पता चला है । यह कहना कठिन है कि इनकी और कोई अन्य रचना है या नहीं । 'मधुमालती' में मंझन ने अपने संबंध में थोड़ा बहुत संकेत किया है । 'मधुमालती' की रचना सन् 1545 में हुई । इससे इतना अनुमान लगाया जा सकता है कि ईस्वी सन् की सोलहवीं शताब्दी के मध्य में वे वर्तमान थे । मंझन के काल आदि को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है । उनके धर्म, उनके निवास स्थान आदि के संबंध में नाना प्रकार के मत उपस्थित किए गए हैं ।

उनके निवास स्थान के संबंध में दो प्रकार के मत प्रकट किए गए हैं । मधुमालती की एक पंक्ति "गढ़ अनूप' बस नग्र चर्नाढ़ी, कलयुग भो लंका जो गाढ़ी" के आधार पर मंझन के निवास स्थान का अनुमान लगाया गया है । परशुराम चतुर्वेदी ने अनुमान किया है कि अनूपगढ़ मंझन का निवास स्थान रहा होगा या "ढ़ी" से अंत होने वाला नगर । किन्तु डॉ० शिवगोपाल मिश्र इससे सहमत नहीं हैं । उनके अनुसार चर्नाढ़ी मधुमालती काव्य के नायक मनोहर के पिता सूरजभान की राजधानी थी । अन्य साक्ष्यों के आधार पर चतुर्वेदी जी का ही मत सही जान पड़ता है ।

ऐसा प्रतीत होता है जैसे मंझन अपना निवास स्थान छोड़ दूसरी जगह रहने लगे थे । मधुमालती में अपने संबंध में कहा है – "तब हम भो दोसर बासा, जबरे पितै छोड़ा कविलासा" । मंझन ने अपने गुरु का नाम शेख महम्मद या गोस महम्मद बतलाया है लेकिन इससे अधिक अपने गुरु के संबंध में कुछ नहीं कहा है । और न ही अपनी गुरु परंपरा का ही जिक्र किया है । वैसे अपने गुरु के संबंध में उन्होंने इतना अवश्य कहा है कि वे सिद्ध पुरुष थे तथा उन्हीं की कृपा से उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रवृत्त हुए ।

मंझन सूफी कवि थे । अतएव उन्होंने सूफियों की प्रेमपद्धति को ही अपनाया है । सूफियों का विश्वास है कि प्रेम के द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है । प्रस्तुत दोनों कड़बक (कड़बक एक छंद है जो दोहा और चौपाई से मिलकर बनता है ।) प्रेम के महत्त्व को ही उद्घाटित करते हैं । कवि के अनुसार प्रेम रूपी ज्योति से ही यह संसार प्रकाशमान है ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(1)

पेम अमोलिक नग सयंसारा । जेहि जिअं पेम सा धनि औतारा ।
पेम लागि संसार उपावा । पेम गहा बिधिं परगट आवा ।
पेम जोति सम सिरिट अंजोरा । दोसर न पाव पेम कर जोरा ।
बिरुला कोइ जाके सिर भागू । सो पावै यह पेम सोहागू ।
सबद ऊँच चारिहुं जुग बाजा । पेम पंथ सिर देइ सो राजा ।

पेम हाट चहुं दिसि है पसरी गै बनिजौ जे लोइ ।
लाहा औ फल गाहक जनि डहकावै कोइ ।।

(2)

अमर न होत कोइ जग हारै । मरि जो मरै तेहि मींचु न मारै ।
पेम के आगि सही जेइं आंचा । सो जग जनमि काल सेउं बांचा ।
पेम सरनि जेइं आपु उबारा । सो न मरै काहू कर मारा ।
एक बार जौ मरि जीउ पावै । काल बहुरि तेहि नियर न आवै ।
मिरितु क फल अब्रित होइ गया । निहचैं अंमर ताहि कै कया ।

जौ जिउ जानहि काल भौ पेम सरन करि नेम ।
फीरै दुहुं जग काल भौ सरन काल जग पेम ।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि ने प्रेम को संसार में अँगूठी के नगीने के समान अमूल्य माना है । इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए कवि के अनुसार प्रेम के स्वरूप का वर्णन करें ।
2. कवि ने सच्चे प्रेम की क्या कसौटी बताई है ?
3. 'पेम गहा बिधि परगट आवा' से कवि ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है ?
4. आज मनुष्य ईश्वर को इधर-उधर खोजता फिरता है लेकिन कवि मंझन का मानना है कि जिस मनुष्य ने भी प्रेम को गहराई से जान लिया स्वयं ईश्वर वहाँ प्रकट हो जाते हैं । यह भाव किन पंक्तियों से व्यंजित होता है ?
5. कवि की मान्यता है कि प्रेम के पथ पर जिसने भी अपना सिर दे दिया वह राजा हो गया । यहाँ 'सिर देना' का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।
6. प्रेम से व्यक्ति के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? पठित पदों के आधार पर उत्तर दीजिए।
7. **सप्रसंग व्याख्या करें –**

   "पेम हाट चहुं दिसि है पसरीगै बनिजौ जे लोइ ।
   लाहा औ फल गाहक जनि डहकावै कोइ ॥
8. **भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें –**

   (क) एक बार जौ मरि जीउ पावै । काल बहुरि तेहि नियर न आवै ।

   (ख) मिरितु क फल औंब्रित होइ गया । निहचै अंमर ताहि कै कया ।
9. प्रेम में सर्वस्व समर्पण से व्यक्ति के निजी जीवन में आत्मिक सुंदरता आ जाती है, वह परिपक्वता कवि के विचारों में किस प्रकार आती है ? स्पष्ट करें ।
10. प्रेम की शरण में जाने पर जीव की क्या स्थिति होती है ?

कविता के आस-पास

1. कवि ने प्रेम के आदर्श स्वरूप की चर्चा की है । अन्य कवियों के इस तरह के कुछ पद संकलित कीजिए ।
2. क्या आज व्यक्ति प्रेम के इस आदर्श स्वरूप को स्वीकार कर रहा है ? समाज में आज प्रेम का कौन-सा स्वरूप मौजूद है ? अपने विचार व्यक्त करें ।
3. मंझन की पंक्तियों को यथासंभव कंठस्थ कर कक्षा में सुनाएँ ।
4. मंझन के समकालीन अन्य कवियों से संबंधित जानकारी शिक्षक की सहायता से एकत्र करें ।

भाषा की बात

1. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –**

   संसार, सिर, हाट, पंथ, प्रेम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –

ऊँच, अमृत, प्रगट, प्रेम, सिर

3. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखें –

सबद, मिरितु, पेम, सिस्टि, दोसर, गाहक, अंब्रित

शब्द निधि

पेम	:	प्रेम	पंथ	:	रास्ता
अमौलिक	:	अमूल्य	पसरीगै	:	फैल गया
नग	:	बेशकीमती रत्न	बनिजै	:	वणिज, व्यापारी
जेहि	:	जिसको	लाहा	:	प्राप्त करना
जिअं	:	आत्मा, हृदय	डहकावै	:	भ्रमित करना
धनि	:	धन्य	तेहि	:	उसको
औतारा	:	अवतरण होना	मींचु	:	मृत्यु
उपावा	:	प्रकट होना	आंचा	:	आँच, ताप
जोति	:	ज्योति	बांचा	:	बाँटना
सिस्टि	:	सृष्टि	सरनि	:	सीढ़ी, सोपान
अंजोरा	:	प्रकाश	आपु	:	स्वयं
दोसर	:	दूसरा, अन्य	बहुरि	:	पुनः
पाव	:	पाना	नियर	:	नजदीक
जोरा	:	जोड़ा	निहचैं	:	निश्चय
विरला	:	विरल	नेम	:	नियम, व्रत
सोहागू	:	सौभाग्य	फीरै	:	घूमना-फिरना, चलना
सबद	:	शब्द	दुहुं	:	दोनों
चारिहु	:	चारों युग	भौ (भव)	:	संसार

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद में सन् 1865 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही चाचा बस्तसिंह के सान्निध्य में पाई। घर पर ही संस्कृत और फारसी का अध्ययन किया। उच्च शिक्षा के लिए क्वींस कॉलेज, वाराणसी में दाखिला लिया, किंतु अस्वस्थता के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। उन्होंने कानून की भी पढ़ाई की और 1889 ई० में कानूनगो के पद पर नियुक्त भी हुए। लेकिन हरिऔध जी का मन पढ़ने-पढ़ाने में अधिक लगता था। इसलिए उन्होंने स्कूल में भी और विश्वविद्यालय में भी प्राध्यापन का कार्य किया। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उन्होंने अवैतनिक प्राध्यापक के रूप में अपना योगदान दिया। सन् 1947 में हरिऔध जी चल बसे।

हरिऔध जी ने अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं। उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं- 'प्रियप्रवास', 'चोखे चौपदे', 'वैदेही वनवास', 'चुभते चौपदे' आदि। उन्होंने 'प्रेमकांता', 'ठेठ हिंदी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' नामक उपन्यास भी लिखे। 'प्रद्युम्न विजय' और 'रुक्मिणी परिणय' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। हरिऔध जी ने 'कबीर वचनावली' का संपादन भी किया जिसकी उपादेयता आज तक बनी हुई है। 'ठेठ हिंदी का ठाठ' आई० सी० एस० के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था।

खड़ी बोली को काव्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करनेवाले कवियों में हरिऔध का नाम महत्त्वपूर्ण है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में साहित्य के क्षेत्र में आनेवाले हरिऔध आरंभ में नाटक तथा उपन्यास लेखन की ओर आकर्षित हुए, परंतु उनकी प्रतिभा का विकास वस्तुतः कवि के रूप में हुआ। हरिऔध को कवि के रूप में सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके प्रबंधकाव्य 'प्रियप्रवास' के कारण मिली। इसी काव्यकृति के कारण उन्हें खड़ी बोली का प्रथम महाकवि होने का श्रेय मिला। खड़ी बोली को भलीभाँति प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपनी रचना में उसके कई रंग भरे। संस्कृत वर्ण-वृत्तों में नितांत तत्सम पदावली 'प्रियप्रवास' में प्रयुक्त की तो एकदम बोलचाल की खड़ी बोली अपने 'चौपदे' में।

प्रस्तुत कविता 'पलक पाँवड़े' में प्रकृति का व्यापक मनोहारी रूप प्रकट हुआ है। इस कविता में प्रकृति-सौंदर्य, प्रेम तथा स्वतंत्रता के भाव संश्लिष्ट रूप में व्यक्त हुए हैं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पलक पाँवड़े

आज क्यों भोर है बहुत भाता ।
क्यों खिली आसमान की लाली ॥
किसलिए है निकल रहा सूरज ।
साथ रोली भरी लिए थाली ॥

इस तरह क्यों चहक उठीं चिड़ियाँ ।
सुन जिसे है बड़ी उमंग होती ॥
ओस आकर तमाम पत्तों पर ।
क्यों गई है बखेर यों मोती ॥

पेड़ क्यों हैं हरे-भरे इतने ।
किसलिए फूल हैं बहुत फूले ॥
इस तरह किसलिए खिलीं कलियाँ ।
भौंर हैं किस उमंग में भूले ॥

क्यों हवा है सँभल-सँभल चलती ।
किसलिए है जहाँ-तहाँ थमती ॥
सब जगह एक-एक कोने में ।
क्यों महक है पसारती फिरती ॥

लाल नीले सफेद पत्तों में ।
भर गए फूल बेलि बहली क्यों ॥
झील तालाब और नदियों में ।
बिछ गईं चादरें सुनहली क्यों ॥

किसलिए ठाट बाट है ऐसा ।
जी जिसे देखकर नहीं भरता ॥
किसलिए एक-एक थल सजकर ।
स्वर्ग की है बराबरी करता ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

किसलिए है चहल-पहल ऐसी ।
किसलिए धूमधाम दिखलाई ।।
कौन-सी चाह आज दिन किसकी ।
आरती है उतारने आई ।।

देखते राह थक गईं आँखें ।
क्या हुआ क्यों तुम्हें न पाते हैं ।।
आ अगर आज आ रहा है तू ।
हम पलक पाँवड़े बिछाते हैं ।।

अभ्यास

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

कविता के साथ

1. कवि को भोर क्यों भा रहा है ?
2. 'रोली भरी थाली' का क्या आशय है ?
3. कवि को प्रकृति में हो रहे परिवर्तन किस रूप में अर्थपूर्ण जान पड़ते हैं ?
4. हवा के कौन-कौन से कार्य-व्यापार कविता में बताए गए हैं ?
5. सुनहली चादरें कहाँ बिछी हुई हैं और क्यों ?
6. प्रकृति स्वर्ग की बराबरी कैसे करती है ?
7. कवि को ऐसा लगता है कि सभी प्राकृतिक व्यापारों के प्रकट होने के पीछे कोई गूढ़ अभिप्राय है । यह गूढ़ अभिप्राय क्या हो सकता है ? आप क्या सोचते हैं ? अपने विचार लिखें ।
8. यह कविता नवजागरण और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखी गई थी, नई चेतना और नया बिहान आने को था । इस कविता में उसकी कोई आहट है ? अगर हाँ तो किस रूप में ? स्पष्ट करें ।
9. कवि को किसकी उत्कंठित प्रतीक्षा है ? इसपर विचार कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. 'हरिऔध' द्विवेदी युग के एक प्रमुख कवि हैं ? द्विवेदी युग के कुछ अन्य प्रमुख कवियों की इससे मिलते-जुलते भावों की कविताएँ एकत्र करें और उनमें समानताएँ ढूँढ़ें ।
2. द्विवेदी युग के बाद छायावाद का उदय हुआ । इस कविता में छायावादी कविता के कौन-से लक्षण प्रकट होते दिखाई पड़ रहे हैं ? विचार कीजिए ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. सुमित्रानंदन पंत की कविता 'मौन निमंत्रण' उपलब्ध कीजिए और उसके साथ इस कविता पर तुलनात्मक विचार कीजिए ।
4. हरिऔध की प्रकृति पर लिखी कुछ अन्य कविताएँ एकत्र कीजिए और विद्यालय की गोष्ठी में उनका पाठ कीजिए ।

भाषा की बात

1. "आ अगर आज आ रहा है तू ।" अगर इस पंक्ति को हम यूँ कर दें - "आ अगर आज आ रहे हो तुम" तो अर्थ की दृष्टि से क्या परिवर्तन हो जाता है ? वह उचित है अथवा नहीं ।
2. कविता में प्रयुक्त शब्दयुग्म एकत्र करें और उनके स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें । जैसे - हरे-भरे, सँभल-सँभल, जहाँ-तहाँ आदि ।
3. कविता के अंतिम छंद में 'मैं' की जगह 'हम' सर्वनाम का प्रयोग क्यों है ?
4. निम्नांकित शब्दों के विपरीतार्थक रूप लिखें -
   आसमान, दायाँ, सुबह, स्वर्ग, दिन
5. निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची लिखें -
   आकाश, चिड़िया, फूल, सूर्य, पेड़
6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें -
   भोर, सूरज, मोती, भूल, हवा, झील, तालाब, चाह, पलक ।

शब्द निधि

रोली : तिलक करने के लिए पूजा में काम आनेवाली सामग्री
उमंग : मस्ती, आनंद
बखेर : बिखेरना
बेलि : लता
बहली : बहलना
पलक : आँख की पलक
पाँवड़े : स्वागतार्थ कुम-कुम इत्यादि बिखेरना
तमाम : सभी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में हुआ था । उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रयाग में हुई । प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयत्न किए । सन् 1987 में उनका देहांत हो गया ।

महादेवी जी छायावाद के प्रमुख कवियों में एक थीं । 'नीहार', 'रश्मि', 'यामा', 'दीपशिखा' उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं । कविता के साथ-साथ उन्होंने सशक्त गद्य रचनाएँ भी की हैं, जिनमें रेखाचित्र तथा संस्मरण प्रमुख हैं । 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'शृंखला की कड़ियाँ' उनकी महत्त्वपूर्ण गद्य रचनाएँ हैं । महादेवी वर्मा को साहित्य अकादमी, भारत भारती एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया । भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया ।

महादेवी वर्मा की साहित्य साधना की पृष्ठभूमि में एक ओर आजादी के आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी है । यही कारण है कि उनके काव्य में जागरण की चेतना के साथ स्वतंत्रता की कामना की अभिव्यक्ति है और दुख की अनुभूति के साथ करुणा बोध भी । दूसरे छायावादी कवियों की तरह महादेवी वर्मा के प्रगीतों में भक्तिकाल के गीतों की प्रतिध्वनि है और लोकगीतों की अनुगूँज भी, किंतु इन दोनों के साथ उनके गीतों में आधुनिक बौद्धिक मानस के द्वंद्वों की अभिव्यक्ति ही प्रमुख है ।

महादेवी वर्मा के गीत अपने विशिष्ट रचाव और संगीतात्मकता के कारण अत्यंत आकर्षक हैं । उनमें लाक्षणिकता, चित्रमयता और बिंबधर्मिता है । महादेवी ने नए बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से प्रगीतों की अभिव्यक्ति को नया रूप दिया । उनकी काव्यभाषा प्रायः तत्सम शब्दों से निर्मित है ।

'मैं नीर भरी दुख की बदली' महादेवी के कविता संग्रह 'यामा' से संकलित है । कवयित्री के लिए व्यक्तिगत अभावों से पैदा होने वाला दुख इतना मूल्यवान और स्पृहणीय हो जाता है कि वे उसकी निरंतरता की कामना करती हैं और अपने को नीर भरी दुख की बदली कहती हैं । बदली जल से भरी होती है । बदली का जल अपने लिए नहीं होता, सृष्टि के लिए होता है । वह तप्त विश्व को नहलाती है । बदली विश्व के लिए जल लेकर आती है और पूरे आकाश में छा जाती है । लगता है पूरा आकाश उसका अपना है, किंतु जल बरसाकर उसका समूचा अस्तित्व समाप्त हो जाता है । उसी तरह करुणाशील व्यक्ति भी संसार में करुणा का जल लेकर आता है और उसे संतप्त हृदय पर बरसाता है । उसका अपना कोई निजी सुख-दुख नहीं होता । वह तो दूसरों के सुख-दुख में खुद को शामिल कर अपने को बाँटता है । नभ में उसका अपना कोई कोना भले न हो, किंतु जहाँ कहीं हरीतिमा का उल्लास और सौंदर्य है, वह वहाँ मौजूद है, व्याप्त है । इस कविता में ध्वनित दुख या करुणा की यही दिशा है ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मैं नीर भरी दुख की बदली

स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली !

मेरा पग-पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली !

मैं क्षितिज-भृकुटी पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन-अंकुर बन निकली !

पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अंत खिली !

विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली !

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

कविता के साथ

1. महादेवी अपने को 'नीर भरी दुख की बदली' क्यों कहती हैं ?
2. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें -

(क) मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव-जीवन अंकुर बन निकली !

(ख) सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अंत खिली !

3. 'क्रंदन में आहत विश्व हँसा' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है ?
4. कवयित्री किसे मलिन नहीं करने की बात करती हैं ?
5. सप्रसंग व्याख्या करें -

'विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

6. 'नयनों में दीपक से जलते' में 'दीपक' का क्या अभिप्राय है ?
7. कविता के अनुसार कवयित्री अपना परिचय किस रूप में दे रही हैं ?
8. 'मेरा न कभी अपना होना' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है ?
9. कवयित्री ने अपने जीवन में आँसू को अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन माना है । कैसे ? स्पष्ट कीजिए ।
10. इस कविता में 'दुख' और 'आँसू' कहाँ-कहाँ, किन-किन रूपों में आते हैं ? उनकी सार्थकता क्या है ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. इस कविता से मिलते-जुलते भावों की अन्य कविताओं का संग्रह करें ।
2. महादेवी वर्मा की कविता व्यक्तिगत सुख-दुख की सीमा से ऊपर उठकर पूरे विश्व के सुख-दुख को अपने में समाहित कर लेती है, इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?
3. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' भी कहा जाता है । इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. महादेवी कविता के अलावा चित्रांकन भी करती थीं, उन्होंने उत्कृष्ट गद्य भी लिखा है । उनके कुछ चित्र और गद्य रचनाएँ एकत्र करें ।

भाषा की बात

1. प्रस्तुत कविता से तत्सम शब्दों को छाँटिए और उनके स्वतंत्र वाक्य प्रयोग कीजिए ।
2. निम्नांकित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए –
   नयन, संगीत, निर्झरिणी, निस्पंद
3. निम्नांकित शब्दों के वाक्य बनाते हुए लिंग-निर्णय करें –
   सुख, दीपक, चिंता, पथ, श्वास
4. निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची बताएँ –
   नभ, विश्व, नव, नयन
5. निम्नांकित शब्दों के विलोम रूप लिखें –
   जीवन, सुख, विस्तृत, अपना, आज

शब्द निधि

नीर	:	जल (यहाँ आँसू के अर्थ में)	मलय-बयार	:	दक्षिणी पवन
बदली	:	बादल	क्षितिज-भृकुटी	:	दिगंत रूपी भौहें
स्पंदन	:	कंपन	धूमिल	:	मलिन
क्रंदन	:	रोना, रुदन	अविरल	:	निरंतर, लगातार
आहत	:	घायल	रज-कण	:	धूलि कण
निर्झरिणी	:	झरना का छोटा रूप	सुधि	:	याद, स्मृति
स्वप्न-पराग	:	स्वप्न रूपी पुष्प की धूलि	आगम	:	आना
दुकूल	:	दुपट्टा			

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हरिवंशराय बच्चन

हरिवंशराय बच्चन का जन्म उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद शहर में 27 नवंबर 1907 ई० को हुआ था। 'बच्चन' माता-पिता द्वारा प्यार से दिया गया नाम था जिसे इन्होंने अपना उपनाम बना लिया। बच्चन जी कुछ समय तक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहने के बाद भारतीय विदेश सेवा में चले गए थे। उस दौरान इन्होंने कई देशों का भ्रमण किया और मंच पर ओजस्वी वाणी में काव्यपाठ के लिए विख्यात हुए। बच्चन जी की कविताएँ सहज और संवेदनशील हैं। इनकी रचनाओं में व्यक्ति-वेदना, राष्ट्र-चेतना और जीवन-दर्शन के स्वर मिलते हैं। इन्होंने आत्मविश्लेषण वाली कविताएँ भी लिखी हैं। राजनैतिक जीवन के ढोंग, सामाजिक असमानता और कुरीतियों पर इन्होंने तीखे व्यंग्य किए हैं। कविता के अलावा बच्चन जी ने अपनी आत्मकथा भी लिखी, जो हिंदी गद्य की बेजोड़ कृति मानी गई। 2003 ई० में मुंबई में इनका निधन हुआ।

बच्चन जी की प्रमुख कृतियाँ हैं - 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'मिलन-यामिनी', 'आरती और अंगारे', 'टूटती चट्टानें', 'रूप तरंगिनी' (सभी कविता संग्रह) और आत्मकथा के चार खंड - 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' तथा 'दशद्वार से सोपान तक'।

बच्चन जी साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और सरस्वती सम्मान से सम्मानित हुए।

प्रस्तुत कविता 'आ रही रवि की सवारी' बच्चन जी के कविता संकलन 'निशा-निमंत्रण' से ली गई है। इन्होंने यह कविता अपनी प्रथम पत्नी श्यामा देवी की मृत्यु के बाद लिखी थी। युग-जीवन की निराशा को मस्ती में रूपांतरित कर लेनेवाले बच्चन जी के व्यक्तिगत जीवन में जब वह घटना घटी तो फिर वह मधु के गीत नहीं गा सके। धीरे-धीरे बच्चन निष्क्रियता की परिधि से बाहर निकले तो एक दिन अनायास कविता की पंक्ति उनके अंतर से फूट निकली। यह निशा-निमंत्रण की पहली पंक्ति थी और साथ ही कवि का अपनी काव्ययात्रा के दूसरे चरण में प्रवेश। निशा-निमंत्रण में बच्चन की काव्य प्रतिभा का विस्फोट हुआ है। 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' से निशा के आगमन की व्यथा-कथा शुरू होती है और जैसे-जैसे निशा गहराती है, अवसाद बढ़ता जाता है। फिर भोर में आशा की पहली किरण फूटती है और कुछ देर बाद क्षितिज पर संभावनाओं का सूरज झाँकता दिखाई देता है। यह सूर्य बच्चन के जीवन का नया सूर्य तो है ही, साथ ही राष्ट्रीय जीवन में स्वाधीनता और नवनिर्माण का सूर्य भी है।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आ रही रवि की सवारी

नव-किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी ।
आ रही रवि की सवारी !

विहग बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी !
आ रही रवि की सवारी !

चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह
रात का राजा खड़ा है राह में बनकर भिखारी !
आ रही रवि की सवारी !

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

कविता के साथ

1. 'आ रही रवि की सवारी' कविता का केंद्रीय भाव क्या है ?
2. कवि ने किन-किन प्राकृतिक वस्तुओं का मानवीकरण किया है ?
3. 'आ रही रवि की सवारी' कविता में चित्रित सवारी का वर्णन करें !
4. भाव स्पष्ट कीजिए -

   चाहता, उछलूँ विजय कह,
   पर ठिठकता देखकर यह
   रात का राजा खड़ा है राह में बनकर भिखारी !
5. रवि की सवारी निकलने के पश्चात प्रकृति उसका स्वागत किस प्रकार से करती है ?
6. रात का राजा भिखारी कैसे बन गया ?
7. इस कविता में रवि को राजा के रूप में चित्रित किया गया है । अपने शब्दों में यह चित्र पुनः स्पष्ट कीजिए ।
8. कवि क्या देखकर ठिठक जाता है और क्यों ?
9. सूर्योदय के समय आकाश का रंग कैसा होता है – पाठ के आधार पर बताएँ ।
10. 'चाहता उछलूँ विजय कह' में कवि की कौन-सी आकांक्षा व्यक्त होती है ?
11. राह में खड़ा भिखारी किसे कहा गया है ?
12. 'छोड़कर मैदान भागी तारकों की फौज सारी' का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें !

कविता के आस-पास

1. बच्चन की कुछ अन्य प्रमुख कविताएँ संकलित कीजिए ।
2. 'आ रही रवि की सवारी' कविता को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए ।
3. बच्चन की कविता 'आ रही रवि की सवारी' जीवन को नया संदेश देती है; आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है । इसी भाव की अन्य कविताओं को उपलब्ध कर पढ़ें ।
4. हरिवंश राय बच्चन के ज्येष्ठ पुत्र और हिंदी सिनेमा के प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन ने 'मधुशाला' को गाया है । उसका कैसेट उपलब्ध करें और यह जानने की कोशिश करें कि कविता कैसे पढ़ी जाए ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –

   रवि, किरण, कुसुम, स्वर्ण, विहग, रात

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –
   सवारी, कलि, पोशाक, मैदान, फौज, भिखारी
3. कविता में प्रयुक्त उपमानों को चुनें ।
4. कलि-कुसुम और कीर्ति-गायन में कौन-सा समास है ?
5. कविता में आए देशज और विदेशज शब्दों को चुनें ।
6. निम्नलिखित पंक्तियों से विशेषण चुनें –
   नवकिरण का रथ सजा है,
   कलि-कुसुम से पथ सजा है
   बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी ।
7. 'विहग बंदी और चारण' में कौन-सा अलंकार है ?
8. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखें –
   किरण, कलि, पोशाक, सवारी
9. यह कविता एक रूपक है । रूपक अलंकार के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी हासिल करें तथा उनसे यह जानकारी लें कि इस कविता में रूपक का क्या स्वरूप है ?

शब्द निधि

अनुचर	:	दास या सेवक
विहग	:	पक्षी
बंदी/चारण	:	राजा की स्तुति का गान करनेवाले
तारक	:	सितारा, तारा
ठिठकना	:	रुक-रुक कर जाना
स्वर्ण	:	सोना
रवि	:	सूर्य
कीर्ति	:	यश
फौज	:	सेना
विजय	:	जीत

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

केदारनाथ अग्रवाल

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के कमासिन गाँव में 1911 ई० में हुआ । उनकी शिक्षा इलाहाबाद और आगरा विश्वविद्यालय में हुई । वे पेशे से वकील थे और जीवनभर अपने शहर बाँदा में वकालत करते रहे । हिंदी के प्रगतिवादी आंदोलन से उनका गहरा जुड़ाव रहा । सन् 2000 में उनका निधन हो गया ।

'युग की गंगा', 'नींद के बादल', 'लोक और आलोक', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'आग का आईना', 'पंख और पतवार', 'हे मेरी तुम', 'मार प्यार की थापें', 'कहे केदार खरी खरी' आदि उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं । कविता के अलावा उन्होंने गद्य भी लिखा । उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी धारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं । जनसामान्य का संघर्ष और प्रकृति सौंदर्य उनकी कविताओं का मुख्य प्रतिपाद्य है । उनकी कविताओं में मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के संग-साथ अपनी पहचान पाते हैं – "हम पेड़ नहीं पृथ्वी के वंशज हैं / फूल लिए, फल लिए मानव के अग्रज हैं ।" प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल की प्रकृति चेतना छायावादी प्रकृति चेतना और सौंदर्यबोध से अलग है । वे सौंदर्य को समस्त प्रकृति में व्याप्त मानते हैं । जीवन के सभी पक्षों में सौंदर्य का अनुभव कर लेते हैं । उन्हें खेत-खलिहान में, प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा में, नदी-वन-पर्वत में वह सौंदर्य दिखलाई पड़ता है । छायावादियों की भाँति वे कल्पना लोक में सौंदर्य का संधान नहीं करते, अपितु आस-पास के जीवन में इस सौंदर्य को देखते हैं । उनकी राजनीतिक कविताओं का संबंध जनसाधारण से है । वे शोषण का विरोध करने वाले ऐसे कवि हैं जिन्होंने पूँजीपतियों की हृदयहीनता एवं क्रूरता की खुलकर निंदा की है । वे शोषक वर्ग को जनता का मांस नोचने वाला गिद्ध कहते हैं । किसानों की दयनीय दशा के लिए वे पूँजीपतियों, मिल मालिकों, सूदखोरों, राजनीतिक नेताओं को उत्तरदायी ठहराते हैं । देश की दशा का चित्रण करते हुए वे करोड़ों बेरोजगारों की बात करते हैं, भूखे-नंगे लोगों का चित्रण करते हैं ।

केदारनाथ अग्रवाल ने गीत भी लिखे हैं और मुक्त छंद की कविताएँ भी की हैं । बिंबों और उपमाओं के संधान में भी पर्याप्त नवीनता दिखलाई पड़ती है । ग्रामीण जीवन से जुड़े बिंबों में गहरी आत्मीयता है और कविता की भाषा लोकभाषा के निकट होने के कारण पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ती है ।

प्रस्तुत कविता में कवि का जनवादी स्वप्न अभिव्यक्त हुआ है । कवि के मानस में आजाद हिंदुस्तान का ऐसा चित्र है जिसकी उर्वर भूमि में मान-सम्मान, स्वतंत्रता, ज्ञान और खुशियों के फूल खिलेंगे । यह कविता संबोधन शैली में लिखी गई है । इस कविता के माध्यम से कवि जनता में आशा की स्फूर्ति जगाना चाहता है ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पूरा हिंदुस्तान मिलेगा

इसी जन्म में,
इस जीवन में
हमको तुमको मान मिलेगा ।
गीतों की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ॥

क्लेश जहाँ है,
फूल खिलेगा,
हमको तुमको त्रान मिलेगा ।
फूलों की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ॥

दीप बुझे हैं,
जिन आँखों के;
इन आँखों को ज्ञान मिलेगा ।
विद्या की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ॥

मैं कहता हूँ,
फिर कहता हूँ;
हमको तुमको प्रान मिलेगा ।
मोरों-सा नर्तन करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि के आशावादी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालें ।
2. कवि के मन में आजाद हिंदुस्तान की कैसी कल्पना है ?
3. कवि आजाद हिंदुस्तान में गीतों और फूलों की खेती क्यों करना चाहता है ?
4. इस कविता में विद्या की खेती का क्या अभिप्राय है ?
5. इस कविता के केंद्रीय भाव पर प्रकाश डालें ।
6. कवि की राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालें ।
7. 'मैं कहता हूँ / फिर कहता हूँ' में कवि के किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है ?
8. 'मोरों-सा नर्तन' के पीछे कवि का तात्पर्य क्या है ?
9. इस कविता के उद्देश्य पर प्रकाश डालें ।
10. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें -

(क) क्लेश जहाँ है,
फूल खिलेगा;
हमको तुमको त्रान मिलेगा ।

(ख) निम्नांकित पंक्तियों की व्याख्या करें -
दीप बुझे हैं,
जिन आँखों के;
इन आँखों को ज्ञान मिलेगा ।

कविता के आस-पास

1. अपने शिक्षक की मदद से कुछ इसी तरह की कविताओं का संग्रह करें जो आप में नई आशा, उत्साह एवं स्वाभिमान का संचार कर दें ।
2. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए । इस पर एक निबंध तैयार करें ।
3. कविता का सस्वर वाचन करें ।
4. 'श्रम का सूरज' रामविलास शर्मा के द्वारा संपादित केदारनाथ अग्रवाल की कविता पुस्तक है । उसे पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें और राष्ट्रीय चिंता से जुड़ी हुई कविताएँ छाँटकर अपनी कॉपी में लिखें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखें -
जीवन, मान, फूल, ज्ञान

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. 'विद्या' का बहुवचन रूप लिखें ।
3. मान और ज्ञान से पाँच-पाँच वाक्य बनाएँ ।

शब्द निधि

पथ : रास्ता
क्लेश : कलह
त्राण : रक्षा, मुक्ति

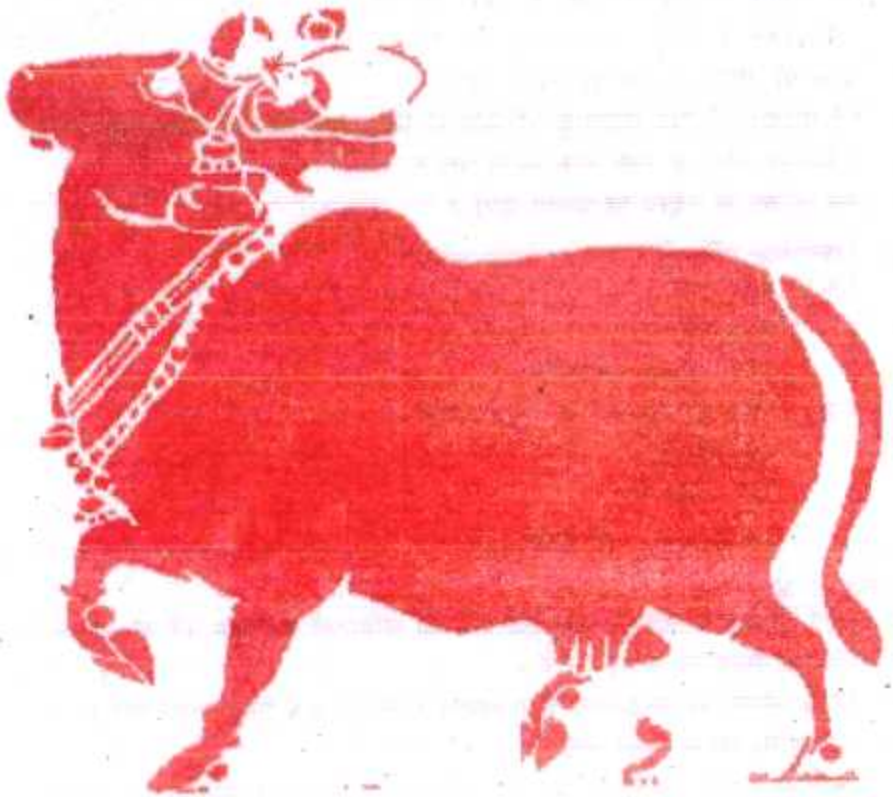

https://www.studiestoday.com